नवीन

रचना-रश्मि

0152,6GUP,L
NA·2

2

डॉ. परमानन्द गुप्त

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

O152,6GUP,1 5666
NA.2
Gupt, Parmanada.
Naveen rachana-
rashmi.

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नवीन

रचना - रश्मि

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

[Strictly according to the latest P.U.C. Sylabus (Revised) of Karnataka Pre-University Education Board]

नवीन

रचना - रश्मि

भाग 2

(व्यावहारिक व्याकरण, सामान्य निबन्ध, पत्र-व्यवहार, विचार-ग्रहण, अनुवाद-कला तथा सार-लेखन के स्वरूप तथा सिद्धान्तों का सम्यक् विवेचन)

A Book on Applied Grammar, Composition & Translation in Hindi for II year Course) of Karnataka (Two years) P.U.C.

डॉ० परमानन्द गुप्त
रीडर : हिन्दी-विभाग
सेण्ट जोसफ्स कॉलेज, बेंगलर

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 5666

विद्या मंदिर
588, एवेन्यू रोड, बेंगलूर-2

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

Publishers

Vidya Mandir

(Hindi Book Centre)

588, AVENUE ROAD, BANGALORE-2

0152,6GUP,1
NA.2

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. ....5666............

विद्या मंदिर, 588 एवेन्यू रोड, बेंगलूर-560 002 द्वारा प्रकाशित
संस्करण : प्रथम, जनवरी, 1994/स्वत्वाधिकारी : डॉ० परमानन्द गुप्त
प्रभात ऑफसेट प्रेस, नई दिल्ली-110 002 में मुद्रित

NAVEEN RACHNA RASHMI (Part II)
By Dr. Parmanand Gupta Price : Rs 25/-

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आमुख

छात्रों के हित में पाठ्य-क्रम को अधिक प्रभावी तथा उपयोगी बनाने के उद्देश्य से कर्नाटक प्री. यूनिवर्सिटी बोर्ड ने कुछ वर्ष पूर्व अपने हिन्दी पाठ्यक्रम में परिवर्तन किया और सामान्य व्याकरण के स्थान पर व्यावहारिक तथा प्रायोगिक व्याकरण पर विशेष बल दिया।

इस नये पाठ्यक्रम का सर्वत्र स्वागत तो हुआ किन्तु प्री. यूनिवर्सिटी कक्षाएँ पढ़ाने वाले प्राध्यापकों के मार्ग में कठिनाइयाँ भी उपस्थित हुईं। इसका कारण पाठ्यक्रम की अस्पष्टता तथा एक ही स्थान पर समस्त सामग्री की अनुउपलब्धि था। अत: एक ऐसी पुस्तक का प्रकाशन नितान्त अनिवार्य हो गया जो समस्त पाठ्य सामग्री एक ही स्थान पर उपलब्ध करा सके। 'नवीन रचना-रश्मि' का प्रकाशन इन कठिनाइयों से मुक्ति दिलाने की दिशा में एक विनम्र प्रयास है। इस पुस्तक का उपयोग कर अध्यापक तथा विद्यार्थी वांछित सामग्री एक ही स्थान पर प्राप्त कर सकेंगे तथा समय और धन के अपव्यय से बच सकेंगे।

इस पुस्तक का प्रथम भाग (प्रथम पी.यू.सी. के लिए) लगभग चार वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था और इस बीच उस पुस्तक के चार-चार संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं जो पुस्तक की लोकप्रियता का परिचायक है। 'नवीन रचना-रश्मि-II' का प्रणयन इन्हीं विद्यार्थियों के स्नेह-सिंचित आग्रह का परिणाम है।

इस पुस्तक की रचना के प्रेरक मित्रवर प्रा० अमरचन्द वर्मा, डॉ० मोहम्मद अमानुल्ला तथा सुश्री पी.वसन्ती (मेंगलूर) रहे हैं। मैं इन सभी का आभार स्वीकार करता हूँ।

विश्वास है 'नवीन रचना-रश्मि' को भी सहृदय प्राध्यापक एवं छात्रगण इसके 'प्रथम भाग' ही की भाँति स्नेह पूर्वक अपनायेंगे तथा उपयोगी पायेंगे।

प्राध्यापकगण से विनम्र निवेदन है कि इस पुस्तक के सम्बन्ध में कृपया अपने मूल्यवान सुझाव भिजवाकर उपकृत करें ताकि आगामी संस्करणों में इसे और भी अधिक उपयोगी बनाया जा सके।

परमानन्द गुप्त

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

Karnataka (Two years) Pre-University Education Board

Syllabi of General Hindi

for

II year Course

व्याकरण (Grammar)

(क) 1. क्रिया-विशेषण (Adjective)
2. सम्बन्ध बोधक (Preposition)
3. समुच्चय बोधक (Conjunction)
4. विस्मयादि बोधक (Interjection)

(ख) 1. उपसर्ग (Prefixes)
2. परसर्ग (प्रत्यय) (Suffixes)

रचना (Composition)

1. सामान्य निबन्ध
2. अनुवाद अथवा विचार-ग्रहण (प्रश्नोत्तर के लिए अवतरण)
3. पत्र-लेखन अथवा सार-लेखन (15 से 20 पंक्तियों तक के अवतरण)

Patterns of Question paper of Gen. Hindi

1.	व्याकरण पर एक प्रश्न (पांच भाग)	15 अंक
2.	निबन्ध	10 अंक
3.	अनुवाद अथवा विचार-ग्रहण	5 अंक
4.	पत्र लेखन अथवा सार लेखन	5 अंक
		कुल 35 अंक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अनुक्रम

1. व्याकरण (Grammar) 1-81

1. **क्रिया विशेषण** (Adverb)—व्याख्या, भेद, रचना के प्रकार, उदाहरण आदि। 1
2. **सम्बन्ध बोधक** (Post Position)—व्याख्या, भेद, उदाहरण आदि। 2
3. **समुच्चय बोधक** (Conjunction)—व्याख्या, भेद, उदाहरण आदि। 3
4. **विस्मयादि बोधक** (Interjection)—व्याख्या, भेद, उदाहरण आदि। 4
5. **अव्ययों का प्रयोग।** 4
6. **उपसर्ग**—परिभाषा, उदाहरण आदि। 6
7. **प्रत्यय (परसर्ग)**—भेद, और अन्तर, उदाहरण आदि। 6
8. **वाक्य शुद्धि**—वाक्यगत अशुद्धियाँ-विकारी शब्दों के पद-निर्माण सम्बन्धी अशुद्धियाँ (लिंग सम्बन्धी, वचन सम्बन्धी, सर्वनाम सम्बन्धी, विशेषण सम्बन्धी, क्रिया सम्बन्धी।) अविकारी रूपों के प्रयोग की अशुद्धियाँ (क्रिया विशेषण सम्बन्धी, योजक सम्बन्धी, परसर्ग सम्बन्धी), पद-क्रम की अशुद्धियाँ, कर्ता, कर्म, क्रिया के अन्वय की अशुद्धियाँ, संयुक्त क्रियाओं के प्रयोग की अशुद्धियाँ, वाच्य प्रयोग की अशुद्धियाँ, शब्दार्थ-ज्ञान की अशुद्धियाँ, पुनरुक्ति की अशुद्धियाँ, अशुद्ध-शुद्ध वाक्यों के उदाहरण। 8
9. **शब्द-संपदा**—पर्यायवाची शब्द, विपरीतार्थक शब्द, अनेकार्थी शब्द, वाक्यों या वाक्यांशों के लिए एक शब्द, एकार्थक प्रतीत होने वाले (पर्याय) शब्दों का अर्थ-भेद, समूहवाची शब्द, ध्वन्यात्मक शब्द, पुनरुक्त तथा युग्म शब्द, शब्द-संधान, हिन्दी लेखन की सामान्य अशुद्धियाँ, मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ। 24
10. **व्यावहारिक व्याकरण** 66

2. रचना (Composition) 84-113

निबन्ध—स्वरूप एवं सिद्धान्त, निबन्ध के प्रकार, निबन्ध के अंग, निबन्ध लिखने से पहले, निबन्ध लिखते समय

निबन्ध प्रारूप

1. दूरदर्शन 87
2. विद्यार्थी जीवन 88
3. दहेज-प्रथा 89
4. समय का सदुपयोग 91
5. पुस्तकालय 93
6. समाचार-पत्र 95

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

7. सिनेमा से हानि-लाभ 97
8. देशाटन 98
9. स्त्री-शिक्षा 99
10. मेरा प्रिय-नेता 100
11. उगादि 102
12. विज्ञान के लाभ-हानि 103
13. राष्ट्रीय-एकता 105
14. विद्यार्थी और अनुशासन 106
15. मनोरंजन के साधन 107
16. सहशिक्षा 109

कुछ अन्य प्रमुख निबन्धों की रूपरेखाएँ— 111

17. राष्ट्रभाषा हिन्दी 111
18. प्रदूषण की समस्या 111
19. स्वावलंबन 112
20. मेरे प्रिय अध्यापक 112
21. शिक्षा में खेलों का महत्व 112

3. **अनुवाद-कला (Translation)**—अनुवाद : परिभाषा; भेद; अनुवाद : सामान्य नियम; अनुवाद : प्रारूप; अभ्यासार्थ वाक्य और अनुच्छेद। 141-121
4. **विचार-ग्रहण (Comprehension)** विचार-ग्रहण निर्देश; कुछ प्रारूप; विचार-ग्रहण के अभ्यासार्थ अवतरण। 122-127
5. **पत्र-व्यवहार (Letter writing)**—पत्र-लेखन : कला; अच्छे पत्र के गुण; पारिवारिक पत्र के अंग; पारिवारिक पत्रों के प्रारूप; अभ्यासार्थ प्रश्न। 128-136
6. **सार-लेखन (Summary writing)**—सार-लेखन : निर्देश, सार-लेखन : प्रारूप; अभ्यासार्थ अवतरण। 137-141
7. **आदर्श प्रश्न—पत्र** (Model Question Paper) 142-144

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सावधान

मैने लगभग बीस वर्ष पूर्व उस समय के पी.यू.सी. पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए 'रचना रश्मि' नामक पुस्तक का प्रणयन किया था। आज वह पाठ्यक्रम कभी का बदल चुका है। अतः वह पुस्तक (आज के पाठ्यक्रम के अनुसार) अपनी उपयोगिता सर्वथा खो चुकी है। उस पुस्तक के प्रकाशक तथा कुछ व्यक्तित्वहीन मुनाफाखोर विक्रेता 'नवीन रचना-रश्मि' का भ्रम दिलाकर पुरानी पुस्तक धड़ल्ले के विक्रय कर रहे हैं। कृपया इन 'महान लोगों' के धोखे में न आयें और केवल 'नवीन रचना-रश्मि' ही अपने पुस्तक विक्रेता से खरीदें क्योंकि यही पुस्तक आपके पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी गयी है।

लेखक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

1
व्याकरण
(GRAMMAR)

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

1.

अविकारी (अव्यय) शब्द (Indeclinable)

वाक्य में प्रयुक्त होने पर जिन शब्दों का रूप नहीं बदलता- ज्यों का त्यों बना रहता है-उन्हें अविकारी या अव्यय कहते हैं। ये शब्द चार प्रकार के होते हैं :—

1. क्रिया विशेषण (Adverb)
2. सम्बन्ध बोधक (Preposition)
3. समुच्चय बोधक (Conjunction)
4. विस्मयादि बोधक (Interjection)

1. क्रियाविशेषण (Adverb)

वाक्य में प्रयुक्त होने पर जिस शब्द से क्रिया, विशेषण अथवा दूसरे क्रिया-विशेषण की विशेषता का बोध होता हो, उसे क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे—धीरे चलो वाक्य में **धीरे** क्रियाविशेषण है, जो **चलो** क्रिया की विशेषता बता रहा है। **बहुत धीरे चलो** में **बहुत** क्रियाविशेषण है, जो दूसरे क्रियाविशेषण **धीरे** की विशेषता प्रकट कर रहा है।[1]

क्रियाविशेषण के भेद—हिन्दी-क्रियाविशेषणों का वर्गीकरण दो आधारों पर किया जा सकता हे- (1) रूप या रचना के आधार पर तथा (2) अर्थ के आधार पर

(1) रचना के आधार पर क्रियाविशेषण के निम्नांकित दो भेद किए जा सकते है :-

(अ) मूल क्रियाविशेषण—जो क्रियाविशेषण दूसरे शब्दों के संयोग से नहीं बने होते वे मूल या रूढ़ क्रियाविशेषण कहलाते हैं। उदाहरण-अच्छा, बुरा, ठीक, आज, कल, यहाँ, ऐसे, जैसे, धीरे, तेज, बहुत कम इत्यादि।

(आ) यौगिक क्रियाविशेषण—वे क्रियाविशेषण, जिनकी रचना दूसरे शब्दों के योग से होती है, यौगिक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। उदाहरणार्थ-गाते हुए, रोते हुए, गाकर, घर-घर, बार-बार इत्यादि। यौगिक क्रियाविशेषणों की रचना कई प्रकार से होती है—

---

1. क्रियाविशेषण अविकारी (अव्यय) शब्दों का एक भेद है, जिससे यह भ्रम होता है कि हिन्दी के सभी क्रियाविशेषण अपरिवर्तित रहते हैं, किंतु कृदंती क्रियाविशेषण लिंग-वचन के अनुसार रूपांतरित होते हैं :—

   आम मीठा है। आम **मीठे** हैं। इस प्रकार इतना-इतनी-इतने, जैसा-जैसी, ऐसा-ऐसी-ऐसे। अधिकांश क्रियाविशेषण सदैव अविकृत रहते हैं : बहुधा, सदा, चुपचाप, धीरे-धीरे, खूब। इस प्रकार रूपात्मक दृष्टि से क्रियाविशेषण दो प्रकार के हैं : **रूपांतरशील** (अच्छा, मीठा, इतना) तथा **रूपांतररहित** (खूब, धीरे-धीरे, सदा, बहुधा)।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(i) **संज्ञा की द्विरुक्ति से**—बीचोंबीच, हाथोंहाथ, घर-बर, किनारे-किनारे पल-पल, रोज-रोज, रात-रात, दिन-दिन।

(ii) **दो असमान संज्ञाओं के योग से**—आकाश-पाताल, रात-दिन, सायं-प्रात:, देश-विदेश।

(iii) **संज्ञा और उपसर्ग के योग से**--प्रतिदिन, यथासंभव, अनुदिन।

(iv) **संज्ञा और प्रत्यय के योग से**—कुशलपूर्वक, नियमत:, विशेषत:।

(v) **क्रियाविशेषणों की द्विरुक्ति से**—कहाँ कहाँ, जहाँ-जहाँ, कब-कब, कैसे-कैसे, कभी-कभी, तब-तब, जब-जब, धीरे-धीरे, मंद-मंद, पीछे-पीछे, आगे-आगे।

(vi) **दो भिन्न क्रियाविशेषणों के योग से**—आगे-पीछे, आजकल, इधर-उधर ऊपर-नीचे, जहाँ-जहाँ, जब-कभी।

(vii) **विशेषणों की द्विरुक्ति से**—सही-सही, ठीक-ठीक, साफ-साफ।

(viii) **विशेषण या क्रियाविशेषण पर पूर्वकालिक क्रिया 'कर' या 'करके' के योग से**—एक-एक कर, दो-दो करके, थोड़ा-थोड़ा करके, विशेषकर।

(ix) **कृदंतों की द्विरुक्ति से**—पीते-पीते, गाते-गाते, चलते-चलते, रोते-रोते।

(x) **ध्वन्यात्मक शब्दों की द्विरुक्ति से**--सटासट, खटाखट, दनादन, धड़ाधड़।

(2) **अर्थ के अनुसार क्रियाविशेषणों को चार भागों में बाँटा जा सकता है:**

(i) **स्थानवाचक**—ये स्थान (location) और दिशा का बोध कराते हैं—यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, यहीं, वहीं का वहीं, जहाँ का तहाँ, कहीं न कहीं, सामने, आगे, पीछे, इधर-उधर, दाहिने, बाएँ, इस ओर, उस ओर, चारों ओर, आस-पास, ऊपर-नीचे।

(ii) **कालवाचक**—आज, कल, परसों, नरसों, सबेरे, अब, अभी, तब, तभी, जब, तुरन्त, फिर, कभी-कभी, अभी-अभी, पहले, पीछे, नित्य, सदा, ज्यों ही, त्यों ही, कई बार, एक बार, पहली बार, दुबारा, निरन्तर, लगातार, घंटे भर, दिनभर, वर्ष भर, जन्मभर, शीघ्र, जल्दी, कब तक जब तक, तब तक, घड़ी-घड़ी, पल-पल, पल भर।

(iii) **रीतिवाचक**—अपने आप, ऐसे, वैसे, कैसे, इस प्रकार, जैसे, जिस प्रकार, किस प्रकार, किसी प्रकार, उस प्रकार, धीरे-धीरे, एकाएक, ज्यों-ज्यों, ज्यों-त्यों करके, ठीकठाक, यथा, यथासंभव, यथाशक्ति, विशेषकर, क्यों, न, नहीं, मत, ही, तो, किसलिए, चुपके-चुपके।

(iv) **परिमाणवाचक**—मात्र, केवल, नाममात्र, अति, बहुत, थोड़ा, कम, ज्यादा, लगभग, कुछ, पर्याप्त, उतना, इतना, जितना, रत्तीभर।

2. सम्बन्ध बोधक (Preposition)

जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर वाक्यगत दूसरे शब्दों से उसका सम्बन्ध बताते हैं, उन्हें सम्बन्ध बोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—मोहन का भाई

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सोहन में मोहन और सोहन **का** संबंध का के द्वारा निर्धारित होता है। यहाँ **का** संबंधसूचक अव्यय है। इन्हें परसर्ग भी कहा जाता है। कभी-कभी केवल कारकीय संबंधसूचकों (परसर्गों) के प्रयोग से संज्ञा या सर्वनाम का वाक्यगत अन्य शब्दों से संबंध स्थापित नहीं हो पाता; जैसे- **राम घर के ...बैठा है** में संबंधकारकीय परसर्ग **के घर** और **बैठा है** का सम्बन्ध निश्चित नहीं कर पा रहा है। **के बाद भीतर** अव्यय जोड़ दें तो परसर्ग के संबंध सूचित करने में समर्थ हो जाता है: **राम घर के भीतर बैठा है।** तुम उसके साथ मत जाओ। वह राम की तुलना में गंभीर नहीं है। उसकी तरह व्यवहार करो। इन वाक्यों में **के साथ, की तुलना में, की तरह** सम्बन्धसूचक अव्यय हैं। रचना की दृष्टि से संबंध बोधक अव्यय दो प्रकार के हैं:-

(1) **रूढ़ संबंध बोधक**—ने, को, से, का, के, की, में, पर।

(2) **यौगिक संबंध बोधक**—इन्हें **संबद्ध संबंध बोधक** भी कहा जाता है। इस प्रकार के परसर्ग के, की, से परसर्गों के योग से बनते हैं। उदाहरणार्थ- के पास, के पूर्व, के पश्चात्, के पीछे, के आगे, के उपरांत, के निकट, के भीतर, के बाहर, के बीच, के द्वारा, के साथ, के सहारे, के समान, के बराबर, के तुल्य,के लायक, के योग्य, की भाँति, की तरह, की ओर, की तरफ, से दूर, से निकट, से बढ़कर।

संबंध बोधक का एक वर्ग ऐसा है जो उपर्युक्त दोनों वर्गों में से किसी के अंतर्गत नहीं आता; जैसे- पर्यंत, भर। इन्हें अनुबद्ध संबंध बोधक कहा जाता है। कुछ कालवाचक और स्थानवाचक क्रियाविशेषण संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होते हैं, तो संबंध बोधक बन जाते हैं;जैसे-

उसने चारों ओर देखा। (क्रियाविशेषण)

उसने **खेत के चारों** ओर देखा। (संबंध बोधक)

3. संयोजक या समुच्चयबोधक (Conjunction)

जिन अव्ययों द्वारा दो शब्द या वाक्यांश अथवा वाक्यों को जोड़ा जाता है, उन्हें संयोजक या समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। उदाहरणार्थ- राम और श्याम आए। इस वाक्य में **और** द्वारा दो शब्द **राम-श्याम** जोड़े गए हैं, यहाँ **और** संयोजक है। इसी प्रकार तुम आलसी थे, इसलिए नहीं जा पाए। यहाँ पर **इसलिए** द्वारा दो वाक्य जोड़े गये हैं। संयोजक अव्यय दो प्रकार के हैं—

(1) **समानाधिकरण**—जिनके प्रयोग से समान श्रेणी के शब्द या वाक्य जोड़े जाते हैं। ये चार प्रकार के हैं-

(ii) **संयोजक**—और, तथा, एवं।

(ii) **विभाजक**—कि, नकि, या, चाहे, अथवा, अन्यथा, या, नहीं तो।

(iii) **विरोधसूचक**—पर, परन्तु, किंतु।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(iv) **परिणामसूचक**—इसलिए, अतएव, अतः, जिससे, जिस कारण।

(2) दूसरे प्रकार के संयोजक वे हैं जो एक मुख्य वाक्य में एक या अनेक आश्रित उपवाक्यों को जोड़ते हैं। उदाहरणार्थ-

(i) राम कहता है कि मैं लिखूँगा।

(ii) दो अध्यापक अवकाश पर हैं, **इसलिए** पढ़ाई नहीं हुई।

(iii) मैं पत्र का उत्तर जल्दी न दे सका; **क्योंकि** व्यस्त था।

(iv) **जैसे** आए, वैसे ही चले जाओ।

(v) **जैसा** करोगे, **वैसा** भरोगे।

(vi) **जो** होना था, **सो** हो गया।

(vii) यदि तुम आते, **तो** मैं भी चलता।

(viii) यह कठिन प्रतीत होता है, **तो भी** परिश्रम से सब सम्भव है।

(ix) **यद्यपि** इसे करने से कोई लाभ नहीं है, **तथापि** करने में भी हानि नहीं है।

इस वर्ग में **यदि-तो, जो-तो, मानो, यानी, अर्थात्** इत्यादि अव्यय सम्मिलित हैं।

4. विस्मयादि बोधक (Interjection)

जिन अव्ययों से विस्मय, हर्ष, विषाद, शोक, घृणा आदि भावों का बोध हो, उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं। उदाहरण :—

विस्मयबोधक—अरे!, हैं!, ऐ!, ओहो!, क्या!, सच!
प्रशंसाबोधक—शाबाश!, धन्य!, खूब!, वाह!
हर्षबोधक—वाह-वाह! अहा! आहा!
शोकबोधक—आह!, ओह!, हाय!, हायराम!, ओफ!
तिरस्कारबोध—छिः!, हट!, चुप!
संबोधनबोधक—अरे!,ओ!,अजी!, एजी!, ऐ!
निषेधबोधक—नहीं!, जी नहीं!
स्वीकारबोधक—हाँ!, जी!, अच्छा!, जी हाँ!

अव्ययों का प्रयोग

(1) यद्यपि ...... तथापि, जब ...... तब, जहाँ ...... वहाँ, चूंकि ...... इसलिए, जब तक ...... तब तक इत्यादि द्विस्थानीय अव्ययों के प्रयोग में सतर्कता बरतने की आवश्यकता होती है। जितना के साथ तितना अव्यय का प्रयोग गलत हैं; होना चाहिए जितना ...... उतना। इनमें कभी-कभी बाद वाले अव्यय को छोड़ दिया जाता है और उसके स्थान पर अल्पविराम लगा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दिया जाता है: यद्यपि वर्षा नहीं हुई, फसल बुरी नहीं रही। यहाँ अल्पविराम के बाद तथापि का प्रयोग होना चाहिए।

(2) संयोजक **और**, **तथा**, **एवं** का प्रयोग अन्तिम दो संज्ञाओं, सर्वनामों, विशेषणों, क्रियाविशेषणों और क्रियापदों के बीच में होता है: सीता, गीता और राधा एक साथ पढ़ती हैं। वह, तुम और मैं घूमने जाएँगे। सुन्दर, सुगठित और लम्बी देह। ऊपर, नीचे और बीच में। एक ही वाक्य में और,तथा, एवं एक से अधिक बार प्रयुक्त नहीं होने चाहिए। दूसरी बार और के स्थान पर तथा या एवं का प्रयोग करना ठीक रहता है।

(3) **कि** अथवा **जोकि** के अनावश्यक प्रयोग से भी बचना चाहिए : यह पाप है या कि पुण्य की 'यह पाप है या पुण्य' अथवा 'यह पाप है कि पुण्य' कहना ठीक है। 'हमारे पुस्तकालय में गतवर्ष दस हजार पुस्तकें थीं, जो कि अब बारह हजार हो गई हैं' यहाँ **कि** का प्रयोग अनावश्यक है।

(4) यदि कर्ता परसर्ग रहित है तो क्रिया कर्ता का अनुसरण करती है: लड़का पढ़ रहा है। लड़की पढ़ रही है। किन्तु, कर्ता के साथ परसर्ग हो तो क्रिया कर्ता के अनुसार नहीं होती: रमेश ने पुस्तक पढ़ी। लड़कियों को आगे बढ़ना है।

(5) समान लिंग, वचन, पुरुष वाले परसर्ग रहित कर्ता संयोजक और,तथा, एवं से संयुक्त हों तो क्रिया का बहुवचन रूप उसी लिंग में प्रयुक्त होगा : राम, श्याम और किशन आए हैं। उषा, निशा, राधा और गीता आई हैं।

(6) अलग-अलग लिंगीय दो कर्ता परसर्ग रहित हों तो क्रिया पुल्लिग बहुवचन में होती है : उसके माता-पिता आए हैं। वर-वधू दिखाई दे रहे हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उपसर्ग तथा प्रत्यय (परसर्ग)
(PREFIX AND SUFFIX)

कुछ शब्द मूल शब्द होते हैं, जो किसी अन्य शब्द या शब्दांश की सहायता से नहीं बोले जाते; जैसे—पानी, आदमी, घर, धन आदि। किन्तु इसके विपरीत कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जो शब्द या शब्दांश के जोड़ने से बनते हैं। इस प्रकार के शब्दों से मिलकर अनेक नये शब्द बनते हैं।

उपसर्ग—शब्द निर्माण के लिए शब्दों के पूर्व जो शब्दांश जोड़े जाते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे—प्र परा, उप, परि आदि।

उपसर्गों का स्वतन्त्र रूप से प्रयोग नहीं होता। वे किसी न किसी शब्द के साथ ही आते हैं और इनके शब्द के साथ जोड़ने से मूल शब्द के अर्थ में प्राय: परिवर्तन हो जाता है।

उदाहरण—

आ	+	हार	=	आहार-भोजन
अनु	+	हार	=	अनुहार-समानता
उद	+	हार	=	उद्धार-त्राण
अभि	+	हार	=	अभिहार-आक्रमण

कुछ उपसर्ग और उनसे बने शब्द—

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अ	अभाव, निषेध	अपवित्र, अकारण, अचेत अनाग, अपूर्ण अहिंसा
अभि	सामने, अधिकता, चोरों ओर	अभिमान, अभिप्राय अभिमुख, अभियान
दुर्	बुरा, कठिन	दुर्गम, दुर्दशा, दुराचार, दुर्जन, दुर्गुण, दुर्योग

प्रत्यय—शब्दों के पीछे जो शब्दांश लगाये जाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं; जैसे-भलाई, मनुष्यता, अपनापन आदि। ये शब्द क्रमश: ई, ता और पन लगाकर बने हैं। भला+ई=भलाई, मनुष्य+ता=मनुष्यता, तथा अपना+पन=अपनापन।

प्रत्यय के भेद—मूलत: प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-(क) कृत् और (ख) तद्धित प्रत्यय।

कृत प्रत्यय कृदन्त)—धातु के अन्त में लग कर क्रिया से भिन्न अन्य शब्दों का निर्माण करने वाले प्रत्ययों को कृत् प्रत्यय कहते हैं। 'हँस' 'ई' प्रत्यय लगाने पर 'हँसी'

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

और 'लिख' में 'आई' प्रत्यय लगाने पर 'लिखाई' शब्द बनते हैं। दोनों (ई—आई) कृत् प्रत्यय हैं और इनसे बने दोनों शब्द (हँसी—लिखाई) कृदन्त शब्द हैं।

कृत प्रत्यय अथवा कृदन्त

प्रत्यय	धातु	कर्तृवाचक शब्द
आक	तैर	तैराक
आका	उड़	उड़ाका
आकू	लड़	लड़ाकू
आड़ी	खेल	खिलाड़ी
हार	रख	रखनहार
औना	खेल	खिलौना
आई	चढ़	चढ़ाई
औती	चढ़	चढ़ौती

तद्धित प्रत्यय—जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण के पीछे लगकर उनके अर्थों में विशेषता पैदा करते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं जैसे-गाड़ी+वान=गाड़ीवान, मनुष्य+त्व=मनुष्यत्व, अपना+पन=अपनापन आदि।

कृदन्त और तद्धित में अन्तर

कृत् और तद्धित प्रत्ययों में अन्तर यह है कि कृत् प्रत्यय धातुओं में लगते हैं जबकि तद्धित प्रत्यय धातु भिन्न शब्दों के साथ लगाये जाते हैं।

तद्धित प्रत्यय—

प्रत्यय	शब्द	तद्धितान्त रूप
आनी	इन्द्र	इन्द्राणी
आनी	देवर	देवरानी
आ	प्रिय	प्रिया
इन	धोबी	धोबिन
आर	लोहा	लोहार
जा	भाई	भतीजा
औती	बाप	बपौती
ऊ	बाजार	बाजारू
एलू	घर	घरेलू

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

वाक्य-शुद्धि

(Correction of Sentences)

भाषा कोई भी हो, उसकी शुद्धता का प्रश्न सदैव रहता है। शुद्धता भी दो प्रकार की हो सकती है—एक तो व्याकरणिक और दूसरी व्यावहारिक। ये दोनों ही भाषा को शुद्ध बनाने में सहयोग देती हैं। शुद्ध लेखन के लिए उच्चारण, वर्तनी और व्याकरण-विषयक त्रुटियों का परिमार्जन और पारिशोधन आवश्यक है। हम यदि थोड़ा भी ध्यान दें तो लेखन शुद्ध हो सकता है; थोड़ा भी प्रमाद और अतिविश्वास मन से निकाल दें और सीखने की प्रवृत्ति को विकसित करें तो कोई कारण नहीं कि हम अशुद्धियाँ करें।

वाक्यगत अशुद्धियाँ निम्नलिखित स्तर पर विचारणीय हैं :

(i) शब्द-रूप निर्माण (पद प्रयोग के स्तर पर)

1. विकारी शब्दों के पद-निर्माण सम्बन्धी अशुद्धियाँ
2. अविकारी रूपों के प्रयोग की अशुद्धियाँ
3. परसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ

(ii) वाक्य के स्तर पर

1. पदक्रम की अशुद्धियाँ
2. कर्ता-कर्म और क्रिया के अन्वय की अशुद्धियाँ
3. वाच्य प्रयोग की अशुद्धियाँ
4. शब्दार्थ-ज्ञान की अशुद्धियाँ
5. पुनरुक्ति की अशुद्धियाँ

1. विकारी शब्दों के पद-निर्माण सम्बन्धी अशुद्धियाँ —

विकारी शब्दों के अशुद्ध प्रयोग से वाक्य अशुद्ध हो जाता है। इनके प्रयोगों पर विचार करना आवश्यक है।

(क) लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ —

बहुधा शब्दों के लिंग परिवर्तन में भूल हो जाया करती है। सर्वनाम शब्दों में लिंग भेद का कोई चक्कर नहीं है। विशेषण एवं क्रिया शब्दों का लिंग संज्ञा के अनुसार परिवर्तित होता है। दृष्टव्य हैं लिंग सम्बन्धी कुछ अशुद्धियाँ—

अशुद्ध	शुद्ध
1. वह धीमी स्वर में बोली	1. वह धीमे स्वर में बोली।
2. वह ग्यारहवें कक्षा में पढ़ती है।	2. वह ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती है।
3. अध्यापक महोदय ने मुझे आज्ञा दिया।	3. अध्यापक महोदय ने मुझे आज्ञा दी।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

4. भारत की सम्मान की रक्षा हेतु हमें अपने प्राणों को न्यौछावर कर देना चाहिए।	4. भारत के सम्मान की रक्षा हेतु हमें अपने प्राणों को न्यौछावर कर देना चाहिए।
5. श्याम ने संतोष का सांस ली।	5. श्याम ने संतोष की सांस ली।

(ख) वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ –

लिंग ही की भांति वचन के प्रयोग में भी प्राय: छात्र भूल कर बैठते हैं। शब्द स्वभावत: एक वचन में रहते हैं। इस वचन में शब्द के मूल रूप में परिवर्तन नहीं पाया जाता। मात्र आकारान्त पुल्लिग शब्दों के आकार के स्थान पर एकार हो जाता है, यदि उस शब्द के बाद विभक्ति-चिन्ह का प्रयोग हो। जैसे—बच्चे को देखो। यहाँ एक वचन में भी 'बच्चा' शब्द के आकार का एकार हो गया। अपवाद—पिता, चाचा, दादा, बाबा आदि में एकार का नियम नहीं लागू होता। बहुवचन रूप के निर्माण में कभी परिवर्तित होता है और कभी नहीं। इनका अध्ययन कर लेना आवश्यक होता है।

अशुद्ध	शुद्ध
1. आपको मेरे नमस्कार पहुँचे।	1. आपको मेरा नमस्कार पहुँचे।
2. तुमने अनेकों ग्रंथ लिख डाले।	2. तुमने अनेक ग्रन्थ लिख डाले।
3. चारों बेटों का नाम बताओ।	3. चारों बेटों के नाम बताओ।
4. ऋषि मुनि इत्यादियों का कथ्य है।	4. ऋषि मुनि इत्यादि का कथन है।
5. लड़कियें काम कर रही थीं।	5. लड़कियाँ काम कर रही थीं।

अनावश्यक प्रयोग –

अशुद्ध	शुद्ध
1. उसने काम करना है	1. उसे काम करना है।
2. उन्होंने आपसे कुछ पूछना है।	2. उन्हें आप से कुछ पूछना है।
3. मैंने गीत लिखूँगा।	3. मैं गीत लिखूँगा।
4. मोहन ने मेरे साथ दिल्ली गया।	4. मोहन मेरे साथ दिल्ली गया।
5. आप ने मुस्करा दिया।	6. आप मुस्करा दिए।
6. लड़की न भोजन करके घूमने गयी।	6. लड़की भोजन करके घूमने गई।

अनुपयुक्त –

अशुद्ध	शुद्ध
1. हमने पाठ स्मरण करना है।	1. हमें पाठ स्मरण करना है।
2. यह पुस्तक उसने दे दो।	2. यह पुस्तक उसको दे दो।
3. उसने मैसूर जाना था।	3. उसे मैसूर जाना था।
4. राम ने जाना है।	4. राम को जाना है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

5. वे लोग जो कल आए थे, ने बड़ी शैतानी की।	5. कल आने वालों ने बड़ी शैतानी की।

सर्वनाम सम्बन्धी अशुद्धियाँ –

संज्ञा शब्दों के समान ही सर्वनाम शब्दों के प्रयोग में भी हम असावधानी बरत जाते हैं। फलतः 'हम' या 'अपने' के स्थान पर 'हमारा', 'हमारे' का प्रयोग कर जाते हैं। सर्वनाम संबंधी अशुद्धियाँ देखिए :

आवश्यक प्रयोग –

अशुद्ध	शुद्ध
1. महेन्द्र आया और कहा।	1. महेन्द्र आया और उसने कहा।
2. विशेषण और विशेषण के प्रकार बताओ।	2. विशेषण और उसके प्रकार बताओ।

अनावश्यक प्रयोग –

अशुद्ध	शुद्ध
1. छात्रों का नेता वह योगेश्वर था।	1. छात्रों का नेता योगेश्वर था।
2. वह किला जिसे तुमने देखा था, वह अब खंडहर हो गया।	2. वह किला जिसे तुमने देखा था, अब खंडहर हो गया।
3. भारती ने सवेरे उसे उठकर मालती को जगा दिया।	3. भारती ने सवेरे उठकर मालती को जगा दिया।
4. यह ब्रज क्षेत्र की भाषा होने के कारण इसका नाम ब्रजभाषा पड़ा।	4. ब्रज क्षेत्र की भाषा होने के कारण इसका नाम ब्रजभाषा पड़ा।
5. मेरी दी हुई सूचना जिसके आधार उसने यह कार्य कर लिया है।	5. मेरी दी हुई सूचना के आधार पर उसने यह कार्य कर लिया है।

अनियमित –

अशुद्ध	शुद्ध
1. यह अच्छे इंसान नहीं हैं।	1. ये अच्छे इंसान नहीं हैं।
2. मैंने तेरे को कितना समझाया।	2. मैंने तुझे कितना समझाया।
3. आप तुम्हारी पुस्तक पढ़िए।	3. आप अपनी पुस्तक पढ़िए।
4. यह वही छात्र है उसको श्री राजीव गांधी ने पुरस्कृत किया है।	4. यह वही छात्र है जिसको श्री राजीव गांधी ने पुरस्कृत किया है।
5. उन्हों के पिता सेना में कप्तान हैं।	5. उनके पिता सेना में कप्तान हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अनुपयुक्त –

अशुद्ध	शुद्ध
1. करे वह भरे	1. करे सो भरे।
2. वह परीक्षा में लुढ़क गया; क्योंकि इसने परिश्रम नहीं किया था।	2. वह परीक्षा में लुढ़क गया; क्योंकि उसने परिश्रम नहीं किया था।
3. उसके सब कुछ चला गया।	3. उसका सब कुछ चला गया।
4. आप तो आ गए, पर तुम्हारी पत्नी नहीं आयीं।	4. आप तो आ गए, पर आपकी पत्नी नहीं आयीं।
5. भारत की राजधानी में कौन हो रहा है ?	5. भारत की राजधानी में क्या हो रहा है ?

विशेषण सम्बन्धी अशुद्धियाँ –

विशेषण संबंधी अशुद्धयों से बचने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए :

(i) तद्भव विशेषण शब्दों का लिंग परिवर्तन विशेष्य के अनुसार होना चाहिए। जैसे-अच्छी पुस्तक । अच्छा काम।

(ii) तत्सम विशेषण शब्द बहुधा अपरिवर्तित रहते हैं। जैसे-उत्तम ग्रंथ। उत्तम कार्य।

अनावश्यक प्रयोग –

अशुद्ध	शुद्ध
1. भगवद्‌गीता के पढ़ने से समस्त प्राणिमात्र का कल्याण हो सकता है।	1. भगवद्गीता के पढ़ने से समस्त प्राणियों का कल्याण हो सकता है।
2. यह ग्रंथ सब से उत्तमतम है।	2. यह ग्रंथ सबसे उत्तम है।
3. हमारा वाला घर सुविधाजनक नहीं है।	3. हमारा घर सुविधाजनक नहीं है।
4. इसे गुप्त रहस्य ही रहने दीजिए।	4. इसे रहस्य ही रहने दीजिए।
5. किसी और लड़की को बुलाओ।	5. किसी दूसरी लड़की को बुलाओ।

अनुपयुक्त प्रयोग –

1. सिंह बड़ा वीभत्स होता है।	1. सिंह बड़ा भयानक होता है।
2. मुझे भारी दु:ख हुआ।	2. मुझे बहुत दु:ख हुआ।
3. वह खूबसूरत महिला आ रही है।	3. वह सुन्दर महिला आ रही है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

क्रिया सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अनावश्यक प्रयोग —

अशुद्ध	शुद्ध
1. कमला विलाप करके रोने लगी।	1. कमला विलाप करने लगी।
2. वह आपकी श्रद्धा करता है।	2. वह आप पर श्रद्धा रखता है।
3. बच्चों की पढ़ाई पुस्तकों पर निर्भर करती है।	3. बच्चों की पढ़ाई पुस्तकों पर निर्भर है।
4. क्या यह सम्भव हो सकता है ?	4. क्या यह सम्भव है ?
5. विद्यालय में कैसा वातावरण उपस्थित है।	5. विद्यालय में कैसा वातावरण है।

अनुपयुक्त प्रयोग —

अशुद्ध	शुद्ध
1. श्याम ने मुझे गालियाँ निकालीं।	1. श्याम ने मुझे गालियाँ दीं।
2. वह पढ़ना माँगता है।	2. वह पढ़ना चाहता है।
3. वह दर्शन देने आया था।	3. वह दर्शन करने आया था।
4. कल शास्त्रीजी ने अच्छा भाषण किया।	4. कल शास्त्रीजी ने अच्छा भाषण दिया।
5. विद्यालय बन्द होने की सम्भावना की जा रही है।	5. विद्यालय बंद होने की सम्भावना है।
6. वह तुम्हारा धन्यवाद करता है।	6. वह तुम्हें धन्यवाद देता है।

अनावश्यक प्रयोग —

अशुद्ध	शुद्ध
1. मैंने उसका गाना और नृत्य देखा।	1. मैंने उसका गाना सुना और नृत्य देखा।
2. उसे वहाँ जाना होगा।	2. उसे वहाँ जाना पड़ेगा।
3. मैं यह स्वीकृत करता हूँ कि मैंने यह अपराध किया है।	3. मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मैंने यह अपराध किया है।

क्रियाओं की असंगति —

अशुद्ध	शुद्ध
1. अपना धन बेकार पड़ न रहने दीजिए।	1. अपना धन बेकार पड़ा न रहने दीजिए।
2. सुनिए, उधार न माँगें।	2. सुनिए, उधार न माँगिए।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

3. जब खिड़की छोड़िए, तब अपने पैसे अच्छी प्रकार गिन लें।	3. जब खिड़की छोड़िए, तब अपने पैसे अच्छी प्रकार गिन लीजिए।
4. अगर आप कृपा कर आ सकें तो बहुत अच्छा होता।	4. अगर आप कृपा कर आ सकें तो बहुत अच्छा हो।

क्रिया की सामान्य अशुद्धियां –

अशुद्ध	शुद्ध
1. वह हँस डाला।	1. वह हँस पड़ा।
2. मैं तो कई बार दिल्ली जा आया हूँ।	2. मैं तो कई बार दिल्ली हो आया हूँ।
3. तुम इतने में रूठ उठीं।	3. तुम इतने में रूठ गईं।
4. तुम अपने जीवन में कुछ भी प्रगति न किए पाए।	4. तुम अपने जीवन में कुछ भी प्रगति न कर पाए।
5. उसकी तबीयत ऊब जाती है।	5. उसकी तबीयत ऊब जाती।
6. आप कहो।	6. आप कहिए।
7. आप क्या करोगे।	7. आप क्या करेंगे।
8. हमें ऐसा दिखलाता है।	8. हमें ऐसा दिखाई देता है।
9. तुम क्या काम करता है ?	9. तुम क्या काम करते हो ?
10. तुम जा सकता है।	10. तुम जा सकते हो।

2. अविकारी रूपों के प्रयोग की अशुद्धियाँ–

क्रिया विशेषण, संबंधबोधक, समुच्च्यबोधक शब्दों के प्रयोग में भी प्राय: भूल हो जाती है। 'प्रत्येक', 'कोई', 'किसी', का प्रयोग एक वचन ही में होता है। 'काल' का अन्तर बताने के लिए 'बाद' का और स्थान का अन्तर बताने के लिए 'पीछे' का प्रयोग होता है।

क्रिया-विशेषण संबंधी अशुद्धियाँ :

अनावश्यक प्रयोग-

अशुद्ध	शुद्ध
1. सारी रात भर मैं जागता रहा।	1. सारी रात मैं जागता रहा।
2. कुमार अवश्य ही मेरा काम कर देगा।	2. कुमार अवश्य मेरा काम कर देगा।
3. मैं आज प्रात:काल के समय घूमने गया था।	3. मैं आज प्रात:काल घूमने गया था।
4. वह लगभग दौड़ रहा था।	4. वह दौड़ रहा था।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

5. यह कदापि भी सत्य नहीं हो सकता।	5. यह कदापि सत्य नहीं हो सकता।

अनुपयुक्त —

1. यह मेरा भाई है, इसे मैं बहुत चाहता हूँ।	1. यह मेरा भाई है, जिसे मैं बहुत चाहता हूँ।
2. इस पर्वतीय क्षेत्र में सर्वस्व शान्ति है।	2. इस पर्वतीय क्षेत्र में सर्वत्र शान्ति है।
3. ते उदास चेहरे से चल दिए।	3. वे उदास होकर चल दिए।
4. वार्षिक परीक्षा के एकमात्र चार दिन बचे हैं।	4. वार्षिक परीक्षा के केवल चार दिन बचे हैं।
5. वह बड़ा आगे बढ़ गया।	5. वह बहुत आगे बढ़ गया।

अनियमित प्रयोग —

अशुद्ध	शुद्ध
1. तुम यह कार्य आसानीपूर्वक कर सकते हो।	1. तुम यह कार्य आसानी के कर सकते हो।
2. मैं सादरपूर्वक निवेदन करता हूँ कि....।	2. मैं सादर निवेदन करता हूँ कि....।
3. जब तक मैं नहीं आऊँ तब तक तुम काम करते रहना।	3. जब तक मैं न आऊँ तब तक तुम काम करते रहना।

योजक सम्बन्धी अशुद्धियाँ —

अशुद्ध	शुद्ध
1. वह स्कूल नहीं जाएगा कि वह बीमार है।	1. वह स्कूल नहीं जाएगा क्योंकि वह बीमार है।
2. यद्यपि वह गरीब है किन्तु ईमानदार है।	2. यद्यपि वह गरीब है तथापि ईमानदार है।
3. ना तो वहाँ संगीता थी, ना अंजलि।	3. न तो वहाँ संगीता थी, न अंजलि।
4. तुम यहाँ से चले जाओ अथवा पिटने को तैयार हो जाओ।	4. तुम यहाँ से चले जाओ नहीं तो पिटने को तैयार हो जाओ।
5. आज अवकाश था अत: इसलिए वह नहीं आया।	5. आज अवकाश था अत: वह नहीं आया।

3. परसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ

ये अशुद्धियाँ कारक चिह्नों के अशुद्ध प्रयोग के कारण होती हैं। कारक विभक्ति सम्बन्धी अशुद्धियाँ यहाँ देखी जा रही हैं—

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

विभक्ति 'ने'

अशुद्ध	शुद्ध
1. वे अभी-अभी गाना गाए हैं।	1. उन्होंने अभी-अभी गाना गाया है।
2. मोहन मुझसे चोरी करवाना चाही है।	2. मोहन ने चोरी कराना चाहा।
3. हम आपसे कहे थे।	3. हमने आपसे कहा था।
4. मैं यह काम नहीं किया हूँ।	4. मैंने यह काम नहीं किया है।

विभक्ति 'को'

अशुद्ध	शुद्ध
1. स्वपुत्र सच्चरित्र बनाओ।	1. स्वपुत्र को सच्चरित्र बनाओ।
2. राम प्रसाद बिस्मिल फाँसी पर चढ़ना पड़ा।	2. राम प्रसाद विस्मिल को फाँसी पर चढ़ना पड़ा।
3. प्रतिभा विकसित होने से कोई नहीं रोक सकता है।	3. प्रतिभा को विकसित होने के कोई नहीं रोक सकता है।
4. उस अध्यापक बहुत क्रोध आता है।	4. उस अध्यापक को बहुत क्रोध आता है।
5. नौकर भूख लगी है।	5. नौकर को भूख लगी है।

अनावश्यक प्रयोग-

अशुद्ध	शुद्ध
1. वह कल सुबह को आएगा।	1. वह कल सुबह आएगा।
2. मैं पुस्तक को पढ़ता हूँ।	2. मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।
3. इस काम को करते हुए बहुत दिन हो गए।	3. यह काम करते हुए बहुत दिन हो गए।
4. उसने अपने स्थान को न छोड़ा।	4. उसने अपना स्थान न छोड़ा।

अनुपयुक्त प्रयोग –

अशुद्ध	शुद्ध
1. आठ बजने को पाँच मिनट हैं।	1. आठ बजने में पाँच मिनट हैं।
2. मैंने रवीन्द्र को पूछा।	2. मैंने रवीन्द्र से पूछा।
3. राम को पूछो।	3. राम से पूछो।
4. उनको मिलो और उन्हें समझाओ।	4. उनसे मिलो और उन्हें समझाओ।
5. श्याम को बोलो कि मुझसे मिल ले।	5. श्याम से कहो कि मुझसे मिल ले।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

विभक्ति 'से'

आवश्यक प्रयोग —

अशुद्ध	शुद्ध
1. चोर को रस्सी बाँध कर ले गए।	1. चोर को रस्सी से बाँध कर ले गए।
2. क्या तुम देर में सोकर उठते हो।	2. क्या तुम देर से सोकर उठते हो।
3. चाकू आम काटो लो।	3. चाकू से आम काट लो।
4. मैंने यह बात उसके द्वारा सुनी।	4. मैंने यह बात उससे सुनी थी।
5. वह लकड़ी कुल्हाड़ी के द्वारा काट रहा है।	5. वह लकड़ी कुल्हाड़ी से काट रहा है।
6. यह पत्र जिसके द्वारा टाइप करवाया है।	6. यह पत्र किससे टाइप करवाया है।

अनावश्यक प्रयोग —

अशुद्ध	शुद्ध
1. तुम जरूर से आना।	1. तुम जरूर आना।
2. वह पैदल से गया है।	2. वह पैदल गया है।
3. चलो, इसी बहाने से तुम्हारे दर्शन हो गए।	3. चलो, इसी बहाने तुम्हारे दर्शन हो गए।
4. यह आँखों से देखी घटना है।	4. यह आँखों देखी घटना है।
5. वह कानों से सुनी बात थी।	5. वह कानों सुनी बात थी।
6. किसके हाथ से भेजूँ ?	6. किसके हाथ भेजूँ?

अनुपयुक्त प्रयोग—

अशुद्ध	शुद्ध
1. मेरी सबसे नमस्ते कहना।	1. मेरी सबको नमस्ते कहना।
2. भिखारिन की दयनीय दशा से मुझे दया आ गई।	2. भिखारिन की दयनीय दशा पर मुझे दया आ गई।
3. फिर उसने कुछ देर बाद से उत्तर दिया।	3. फिर उसने कुछ देर के बाद उत्तर दिया।

विभक्ति 'के लिए'

आवश्यक प्रयोग-

अशुद्ध	शुद्ध
1. चलने को सवारी कहाँ है ?	1. चलने के लिए सवारी कहाँ है ?
2. खर्च करने को रुपये चाहिए।	2. खर्च करने के लिए रुपये चाहिए।
3. काटने को कुल्हाड़ी दो।	3. काटने के लिए कुल्हाड़ी दो।
4. प्रवेश (के) हेतु वहाँ जाइए।	4. प्रवेश के लिए वहाँ जाइए।
5. बेकारों के हेतु एक सूचना।	5. बेकारों के लिए एक सूचना।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

क्रम की अशुद्धि–

अशुद्ध	शुद्ध
1. ऐसे लोगों के, जो बाहर से आते हैं, लिए वहाँ धर्मशालाएँ हैं।	1. बाहर के आने वालों के लिए वहाँ धर्मशालाएँ हैं।

विभक्ति 'का' 'के' 'की'

आवश्यक प्रयोग–

अशुद्ध	शुद्ध
1. उन्होंने एक कहानी कन्नड़ में अनुवाद किया है।	1. उन्होंने एक कहानी का कन्नड़ में अनुवाद किया है।
2. भक्तिकालीन कवियों में निम्नलिखित नाम उल्लेखनीय हैं।	2. भक्तिकालीन कवियों में निम्नलिखित के नाम उल्लेखनीय हैं।
3. मेरी पढ़ाई बहुत नुकसान हो रहा है।	3. मेरी पढ़ाई का बहुत नुकसान हो रहा है।

अनावश्यक प्रयोग–

अशुद्ध	शुद्ध
1. घर में पानी के भर जाने से बड़ी असुविधा हुई।	1. घर में पानी भर जाने से बड़ी असुविधा हुई।
2. नि:स्वार्थ की भावना के कार्य करो।	2. नि:स्वार्थ भावना से कार्य करो।
3. इस बात के कहने में मुझे कोई संकोच नहीं है।	3. यह बात कहने में मुझे कोई संकोच नहीं है।

अनुपयुक्त प्रयोग–

अशुद्ध	शुद्ध
1. बड़ों का आज्ञा मानना परम धर्म है।	1. बड़ों की आज्ञा मानना परम धर्म है।
2. मैं आपकी श्रद्धा करता हूँ।	2. मैं आप पर श्रद्धा रखता हूँ।
3. मैंने उसे लिखने को पेन्सिल दी।	3. मैंने उसे लिखने के लिए पेन्सिल दी।

विभक्ति 'के द्वारा'

अशुद्ध	शुद्ध
1. मैंने यह बात प्रमोद के द्वारा सुनी।	1. मैंने यह बात प्रमोद से सुनी।
2. पढ़ाई के द्वारा वह इतनी अच्छी नौकरी पा गया।	2. पढ़ाई के कारण वह इतनी अच्छी नौकरी पा गया।
3. बदमाशों के द्वारा आतंक फैल रहा था।	3. बदमाशों के हाथों आतंक फैल रहा था।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

विभक्ति 'में'

आवश्यक प्रयोग—

अशुद्ध	शुद्ध
1. उसने दिन भर एक-एक सुन्दर कहानी लिख डाली।	1. उसने दिन भर में एक सुन्दर कहानी लिख डाली।
2. वह स्कूल बैठा मेरी प्रतीक्षा कर रहा है।	2. वह स्कूल में बैठा मेरी प्रतीक्षा कर रहा है।

आवश्यक प्रयोग—

अशुद्ध	शुद्ध
1. उन दिनों में वह दिल्ली रहता था।	1. उन दिनों वह दिल्ली में रहता था।
2. वह मन-ही-मन में बहुत हँसा होगा।	2. वह मन-ही-मन बहुत हँसा होगा।
3. कल रात में मुझे चैन नहीं पड़ी।	3. कल रात मुझे चैन नहीं पड़ी।

अनुपयुक्त प्रयोग—

अशुद्ध	शुद्ध
1. कोयल डाली में बैठी है।	1. कोयल डाली पर बैठी है।
2. उसे उसे जाने से रोक दिया गया।	2. उसे जाने से रोक दिया गया।
3. वे कभी-कभी सड़क में मिल जाती थीं।	3. वे कभी-कभी सड़क पर मिल जाती थीं।

विभक्ति 'पर'

आवश्यक प्रयोग—

अशुद्ध	शुद्ध
1. वे घर नहीं हैं।	1. वे घर पर नहीं हैं।
2. उसने अपने पाँव कुल्हाड़ी मार ली।	2. उसने अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मार ली।

अनावश्यक प्रयोग—

अशुद्ध	शुद्ध
1. तुम सारा दोष अपने सिर पर क्यों लेते हो?	1. तुम सारा दोष अपने सिर क्यों लेते हो ?
1. तुम इधर पर बैठिए।	1. तुम इधर बैठो।

अनुपयुक्त—

1. अब वह समाप्त होने पर है।	1. अब वह समाप्त होने को है।
2. ऐसा कहने पर कोई हानि नहीं है।	2. ऐसा कहने में कोई हानि नहीं है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

'के अन्दर' 'के बीच'

अशुद्ध	शुद्ध
1. देह के अन्दर शक्ति होनी चाहिए।	1. देह में शक्ति होनी चाहिए।
2. समाज के अन्दर भ्रष्टाचार फैलता जा रहा है।	2. समाज में भ्रष्टाचार फैलता जा रहा है।
3 कल राज्य सभा के बीच इसकी बहस होगी।	3. कल राज्य सभा में इस पर बहस होगी।
4. बंगाल के बहुत से स्थानों के बीच दंगे हुए।	4. बंगाल के बहुत से स्थानों में दंगे हुए।

प्रत्यय और उपसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ—

प्रत्यय सम्बन्धी अशुद्धियाँ प्राय: भाववाचक शब्दों के बनाने में होती है। भाव प्रत्यान्त शब्दों के आगे और प्रत्यय नहीं लगाना चाहिए। जैसे—

अशुद्ध	शुद्ध
सौन्दर्यता	सौन्दर्य
गौरवता	गौरव
चातुर्यता	चातुर्य
लाघवता	लाघव
सामर्थ्यता	सामर्थ्य

उपसर्गों के प्रयोग में असावधानी करने से अशुद्धियाँ हो जाती हैं। जैसे—

अशुद्ध	शुद्ध
अभिष्ट	अभीष्ट
बेफिजूल	फिजूल
दरअसल में	दरअसल

4. पद क्रम की अशुद्धियाँ—

हिन्दी में वाक्य रचना करते समय कर्ता, कर्म और क्रिया का क्रम रखा जाता है। कई बार इस क्रम को भंग कर देने पर वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध	शुद्ध
1. हम निम्नलिखित संस्था के सदस्य आप से अनुरोध करते हैं।	1. हम, संस्था के निम्नलिखित सदस्य आप से अनुरोध करते हैं।
2. एक गीतों की किताब दीजिए।	2. गीतों की एक किताब दीजिए।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

3. जो क्लर्क हिन्दी और अंग्रेजी दोनों जानता हो, मुझे एक ऐसा चाहिए। | 3. मुझे एक ऐसा क्लर्क चाहिए जो हिन्दी और अंग्रेजी दोनों जानता हो।

4. जो कुछ लोग मेरी सहायता कर सकें उनमें मैं मिलना चाहता था। | 4. मैं कुछ ऐसे लोगों से मिलना चाहता था जो मेरी सहायता कर सकें।

अन्विति संबंधी अशुद्धियाँ–

अशुद्ध	शुद्ध
1. लड़कों से यह बताया नहीं गया।	1. लड़कों से यह बात बतायी नहीं गई।
2. राष्ट्र प्रेम के कारण देशसेविका ने सब गहने उतार फेंका।	2. राष्ट्र-प्रेम के कारण देशसेविका ने सब गहने उतार फेंके।
3. ऐसी बात पर ध्यान नहीं दी जाती।	3. ऐसी बातों पर ध्यान नहीं दिया जाता।
4. मालिक ने लगान वसूल कर ली।	4. मालिक ने लगान वसूल लिया।
5. यहाँ पर अभी एक लड़का और एक लड़की बैठी थी।	5. यहाँ पर अभी एक लड़का और एक लड़की बैठे थे।

5. कर्ता-कर्म और क्रिया के अन्वय की अशुद्धियाँ–

वाक्य रचना में कर्ता के अनुसार क्रिया का लिंग, वचन स्वीकार किया जाता है। इस व्यवस्था के भंग हो जाने पर भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध	शुद्ध
1. तुम्हें अभी बहुत बातें सीखना है।	1. तुम्हें अभी बहुत बातें सीखनी हैं।
2. जब भी आप आओ मुझसे मिलो।	2. आप जब भी आयें मुझसे मिलें।
3. राम, लक्ष्मण और सीता वन को गयीं।	3. राम, लक्ष्मण और सीता वन को गये।
4. क्या आप भोजन किए हैं ?	4. क्या आपने भोजन किया है ?

6. संयुक्त क्रियाओं के प्रयोग की अशुद्धियाँ–

संयुक्त क्रियाओं का अशुद्ध प्रयोग भी वाक्य को त्रुटिपूर्ण कर देता है। इस ओर भी सावधानी की आवश्यकता है।

अशुद्ध	शुद्ध
1. आपको काम नहीं कर लेना चाहिए।	1. आपको काम नहीं करना चाहिए।
2. मैं जाकर आऊँगा।	2. मैं चलूँगा।
3. मुझको घबराना पड़ा।	3. मैं घबरा गया।
4. उमा ने पुंस्तक नही लौटा दी है।	4. उमा ने पुस्तक नहीं लौटाई है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

7. वाच्य-प्रयोग की अशुद्धियाँ–

वाच्य-प्रयोग की अशुद्धियों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। थोड़ी सी सावधानी बरतने से इन अशुद्धियों से बचा जा सकता है।

अशुद्ध	शुद्ध
1. पुस्तक में लेखक ने नारियों की दयनीय अवस्था पर प्रकाश डाला गया है।	1. पुस्तक ने लेखक ने नारियों की दयनीय अवस्था पर प्रकाश डाला है।
2. प्राणिजगत को दो मुख्य भागों में विभाजित हुआ है।	2. प्राणिजगत को दो मुख्य भागों में विभाजित किया जाता है।
3. इस पुस्तक में लेखक ने नारी की दयनीय दशा पर प्रकाश डाला गया है।	3. इस पुस्तक में लेखक ने नारियों की दयनीय दशा पर प्रकाश डाला है।

8. शब्दार्थ-ज्ञान की अशुद्धियाँ–

प्रत्येक शब्द का अपना विशेष अर्थ होता है। इसलिए जहाँ जिस अर्थ एवं भाव को प्रकट करना हो, वहाँ उसी प्रकार के शब्द का प्रयोग करना चाहिए, अन्यथा वाक्य रचना अशुद्ध हो जाती है।

अशुद्ध	शुद्ध
1. संदीप इतना निर्लज्ज है कि अपने गुरु से कुछ भी कह देता है।	1. संदीप इतना उद्दंड है कि अपने गुरु से कुछ भी कह देता है।
2. हम रात को देर से भोजन खाते हैं।	2. हम रात को देर से भोजन करते हैं।
3. शायद आज आँधी अवश्य आयेगी।	3. शायद आज आँधी आयेगी।

पुनरुक्ति की अशुद्धियाँ–

एक ही भाव को दो बार कहने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध	शुद्ध
1. मैं सप्रमाण सहित कहता हूँ।	1. मैं सप्रमाण कहता हूँ।
2. वह कुशलपूर्वक से है।	2. वह कुशल है।
3. वहाँ कोई लगभग सौ लोग थे।	3. वहाँ कोई सौ लोग थे।

यहाँ कुछ अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके लिखा जा रहा है। विद्यार्थी स्वयं ही समझें कि कहाँ अशुद्धि है ? इस वाक्यावली से उनका शुद्ध लेखन निरन्तर विकसित होगा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अशुद्ध	शुद्ध
1. तेरे को क्या हो गया है ?	1. तुझे क्या हो गया है ?
2. मुझे दो बच्चे हैं।	2. मेरे दो बच्चे हैं।
3. वह दंत का डॉक्टर है।	3. वह दंत चिकित्सक है।
4. मुझ पर पाँच रुपये हैं।	4. मेरा पास पाँच रुपये हैं।
5. न यह लूँगा नाहीं यह।	5. न यह लूँगा न यह।
6. एक काम करिए।	6. एक काम कीजिए।
7. वे अभी ही आए हैं।	7. वे अभी आए हैं।
8. जाऊँगा तो जा लेकिन आज नहीं।	8. जाऊँगा तो, लेकिन आज नहीं।
9. दिन भर में दो जगह गोलियाँ चलीं।	9. एक दिन में दो जगह गोलियाँ चलीं।
10. आपको चलते यह काम हो गया।	10. आपके कारण यह काम हो गया।
11. मुझे एक चिट्ठी लिखना है।	11. मुझे एक चिट्ठी लिखनी है।
12. तुमने तो मुझे बड़ी निराशा दी।	12. तुमने तो मुझे बहुत निराश किया।
13. बड़ा सुन्दर लड़का है।	13. बहुत सुन्दर लड़का है।
14. तब क्या तुम्हें आँखें नहीं थीं ?	14. तब क्या तुम्हारी आँखें नहीं थीं ?
15. पानी बरसने से रास्ते की धूल मिट गई थी।	15. पानी बरसने से रास्ते की धूल दब गई थी।
16. जाकर के उन्हें बुला लाओ।	16. जाकर उन्हें बुला लाओ।
17. यह एक अध्यापक का काम नहीं है।	17. यह अध्यापक का काम नहीं है।
18. आप एक काम करियेगा क्या ?	18. आप एक काम कीजिएगा क्या ?
19. दो पूड़ियाँ सेंक दो।	19. दो पूरियाँ तल दो।
20. वहाँ सर्वोत्कृष्ट ज्वर की चिकित्सा होती है।	20. वहाँ ज्वर की सर्वोत्कृष्ट चिकिस्ता होती है।
21. क्या आपने हिमालय पर्वत देखा है ?	21. क्या आपने हिमालय देखा है ?
22. आपका पत्र धन्यवाद के साथ मिला।	22. आपका पत्र मिला। धन्यवाद।
23. उनके साथ उनकी लड़की भी जा रही है।	23. उनके सात उनकी बेटी भी जा रही है।
24. यहाँ बिना मूल्य पीने का पानी मिलता है।	24. यहाँ पीने का पानी बिना मूल्य मिलता है।
25. उसका गुस्सा उबल रहा था।	25. वह गुस्से से उबल रहा था।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

6. यह पुस्तक मेरे पढ़ी गई है।	26. यह पुस्तक मैंने पढ़ी है।
7. वे निस्संतान माता-पिता हैं।	27. वे निसंतान दम्पती हैं।
8. कल शाम को आ जाइयो।	28. कल शाम को आ जाना।
9. वे दान देने में विकट रूप से प्रसिद्ध थे।	29. वे दान देने में बहुत अधिक प्रसिद्ध थे।
0. उन दोनों का घोर संबंध है।	30. उन दोनों का घनिष्ठ संबंध है।
1. मैंने अनजाने में शीशा तोड़ दिया।	31. मैंने जान बूझ कर शीशा तोड़ दिया।
2. मुझसे जान-बूझ कर शीशा टूट गया।	32. मुझसे अनजाने में शीशा टूट गया।
3. मैंने गोली अनजाने में चलाई थी।	33. मैंने गोली समझ-बूझ कर चलाई थी।
4. मुझसे गोली समझ-बूझ कर चल गई।	34. मुझसे गोली अनजाने में चल गई।
5. कोई को बुलो दो।	35. किसी को बुला लो।
6. वह पढ़ गया।	36. उसने पढ़ लिया।
7. उसने पढ़ गया।	37. वह पढ़ गया।
8. मछलियों की आँख को पलक नहीं होती।	38. मछलियों की आँख में पलक नहीं होती।
9. शरीर के कई अंग होते हैं।	39. शरीर में कई अंग होते हैं।
0. तितली के पास पंख होते हैं।	40. तितली के पंख होते हैं।
1. वह हँसी से टाल गया।	४१. वह हँसी में टाल गया।
2. तेरे को कुछ नहीं करना।	42. तुम्हें कुछ नहीं करना।
3. नाम पाके क्या मिलेगा?	43. नाम पाकर क्या मिलेगा ?
4. वह लोग आ गए हैं।	44. वे लोग आ गए हैं।
5. मैंने आज जाना है।	45. मुझे आज जाना है।
6. रमेश और सुरेश पढ़ रहा है।	46. रमेश और सुरेश पढ़ रहे हैं।
7. कश्मीर में कई दर्शनीय स्थान देखने योग्य हैं।	47. कश्मीर में कई दर्शनीय स्थान हैं।
8. राम को काट कर सेब खिलाओ।	48. राम को सेब काट कर खिलाओ।
9. यह पुस्तक दस रुपया में खरीदी है।	49. यह पुस्तक दस रुपये में खरीदी है।
0. मेरे को पिताजी ने बुलाया है।	50. मुझे पिताजी ने बुलाया है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शब्द-संपदा

पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

यों तो प्रत्येक शब्द का अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व होता है। हर शब्द की अपनि अलग शब्द छाया होती है फिर भी कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो अर्थ में एक-दूसरे के निक होते हैं। ऐसे कुछ शब्दों की सूची यहाँ दी जा रही है :

अग्नि—आग, वह्नि, अनल, दहन, कृशानु, पावक।

आँख—नेत्र, लोचन, चक्षु, नयन, दृग, अक्षि।

आकाश—व्योम, गगन, अंबर, नभ, आसमान।

आनन्द—मोद, प्रमोद, आमोद, हर्ष, सुख, प्रमद।

इच्छा—आकांक्षा, अभिलाषा, कामना, लिप्सा, ईहा।

कमल—सरोज, जलज, पंकज, अंबुज, नीरज, राजीव, उत्पल।

किरण—मरीचि, अंशु, रश्मि, कर।

गंगा—जाह्नवि, भागीरथी, मंदाकिनी, नदीश्वरी।

गृह—घर, निकेत, सदन, आगार, अयन, गेह, धाम।

घोड़ा—अश्व, बाजि, तुरंग, हय, घोटक।

चन्द्रमा—हिमांशु, सुधांशु, सुधाकर, शशि, राकेश।

जल—नीर, सलिल, पय, वारि, तोय, उदक।

तालाब—सर, सरोवर, तड़ाग, जलाशय, पुष्कर।

दुःख—पीड़ा, व्यथा, कष्ट, शोक, क्लेश, वेदना संताप।

देवता—सुर, अमर, निर्जर, आदित्य, त्रिदश।

देह—कलेवर, वपु, शरीर, काय, तनु, विग्रह।

नदी—सरिता, तटिनी, आपगा, तरंगिनी, निर्झरिणी।

पत्नी—मार्या, दारा, अर्धांगिनी, सहधर्मिणी।

पक्षी—विहग, खग, विहग, पखेरू, द्विज, शकुन्त।

पण्डित—कोविद, विद्वान, मनीषी, बुध।

पुत्र—तनय, सुत, लड़का, आत्मज।

पुत्री—तनया, सुता, आत्मजा, दुहिता।

पृथ्वी—भू, अचला, धरा, धरणी, वसुधा, धारित्री

रात—रात्रि, निशा, रजनी, यामिनी, विभावरी।

समुद्र—सागर, जलधि, सिन्धु, वारीश, पयोधि।

सूर्य—मातण्ड, दिनकर, रवि, प्रभाकर, दिवाकर, भानु।

सिंह—व्याघ्र, मृगराज, केहरि, नाहर, केसरी।

हाथी—गज, कुंजर, मतंग, हस्ति, सिन्धुर।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

विपरीतार्थक (विलोम) शब्द (Antonyms)

विलाम का अर्थ उल्टा या विपरीत होता है। विलोम शब्द दो प्रकार के होते हैं (i) परस्पर विरोधी अर्थ रखने वाले। (ii) परस्पर विपरीत अर्थ वाले। अर्थ की स्पष्टता के लिए कहीं-कहीं उन शब्दों को जानना आवश्यक होता है।

यहाँ कुछ विलोम शब्दों की सूची दी जा रही है :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अपमान	सम्मान	अग्रज	अनुज
अंदर	बाहर	अवनति	उन्नति
अंधकार	प्रकाश	अच्छा	बुरा
अँधेरा	उजाला	अगला	पिछला
अग्नि	जल	अल्प	बहुत
अत्यधिक	स्वल्प	अचल	सचल
अनाथ	सनाथ	अगम	सुगम
अधुनातन	पुरातन	अथ	इति
अधिक	कम	अनुग्रह	विग्रह
अन्त	अनन्त	अरुचि	सुरुचि
अर्थ	अनर्थ	अनुग्रह	विग्रह
अज्ञ	विज्ञ	अनुज	अग्रज
आशीर्वाद	अभिशाप	अनुराग	विराग
आमिष	निरामिष	अपना	पराया
आस्था	अनास्था	अमृत	विष
आवरण	अनावरण	अर्वाचीन	प्राचीन
आवश्यक	अनावश्यक	अवनत	उन्नत
आसक्त	विरक्त	आकर्षण	विकर्षण
आरम्भ	समाप्त	आकाश	पाताल
आजादी	गुलामी	आपत्ति	सम्मति
आत्मीय	अनात्मीय	आकृष्ट	विकृष्ट
आलोक	अंधकार	आगमन	प्रस्थान
इति	अथ	आगामी	विगत
इष्ट	अनिष्ट	आस्तिक	नास्तिक
इहलोक	परलोक	आग्रह	दुराग्रह
इच्छा	अनिच्छा	आय	व्यय
उग्र	नम्र	आचार	अनाचार
उचित	अनुचित	आहार	अनाहार

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

उच्च	निम्न	आदर	अन
उतार	चढ़ाव	आदान	प्र
उत्कृष्ट	निकृष्ट	आदि	उ
उत्तम	अधम	आशा	निरा
उत्तर	दक्षिण	आधुनिक	प्राc
उत्थान	पतन	कुरूप	सु
गुण	दोष	कृपा	वं
गुरु	लघु	क्रोध	क्ष
गुप्त	प्रकट	क्रय	विक्र
गम्भीर	वाचाल	कृतज्ञ	कृत
गरमी	सरदी	कर्कश	को
ग्राम	नगर	कृत्रिम	प्रा
गृहस्थ	संन्यासी	कुमार्ग	सुम
गौरव	लाघव	कुरूप	सुरू
घर	बाहर	कारण	अकार
घन	तरल	खरीद	बि
घटाना	जोड़ना	खेद	प्रसन्न
घटना	बढ़ना	खण्डन	मण्ड
घ़ात	प्रतिघात	खरा	खो
घाटा	लाभ	गत	आग
घान	प्रतिघान	गरीब	अमी
घरेलू	बाहरी	गहरा	छिछ
घृणा	प्रेम	गरल	सु
चर	अचर	गमन	आगम
चल	अचल	ग्राह्य	त्या
चढ़ाव	उतार	ग्रहण	त्य
चिर	अचिर	चोर	सा
चिरंतर	नश्वर	चेतन	उ
झूठ	सच	चेतन	अचे
झोपड़ी	महल	छल	निश्छ
टूटना	जुड़ना	छाया	धू
ठोस	द्रव्य	छोटा	ब
ठंडा	गरम	छांह	धू
डाकू	शाह	जड़	चेत
डोम	ब्राह्मण	जय	पराज

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

तम	प्रकाश	जन्म	मृत्यु
तरल	ठोस	जटिल	सरल
ताप	शीत	जाड़ा	गर्मी
ताजा	बासी	जंगम	स्थावर
तारीफ	शिकायत	ज्योति	तम
तिमिर	प्रकाश	जागरण	निद्रा
तीक्ष्ण	कुण्ठित	जीत	हार
तीव्र	मन्द	जीवन	मरण
तुच्छ	महान	जीवित	मृत
तृषा	तृप्ति	जेय	अजेय
तेज	मंद	ज्येष्ठ	कनिष्ठ
थोक	खुदरा	उदय	अस्त
थोड़ा	बहुत	उत्साह	निरुत्साह
दंड	पुरस्कार	उदात्त	अनुदात्त
दरिद्र	सम्पन्न	उदार	कृपण
ऋण	धन	उद्धत	विनीत
ओछा	गम्भीर	उधार	नगद
औचित्य	अनौचित्य	उन्नति	अवनति
औरत	मर्द	उपकार	अपकार
औपचारिक	अनौपचारिक	उपचार	अपचार
कटु	मधुर	उपयोग	अनुपयोग
कठोर	कोमल	उपस्थित	अनुपस्थित
कड़ा	मुलायम	उर्वरा	ऊसर
कड़ुवा	मीठा	ऊँच	नीच
कपूत	सपूत	एक	अनेक
करुण	निष्ठुर	एकत्र	विकीर्ण
कर्म	अकर्म	एड़ी	चोटी
कलयुग	सतयुग	एकता	अनेकता
कठिन	सरल	एकमुख	बहुमुख
कच्चा	पक्का	एकाधिकार	सर्वाधिकार
क्रम	अक्रम	ऐतिहासिक	अनैतिहासिक
कीर्ति	अपकीर्ति	ऐश्वर्य	अनैश्वर्य
कृष्ण	श्वेत	दिवा	रात्रि
कुटिल	सरल	दुःख	सुख
कल्पित	यथार्थ	देय	अदेय

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कायर	निडर	दुर्जन	सज्जन
नख	शिख	दुर्दान्त	शांत
नवीन	प्राचीन	दीर्घकाय	कृशकाय
निंदा	स्तुति	दूषित	स्वच्छ
निगलना	उगलना	दुर्बल	सबल
नित्य	अनित्य	दृढ़	अदृढ़
निरर्थक	सार्थक	दृश्य	अदृश्य
निर्दय	सदय	धनी	निर्धन
निर्मल	मलिन	धरा	आकाश
निर्माण	ध्वंस	धवल	कृष्ण
निष्काम	सकाम	ध्वंस	निर्माण
निरक्षर	साक्षर	धैर्य	अधैर्य
न्याय	अन्याय	धृष्ट	विनीत
नूतन	पुरातन	धूप	छाया
नैतिक	अनैतिक	नर	नारी
निंदा	स्तुति	निश्चित	अनिश्चित
निकट	दूर	पंडित	मूर्ख
नीति	अनीति	पक्ष	विपक्ष
बलवान	निर्बल	परमार्थ	स्वार्थ
बच्चा	बूढ़ा	पठित	अपठित
बढ़िया	घटिया	परतंत्र	स्वतंत्र
बुराई	भलाई	पाश्चात्य	प्राच्य
बर्बर	सभ्य	प्रेम	घृणा
बंधन	मोक्ष	पूर्ण	अपूर्ण
बाहर	भीतर	पूर्व	पश्चिम
बाढ़	सूखा	प्रात:	सायं
बहिरंग	अंतरंग	पवित्र	अपवित्र
भद्र	अभद्र	पूरा	अधूरा
भूत	भविष्य	पाप	पुण्य
भोगी	योगी	प्रमुख	सामान्य
भाग्य	दुर्भाग्य	प्रफुल्ल	म्लान
मंगल	अमंगल	प्रसाद	विषाद
मनुज	दनुज	मँहगा	सस्ता
महात्मा	दुरात्मा	मिलन	विरह
मानव	दानव	मधुर	कटु

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मनुष्य	पशु	मूल्यवान	मूल्यहीन
मिलन	विछोह	मन्द	त्वरित
मूक	वाचाल	मुख्य	गौण
लिप्त	निर्लिप्त	मान	अपमान
लचीला	कठोर	यश	अपयश
लिखित	मौखिक	यथार्थ	कल्पित
लोक	परलोक	योग	वियोग
लड़ाई	मैत्री	योग्य	अयोग्य
विजय	पराजय	युद्ध	शांति
विधवा	सुहागिन	रत	विरत
विपत्ति	सम्पत्ति	रचना	ध्वंस
विपन्न	सम्पन्न	रक्षक	भक्षक
विशाल	क्षुद्र	राग	विराग
विस्तार	संक्षेप	राहत	प्रकोप
वीर	कायर	राव	रंक
विवाद	निर्विवाद	रिक्त	पूर्ण
विस्मरण	स्मरण	लाभ	हानि
वर	कन्या	लौकिक	अलौकिक
विधि	निषेध	लघु	दीर्घ
विद्वान	मूर्ख	श्लील	अश्लील
विश्वास	अविश्वास	शयन	जागरण
वेदना	आनन्द	शान्ति	अशान्ति
विलम्ब	अविलम्ब	शकुन	अपशकुन
शुभ	लाभ	शत्रु	मित्र
श्याम	श्वेत	शोषक	पोषक
शिष्ट	अशिष	शीत	उष्ण
शुद्ध	अशुद्ध	शोक	हर्ष
स्तुति	निंदा	संकल्प	विकल्प
स्थूल	सूक्ष्म	संक्षेप	विस्तार
स्वर्ग	नरक	संघटन	विघटन
स्वाधीन	पराधीन	संधि	विग्रह
स्वार्थ	परमार्थ	संयोग	वियोग
स्वामी	सेवक	सगुण	निर्गुण
संपद	विपद	सत्	असत्
साकार	निराकार	सहयोगी	प्रतियोगी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सुगन्ध	दुर्गन्ध	साँझ	सवेरा
सृजन	विनाश	साक्षर	निरक्षर
स्थिर	अस्थिर	सुख	दु:ख
सन्देह	विश्वास	सुगम	दुर्गम
हर्ष	विषाद	सुमति	कुमति
हिंसा	अहिंसा	सुलभ	दुर्लभ
हानि	लाभ	सौम्य	उग्र
हार	जीत	हँसना	रोना
क्षणिक	शाश्वत	क्षुद्र	विराट
ज्ञान	अज्ञान	ज्ञात	अज्ञात
ज्ञानी	मूढ़		

अनेकार्थी शब्द (Homonyms)

अनेकार्थी शब्द का रूप और उच्चारण समान होता है किन्तु अर्थ की भिन्नता होती है। वाक्य में ऐसे शब्दों का अर्थ सन्दर्भ या प्रकरण से ज्ञात होता है। यहाँ विद्यार्थियों के लाभार्थ कुछ अनेकार्थी शब्द दिये जा रहे हैं :

अरुण—लाल रँग, सूर्य
अज—बकरा, ब्रह्मा
अम्बर—कपड़ा, आकाश
अर्थ—मतलब, धन, प्रयोजन
अशोक—शोक रहित, एक वृक्ष विशेष, एक सम्राट् का नाम
अलि—सखी, भ्रमर
अयन—गमन, स्थान, घर
अन्तर—बीच का मार्ग, हृदय, बीच का समय
अर्क—सूर्य, आक का पौधा, निचोड़ा हुआ रस
अक्ष—धुरी, जुआ, आँख, गोला
अक्षर—जीव, ब्रह्म, आकाश, वर्णमाला
उत्तर—जवाब, एक दिशा का नाम
कनक—सोना, धतूरा, खाद्यान
कर—हाथ, किरण, मशीन, हाथी की सूंड, टैक्स
कर्ण—कान, कुमारी कुन्ती का पुत्र, समकोण त्रिभुज की भुजा
कल—चैन, बीता हुआ या आनेवाला दिन, सुन्दर
कला—कारीगरी, कौशल
काल—दुर्भिक्ष, यमराज, मृत्यु, समय

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कृष्ण--काला, बलराम का छोटा भाई

खर--तेज, गधा, एक राक्षस का नाम

खल--दुष्ट आदमी, किसान की फसल रखने का स्थान

गुरु--आचार्य, पूज्य, भारी, बृहस्पति

गुण--अच्छाई, रस्सी, धनुष की डोरी

गो--इन्द्रियाँ, गाय, दिशाएँ, वाणी

ग्रहण--पकड़ना, स्वीकारना

घन--बादल, घना, बड़ा, हथौड़ा, भारी

चक्र--घेरा, सेना का व्यूह, विशेष पहिया

चपला--बिजली, लक्ष्मी, चंचल स्त्री

जीवन--पानी, प्राण, जिन्दगी

ताल--तालाब, एक पेड़ का नाम, गाने का नियम

तात--पिता, भाई, पुत्र, मित्र, चाचा, प्यारा

दल--पत्ता, सेना, समूह

द्विज--दाँत, पक्षी, चन्द्रमा, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य

दर्शन--देखना, शास्त्र विशेष

दण्ड--डंडा, सजा

नग--पर्वत, पेड़, नगीना

नन्दन--पुत्र, प्रसन्न् करने वाला, इन्द्र के बाग का नाम

नाक--स्वर्ग, नासिका

पक्ष--पंख, ओर (पक्षपात, विपक्ष), आधा महीना (शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष)

पतंग--सूर्य, पतंगा, कीड़ा, उड़ाने की कागज की गुड्डी

पत्र--पत्ता, चिट्ठी

पय--दूध, पानी

पयोधर--बादल, स्तन

पद--कविता (पद्य), आदर का स्थान (ओहदा), पैर, स्थान

फल--शस्त्र का तेज भाग (चाकू का फल), परिणाम, लाभ, पेड़ का फल

भव--महादेव, जन्म, संसार

मित्र--दोस्त, सूर्य

मधु--शहद, मीठा, वसन्त,

मान--आदर, रूठना, मूल्य

माधव--कृष्ण, बसन्त, वैशाख

मकर--बारह राशियों में से एक, मछली, मगर

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मशक–मच्छर, भिश्ती का चमड़े का थैला
मन्त्र–सलाह, वेद आदि का मन्त्र
मुद्रा–सिक्का, मुहर, छाप, विशेष प्रकार का चेहरा (प्रसन्नता की मुद्रा)
यन्त्र–मशीन, टोटका (जन्तर)
योग–समाधि, मिलन, शुभ घड़ी
रस–आनन्द, गन्ने या किसी फल का रस
रक्त–लाल, खून, प्रेम में मग्न (अनुरक्त)
राग–गाना, रंग, प्रेम
राशि–ढेर, बारह राशियाँ - मेष, मकर आदि
लगन–प्रेम, मुहूर्त
लय–नाश , गाने का ढंग
वर्ण–रंग, अक्षर, जाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि)
विग्रह–शरीर, लड़ाई, विस्तार
विधि–ढंग, ब्रह्मा
वर–दूल्हा, श्रेष्ठ, वरदान
वंश–कुल, बाँस
वत्स–वर्ष, बछड़ा, बालक, पुत्र
सुधा–अमृत, चूना, (कलई)
सर–तालाब, बाण
सुरभि–कामधेनु, गो, सुगन्धि
सारंग–कोयल, हिरन, पपीहा, भौंरा, बादल, सिंह, चातक, कमल, चन्द्रमा
श्रुति–वेद, कान, ऋचा
श्री–धन, लक्ष्मी, सुन्दरता
हरि–विष्णु, इन्द्र, सिंह, सूर्य, बन्दर
हंस–एकपक्षी का नाम, आत्मा, सूर्य
हार–माला, पराजय

वाक्यों या वाक्यांशों के लिए एक शब्द

आज कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक भाव व्यक्त करने का रिवाज है। वाक्य या वाक्यांश को केवल एक शब्द में विस्थापन करने से भाषा में ला तथा गांभीर्य आ जाता है। यहाँ कुछ ऐसे शब्द दिये जा रहे हैं ;-

वाक्य/वाक्यांश	**एक शब्द**
अकड़ कर चलने वाला	अकड़ू
अचानक होने वाला	आकस्मिक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अधिक और अनावश्यक बोलने वाला	वाचाल
अनुचित बात के लिए आग्रह	दुराग्रह
अपनी इच्छा से दूसरों की सेवा करने वाला	स्वयंसेवक
अपने पद से हटाया हुआ	पदच्युत
अभी अभी स्नान किया हुआ	सद्य:स्नात
अवश्य होने वाला	अवश्यंभावी
आँखों से परे	परोक्ष
आँखों के सामने	प्रत्यक्ष
आकाश को चूमने वाला (बहुत ऊँचा)	गगन चुम्बी
आगे की सोचकर काम करने वाला	दूरदर्शी
आगे होने वाली	भावी
शुरू से आखीर तक	अद्योपान्त
आसानी से पचनेवाला	सुपाच्य
ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाला	आस्तिक
ईश्वर की सत्ता में विश्वास न रखने वाला	नास्तिक
उपकार के प्रति किया गया उपकार	प्रत्युपकार
उसी समय का	तत्कालीन
एक-एक अक्षर	अक्षर:श
एक अक्षर भी न जानने वाला	निरक्षर
एक जगह से दूसरी जगह रखा अथवा भेजा हुआ	स्थानान्तरित
सगे भाई	सहोदर
एक ही समय में वर्तमान	समसामयिक
कमर से नीचे पहने जाने वाला वस्त्र	अधोवस्त्र
करने योग्य	करणीय
कष्ट से सम्पन्न होने वाला	कष्टसाध्य
कहा हुआ	कथित
कानों से न सुनने वाला	वधिर
किसी के पास सुरक्षा के लिये रखी हुई वस्तु	धरोहर, अमानत
क्षमा के योग्य	क्षम्य
चार पैर वाला	चौपाया
जल से उत्पन्न होने वाला	जलज
जहाँ सदा मुफ्त भोजन बँटता है	सदावर्त
जहाँ नदियाँ मिलती हों	संगम
जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जिसका अनुभव किया हुआ हो	अनुभूत
जिसका कोई न हो	अनाथ/असहाय
जिसका कोई शत्रु न हो	अजातशत्रु
जिसका जन्म निम्न जाति में हुआ हो	अंत्यज
जिसका निवारण नहीं किया जा सकता	अनिवार्य
जिसका पति मर गया हो	विधवा
जिसकी आशा न की गयी हो	अप्रत्याशित
जिसकी उपमा न हो सके	अनुपम
जिसकी बुद्धि तेज हो	कुशाग्रबुद्धि
जिसके पार दिखाई दे	पारदर्शक
जो बहुत निर्दयी हो	निर्मम, निर्दय
जिसे पति ने छोड़ दिया हो	परित्यक्त
जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ हो	कुलीन
जो आसानी से मिलता है	सुलभ
जो अपनी इच्छा के अधीन है	ऐच्छिक
जो किये गये उपकारों को मानता है	कृतज्ञ
जो किये गये उपकारों को नहीं मानता	कृतघ्न
जो कानून के विरुद्ध है	अवैध, गैरकानूनी
जो जन्म से अंधा हो	जन्मांध
जो दूसरों से ईर्ष्या करता है	ईर्ष्यालु
जो दूसरों की भलाई चाहता है	परमार्थी
जो दूसरे के स्थान पर अस्थायी रूप से काम करे	स्थानापन्न
जो देखा नहीं जा सकता	अदृश्य
जो नष्ट होनेवाला है	नश्वर
जो पहले था पर अभी नहीं है	भूतपूर्व
जो बहुत कठिनाई से मिलता है	दुर्लभ
जो बात वर्णन से परे हो	वर्णनातीत
जो गद्दी का अधिकारी हो	युवराज
तर्क से पुष्ट	तर्कसम्मत
तुरत (हाल में) जन्मा हुआ	नवजात
पत्तों की बनी हुई कुटी	पर्णकुटी
पढ़ने योग्य	पठनीय
बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहना	अतिशयोक्ति
बहुत-सी भाषाओं को जानने वाला	बहुभाषाविद्

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बिना वेतन के	अवैतनिक
मृत्युतक	आमरण
याचना करने वाला	याचक
रोंगटे खड़े करने वाला	लोमहर्षक
लौटकर आया हुआ	प्रत्यागत
वचन द्वारा जो कहा नहीं जा सकता	अनिवर्चनीय
वह मनुष्य-जिसकी पत्नी मर गयी हो	विधुर
विदेश में प्रवास करने वाला	प्रवासी
विश्वास के योग्य	विश्वसनीय
विशेष रूप से प्रसिद्ध	विख्यात
शक्ति के अनुसार	यथाशक्ति
संध्या और रात के बीच का समय	गोधूलि
सब कुछ जानने वाला	सर्वज्ञ
सदा हरा (प्रसन्न) रहने वाला	सदाबहार
सब कुछ खानेवाला	सर्वभक्षी
समान उम्र वाले लोग	समवयस्क
सांसारिक जीवन से मुक्त होने का इच्छुक	मुमुक्षु
सिर से पैर तक	आपादमस्तक
सुख देनेवाला	सुखद
सुनने योग्य	श्रव्य, श्रवणीय
हमेशा रहनेवाला	शाश्वत

एकार्थक प्रतीत होनेवाले (पर्याय) शब्दों का अर्थ भेद

एक ही शब्द के कई-कई समानार्थी शब्द भाषा में विद्यमान है। यों तो साधारणत: उनका अर्थ एक समान होता है किन्तु ध्यान से विचार करने पर उनमें सूक्ष्म अन्तर पाया जाता है। जैसे 'माता' और 'जननी' दोनों शब्द समानार्थी ही हैं किन्तु 'जननी' शब्द केवल जन्म देने का अर्थ देता है जिसके साथ बालक के पालन-पोषण का भाव भी बना रहता है जबकिं 'माता' शब्द स्नेह- सम्मान आदि का सूचक है। इस सूक्ष्म अंतर को स्पष्ट करते हुए हम यहाँ कुछ शब्द दे रहे हैं :-

अज्ञ—	अज्ञानी, जिसका ज्ञानी हो पाना संभव है।
मूर्ख—	जो हमेशा अज्ञानी रहेगा ।
अभिमान—	अपनी योग्यता अनुसार गौरव अनुभव करना, गर्व।
अहंकार—	मिथ्या दंभ, अपने को अनावश्यक महत्व देना।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अध्ययन— सामान्य रूप से पढ़ना।

अनुशीलन— गहन अध्ययन।

अनुराग— वस्तुओं से सहज प्रेम भाव।

आसक्ति— मोह की स्थिति।

आग्रह— बलपूर्वक कहना, जबरदस्ती करना (विनयपूर्वक)।

अनुरोध— निवेदन करना।

अद्भुत— सामान्य से बिल्कुल भिन्न, चौंकाने वाला।

विचित्र— जो अपनी विशेषता से आकर्षित करे।

अधिकार— किसी वस्तु पर दावा (अप्राणी)।

स्वत्व— किसी वस्तु पर दावे में स्वामित्व का भाव।

अनशन— भौतिक प्रयोजन से अन्न त्याग।

उपवास— धार्मिक या स्वास्थ्य की दृष्टि से अन्न त्याग

अनुकूल— किसी व्यक्ति के विचारों के पक्ष में होना।

अनुरूप— किसी व्यक्ति के रूप-आकार के सदृश्य होना।

अपमान— समवयस्क या छोटे के द्वारा निरादर।

तिरस्कार— आदरणीय व्यक्ति की उपेक्षा का भाव

अपराध— कानून का उल्लंघन।

पाप— धार्मिक, नैतिक, सामाजिक नियमों का उल्लंघन।

आयु— व्यक्ति विशेष के जीवन के वर्ष/ उम्र।.

अवस्था— वर्तमान स्थिति की सूचना।

आशा— किसी वस्तु की प्राप्ति की लालसा।

विश्वास— वस्तु प्राप्त हो जाने के प्रति पूर्ण आश्वस्ति का भाव।

अवयव— शरीर के अभिन्न अंश या भाग।

अंग— किसी भी वस्तु के भाग।

अमूल्य— जिसका मूल्य निर्धारण संभव न हो।

बहुमूल्य— जिसका काफी अधिक मूल्य हो।

अर्थ— किसी शब्द या वाक्य का अभिप्राय 'अर्थ'पैसे को भी कहते हैं/तात्प

आशय— लक्ष्य विशेष से सम्बन्धित

अर्पण— छोटों के द्वारा बड़ों को वस्तु का देना।

प्रदान— बड़ों के द्वारा छोटों को वस्तु का देना।

अलौकिक— जो इस लोक का न हो या इस लोक से सम्बंधित न हो/दिव्य।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

असाधारण— जो सामान्य न हो अर्थात् विशिष्ट हो।

अस्त्र— किसी यंत्र जैसे बन्दूक, तोप आदि से चलाये जाने वाला हथियार।
शस्त्र— हाथ से चलाये जाने वाला हथियार, जैसे लाठी।

आकार— वस्तु या व्यक्ति आदि की बनावट।
रूप— वस्तु या व्यक्ति के आकार से देखने में प्रभाव डालने वाला भाव।

आचार— व्यक्तिगत् जीवन से सम्बंधित आचरण।
व्यवहार— सामाजिक जीवन से सम्बंधित आचरण।

आधि— मानसिक बीमारियाँ, जैसे अपस्मार, मूर्च्छा आदि।
व्याधि— शारीरिक बीमारियाँ जैसे ज्वर, चोट आदि।

आरंभ— सामान्य ढंग से किसी कार्य की शुरुआत।
प्रारंभ— औपचारिकता, महत्ता व विधि-विधान से कार्य की शुरुआत।

आशंका— भावी अमंगल की चिंता।
संभावना— संभाव्य की भावना।

आह्लाद— किसी प्रसंग पर हार्दिक आनंद का भाव।
उल्लास— किसी कार्य की सफलता पर सहज हर्ष का भाव।

अपवाद— झूठे आरोपों पर आधारित बदनामी।
निंदा— तथ्यों पर आधारित दोषारोपण।

अनुकम्पा— हृदय संवेद्य स्थिति में किसी पर दया दिखाना।
कृपा— किसी व्यक्ति के हृदय में स्थित दया का भाव।

अनुभव— इन्द्रियजन्य ज्ञान अनुभव कहलाता है।
अनुभूति— अनुभव की हृदय में तीव्रता।

अन्याय— विधान के विपरीत आचरण।
अत्याचार— बुरे आचरण की अधिकता।

अनिवार्य— जिसे किया जाना जरूरी हो।
आवश्यक— महत्वपूर्ण होने पर भी जिसका किया जाना जरूरी न हो।

इच्छा— किसी वस्तु को प्राप्त करने की सामान्य भावना।
कामना— विषय वासना युक्त इच्छा।

ईर्ष्या— दूसरों की प्रगति को देखकर जलना, बुरा चाहना।
द्वेष— सकारण शत्रुता रखना।

स्पर्द्धा— दूसरों की प्रगति को देखकर स्वयं भी प्रगति का प्रयास करना।

उद्देश्य— जिसके करने की मन सहज रूप से प्रवृत्त हो।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ध्येय—	जिसकी ओर मन केन्द्रित करके कार्य किया जाए।
उपहार—	बराबर वालों को सप्रेम दी जाने वाली वस्तु।
भेंट—	अपने से बड़ों को विनम्रतापूर्वक दी जाने वाली वस्तु।
उपस्थिति—	व्यक्ति का प्रस्तुत होना।
विद्यमानता—	वस्तु का प्रस्तुत होना।
उन्नति—	ऊँचा उठना, विकास करना।
प्रगति—	आगे बढ़ना,अग्रसर होना।
उदाहरण—	नियम, सिद्धांत आदि का बोध कराने में उदाहरण दिया जाता है।
द्रष्टान्त—	अपने मत या सिद्धान्त की पुष्टि में द्रष्टान्त दिया जाता है।
उद्योग—	उत्साह और बड़ी लगन से काम करना।
प्रयास—	सामान्य लगन से काम करना।
उत्तम—	भाव या विचार के सम्बन्ध में अच्छाई का परिचायक शब्द।
श्रेष्ठ—	वस्तु या विषय के सम्बन्ध में अच्छाई का परिचायक शब्द।
उपासना—	परमात्मा के सामीप्य-लाभ का प्रयत्न।
पूजा—	भक्तिभावना से मुक्त परमेश्वर (साकार) का पूजन।
ऋषि—	मंत्रों के द्रष्टा।
मुनि—	धार्मिक मनन करने वाले।
कष्ट—	शारीरिक पीड़ा।
क्लेष—	मानसिक पीड़ा।
कविता—	काव्य का एक रूप, सामान्यत: छन्द बद्ध भावाभिव्यक्ति।
काव्य—	साहित्य की एक विद्या, जिसमें अभिव्यक्ति पद्यात्मक होती है।
कलंक—	कुकर्मजन्य चरित्र या व्यक्तित्व पर लगा आघात।
अपयश—	यशस्वी जीवन में अपवाद।
कर्त्तव्य—	जो करना हमारा दायित्व है।
कार्य—	नित्यप्रति के सामान्य काम।
कारण—	किसी कार्य में प्रवृत्त होने का प्रयोजन।
हेतु—	वह उद्देश्य जिसके लिए कार्य किया जाय।
क्रूर—	आचरण में कठोर व्यक्ति।
निर्दय—	दया से रहित व्यक्ति।
गहरा—	ऊपर से नीचे की स्थिति का द्योतक, जैसे कुआँ
घना—	क्षैतिज स्थिति का परिचायक, जैसे घना कुहरा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

गलना— ठोस पदार्थ का तरल होना।

घुलना— ठोस पदार्थ का किसी अन्य तरल पदार्थ में पड़कर उसी में मिल जाना।

चिह्न— बाह्याकार से आभासित हो जाने वाला निशान।

लक्षण— किसी वस्तु या व्यक्ति के चरित्र के सूचक चिह्न।

चिन्तन— चिन्तापूर्वक किसी विषय पर विचार करना।

मनन— किसी विषय पर मन का बार- बार गहराई में जाना।

जीवन— शरीर में प्राण का होना जीवन का परिचायक।

प्राण— जीवन का मूल, प्राण के जाते ही मृत्यु।

तट— पृथ्वी का वह अंश जो सागर, सरिता या सरोवर के जल का स्पर्श करता है।

तीर— तट का समीपवर्ती प्रदेश

ताप— शारीरिक, मानसिक आदि कष्टों का सूचक।

सन्ताप— मानसिक कष्ट की प्रधानता वाला ताप।

दरिद्र— जिसके पास कुछ न हो।

निर्धन— जिसके पास धन न हो।

द्वन्द्व— दो व्यक्तियों; या विचारों का।

संघर्ष— कई व्यक्तियों व परिस्थितियों का।

दोष— वह बुराई जो चरित्र या व्यक्तित्व से सम्बन्धित हो।

त्रुटि— अपूर्णता की सूचक कमी/गलती।

धन— रुपया-पैसे, कुछ लोग गुण को भी धन मानते हैं, यथा 'संतोषधन'।

संपत्ति— सभी प्रकार की वस्तुयें, यथा राजा, हाथी, घोड़े, मकान आदि।

धर्म— जीवन को 'मानवता' के धरातल पर जीने योग्य बनाने वाला तत्व।

संप्रदाय— किसी 'इष्टदेव' विशेष की पूजा, मान्यता आदि से सम्बंधित।

निवेदन— नियमानुसार विनम्र होकर बात कहना।

प्रार्थना— विनयपूर्वक अनुग्रह के लिये आवेदन करना।

निश्चय— पक्का विचार।

निर्णय— पक्ष-विपक्ष पर विचार करके मत बनाना/फैसला।

पत्नी— किसी व्यक्ति की विवाहिता स्त्री।

नारी— कोई भी महिला।

परामर्श— कुछ व्यक्तियों का सामान्य विचार-विमर्श।

मंत्रणा— किसी विशेष सन्दर्भ में कुछ लोगों की गुप्त विचारणा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पदार्थ—	प्राकृतिक वस्तुयें—दूध, घी, फल, अन्न आदि।
वस्तु—	मानवनिर्मित चीजें, जैसे कलम, दावात, कागज आदि।
पारितोषिक-	प्रतियोगिता में विजय प्राप्त करने पर मिलने वाला।
पुरस्कार—	किसी कार्य या सेवाके लिये मिलने वाला।
पुरातन—	काफी समय से या पुराने जमाने से चला आ रहा।
सनातन—	हमेशा से चला आ रहा।
पूँजी—	व्यापर में लाभार्थ लगाया गया धन।
लागत—	व्यापार में किसी वस्तु के निर्माण में लगी धन की मात्रा।
पुरुषार्थ—	किसी उद्देश्य से किया जाने वाला कार्य।
पौरुष—	वीरता, साहस, उद्योग आदि पुरुषोचित गुण।
प्रलाप—	दुःखावेग में अनर्गल रोना/चिल्लाना।
विलाप—	दुःखद प्रसंग में जोर-जोर से रोना।
पारंगत—	किसी भी कार्य में दक्ष।
प्रवीण—	मूलतः वाद्य यंत्रों के बजाने में दक्ष।
परिणाम—	समयानुसार परिवर्तन की अंतिम स्थिति।
फल—	किसी कार्य के सम्पादन से प्राप्त होने वाला परिणाम, कर्मफल।
परीक्षक—	किसी की मानसिक या बौद्धिक क्षमता की जांच करने वाला।
निरीक्षक—	किसी वस्तु, विभाग आदि की जांच करने वाला।
भक्ति—	पूज्यभाव तथा श्रद्धा का मिश्रित रूप।
श्रद्धा—	किसी व्यक्ति के गुण; सत्कार्य आदि से उत्पन्न भाव
भाव—	इसका सम्बन्ध हृदय से/ स्थायी रूप में विद्यमान रहते हैं।
विचार—	इसका सम्बन्ध बुद्धि से / विचार बदलते रहते हैं।
भिज्ञ—	किसी विषय का सामान्य जानकार।
विज्ञ—	किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता।
मन—	संकल्प-विकल्प प्रस्तुत करने वाली अन्तःकरण।
चित्त—	जो सुख-दुःख का अनुभव करता है।
बुद्धि—	अन्तःकरण की निश्चयात्मिका बुद्धि।
योग्यता—	कार्य करने की बौद्धिक विशेषता।
क्षमता—	कार्य करने की शारीरिक योग्यता।
लहर—	सागर-जल में उठने वाली ऊँची-ऊँची तरंगें।
तरंग—	जल की सतह पर सतत प्रवाहित छोटी-छोटी उर्मियाँ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi, An eGangotri Initiative

व्यापार— सामान का क्रय-विक्रय, या कपड़ा बेचना।

व्यवसाय— आजीविका के अपनाया लिये जाने वाला कार्य, यथा अध्यापन।

सभ्यता— बाह्य जीवन से संबंधित; रहन सहन, सामाजिक व्यवहार।

संस्कृति— आन्तर जीवन से संबंधित; नैतिकता, परम्पराएँ, संस्कार आदि।

शील— शिष्टता, सज्जनता, विनम्रता आदि सद्वृत्तियाँ।

स्वभाव— व्यक्ति की सहजवृत्ति।

विद्या— किसी वस्तु को जानने की कला है विद्या।

शिक्षा— ज्ञानराशि का अर्जन शिक्षा कहलाता है।

ज्ञान— अध्ययन, अनुभव आदि से प्राप्त बौद्धिक क्षमता।

समूहवाची शब्द

भाषा में कई बार समान गुणवाले अनेक व्यक्ति या वस्तुओं के लिए केवल एक शब्द का प्रयोग भी किया जाता है यह शब्द एक श्रेणी के व्यक्तियों या वस्तुओं की संख्या अथवा परिमाण बोधक शब्दों के बाद में प्रयुक्त होने वाला शब्द होता है। ऐसे कुछ समूहवाची शब्द यहाँ दिये जा रहे हैं:-

काफिला— यात्रियों का दल

कारवाँ— यात्रियों का कारवाँ

कट्ठर— लकड़ियों का गट्ठर

गुच्छा— अंगूरों का गुच्छा, फूलों का गुच्छा, चाबियों का गुच्छा।

गिरोह— बदमाशों को गिरोह, डाकुओं का गिरोह

जत्था— क्रान्तिकारियों का जत्था, फौजियों का जत्था

झुंड— पक्षियों का झुंड

ढेर— आनाज का ढेर, कूड़े का ढेर

दल— टिड्डियों का दल, स्वयंसेवकों का दल

पुंज— किरणों का पुंज, तारों का पुंज

बेड़ा— जहाजों का बेड़ा

भीड़— लोगों की भीड़

मंडली— गायकों की मंडली

राशि— धन की राशि, ज्ञान की राशि

रेवड़— भेड़ों/बकरियों का रेवड़

सम्मेलन— कवियों/लेखकों/गायकों का सम्मेलन

समूह— शब्दों का समूह

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ध्वन्यात्मक शब्द

मनुष्य, प्रकृति अथवा जीवधारियों की क्रियाओं के सम्पादन से कुछ ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं, उनके अनुकरण से कुछ शब्द भाषा में प्रचलित हो गये हैं। कुछ ध्वनि-शब्द यहाँ दिये जा रहे हैं:-

ध्वन्यात्मक शब्द	अर्थ
कच-कच	अनावश्यक बकवास, दाँतों के पीसने की ध्वनि
काँव-काँव	कौवे की आवाज
किकियान (चिचियाना)	बन्दर की बोली
किटकिटना	अत्यधिक क्रोध या ठंड के कारण दाँतों के परस्पर स्पर्श के उत्पन्न ध्वनि
कुड़कुड़ाना	मन ही मन कुढ़ना
गुर्राना	बाघ आदि की ध्वनि
चड़चड़	गर्म तेल में पानी गिरने से उत्पन्न ध्वनि
घड़घड़ाहट	बादलों के आपास में टकराने की ध्वनि
चहकना (चहचहाना)	चिड़ियों की बोली
चिघाड़ना	हाथी की बोली
चूं-चूं	चूहे की बोली
छप-छप	कपड़े धोने की ध्वनि
छलकना	पूरे भरे बरतन से तरल पदार्थ के गिरने की ध्वनि
झन-झन	बरतनों के टकराने की ध्वनि
टपटप	पानी टपकने का शब्द
थपथम	धीरे-धीरे किसी वस्तु पर मारने से उत्पन्न ध्वनि
दहाड़ना	शेर के गुस्से में बोलने की ध्वनि
फड़फड़ना	पंखों की लगातार ऊपर-नीचे होने की ध्वनि
फुंकारना	साँप के फुत्कार का शब्द
भिनभिन	मक्खियों का शब्द
भों-भों	कुत्ते के बोलने का शब्द
म्याऊं-म्याऊं	बिल्ली के बोलने का शब्द
रंभाना	गाय के बोलने का शब्द
रेंकना	गधे के बोलने का शब्द
हिनहिनाना	घोड़े के बोलने का

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पुनरुक्त तथा युग्म शब्द

'पुनरुक्त' का अर्थ है 'एक बार फिर कहे हुए'। अर्थ और रचना की दृष्टि से ये शब्द काफी महत्वपूर्ण हैं। इन शब्दों को निम्नलिखित वर्गों में रखा जा सकता है:

(अ) ऐसे शब्द जिनमें वही शब्द दो बार बोला जाता है; जैसे :—

(i) गली-गली, घर-घर, घड़ी-घड़ी, मुहल्ले-मुहल्ले।

(इनका अर्थ है हर गली, हर घंर, हर घड़ी, हर मुहल्ले)

(ii) काले-काले , छोटे-छोटे, अच्छा-अच्छा, मीठे-मीठे, अलग-अलग।

(इनका अर्थ है कि ऐसे पदार्थ अलग हैं और दूसरी प्रकार के पदार्थ अलग हैं)

(iii) दो-दो, चार-चार, दस-दस।

(इसका अर्थ है कि इतनी संख्या के समूह में)

(iv) चलते-चलते, बैठे-बैठे, पिला-पिला कर।

(इनका अर्थ है कि कार्य निरन्तर होता रहा है।)

(v) ऐसे कुछ जोड़ों के मध्य में ही, 'न', 'से', 'का', 'की', आदि शब्द लगकर अर्थ में विशेषता आती है; जैसे : कुछ-न-कुछ, कहाँ से कहाँ, कोई-न-कोई, कहीं-न-कहीं, कभी-न-कभी, घर-के-घर, भीतर-का-भीतर।

(आ) बल देने हेतु तथा अर्थ में विस्तार करने के लिए पर्याय या समानार्थक शब्दों का प्रयोग; जैसे :

बाल-बच्चे, मार-पीट, धन-दौलत, जान-पहचान, छान-बीन, थका-माँदा, सोच-समझकर, मिलना-जुलना, हिलते-डुलते।

(इ) कभी-कभी शब्द की प्रतिध्वनि-सी पहले जोड़कर अर्थ में विशिष्टता लायी जाती है; जैसे : नीचे लिखे में पहला शब्द प्रतिध्वनित है।

अदला-बदला, अता-पता, अड़ोसी-पड़ोसी, अगल-बगल, आस-पास, आर-पार, आमने-सामने।

(ई) कभी-कभी प्रतिध्वनित शब्द अंत में जुड़ता है; जैसे · कागज- वागज, झूठ-मूठ, चुप-चाप, खाली-खूली, मिठाई-विठाई।

(उ) कभी-कभी दोनों शब्द निरर्थक होते हैं। वे सदैव युग्मों में प्रयुक्त होते हैं; जैसे :

अंट-संट, अंड-बंड, अनाप-शनाप, अफरा-तफरी

(ऊ) कुछ युग्मों का निर्माण विलोम शब्दों से होता है; जैसे :

अपना-पराया, ऊँच-नीच, हानि-लाभ, यश-अपयश, उत्थान-पतन आदि।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शब्द-संधान

'शब्द' एक ऐसा अस्त्र है जिसका प्रयोग यदि सावधानी से न किया जाए तो यह अर्थ का अनर्थ कर देता है और कई बार स्थिति बहुत ही दयनीय और हास्यास्पद हो जाती है। उदाहरणार्थ 'आग्रह' और 'अनुग्रह' शब्दों को लीजिए। 'आग्रह' का सामान्य अर्थ होता है - निवेदन करना, जोर देना, इसरार करना आदि और अनुग्रह' का अर्थ है- कृपा, मेहरबानी आदि। कोई व्यक्ति आपको अपने यहाँ बुलाता है तो आप कहते हैं, - आपका आग्रह था इसलिए आ गया। अब यदि आप 'आग्रह' के स्थान पर 'अनुग्रह' का प्रयोग करें और कहें- आपका अनुग्रह था इसलिए आ गया। उस एक शब्द के अनुचित प्रयोग से सारा अर्थ ही बदल गया।

यहाँ कुछ ऐसे शब्द दिये जा रहे हैं विद्यार्थी जिनका प्रयोग गलत ढँग से करते हैं।

(क) 'गति' सम्बन्धी कुछ क्रियाएँ

भीड़ में देखने के लिए नाटे का **उचकना**
आकाश में वायुयान का **उड़ना**
दुःख में आँसुओं का **उमड़ना**
घाव से खून का **बहना**
दीवार पर छिपकली का **सरकना**
आकाश में चील का **मँडराना**
नदी में नाव का **तिरना**
आँगन में शिशु का **ठुमकना**
बिल्ली का चूहे पर **झपटना**
फर्श पर साँप का **रेंगना**
अकारण आवारों का **डोलना**
सड़क पर सवारी का **निकलना**
मैदान में खिलाड़ी का **दौड़ना**
पुलिस को देखकर चोर का **भागना**
रोटी पर भूखे का **लपकना**
बाजार में सैलानियों का **घूमना/फिरना**
चौराहे से जुलूस का **गुजरना**
जंगल में हिरनों का **विचरना**
घमंड से ओछे का **फुदकना**

(ख) 'भाव' विशेष के व्यक्त करने वाले शब्द

भय से **घिघियाना**

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लज्जा से **खिसियााना**
असहायता में **छटपटाना**
तेजी से **दनदनाना**
तिरस्कार से **दुरदुराना**
पीड़ा से **तिलमिलाना**
चिढ़ाने से **खिजलाना**
चिढ़ से **चिड़चिड़ाना**
उल्लास से **हूहकना**
उन्मुक्तता से **हुड़दंगना**
विनोद में **चकल्लस करना**
शोर का **कोलाहल होना**
क्लेश की **झाँय-झाँय होना**
विराग की **भाँय-भाँय**
कपट की **खुसुर-पुसुर**
सामूहिकता का **हल्ला-गुल्ला**

(ग) विनाश की ध्वनियाँ

धूप में पौधों का **झुराना**
वाहन से आदमी का **कुचलना**
फूल का समय से पहले **कुम्हलाना।**
हाथी का पैरों तले **रौंदना**
नसों का **फटना/चिरना/फसकना**
दुर्घटना में सड़क पर गिरने से वस्तुओं का **छितरना**
काफी चलने से जूतों का **घिसना**
बहुत इस्तेमाल से कपड़ों का **चिथना/बिंधना**
नंगे पैर चलने पर पैरों में काँटों का **बिंधना**
सूखी लकड़ी का **मिचुकना**
शीशे का **दरकना**
हड्डियों का **चटखना/तड़कना**
दर्द के कारण सिर की नसों का **तड़कना**
दीवार के पुराने पलस्तर का **भुरभुराना**
खाद्य पदार्थों का **बुसना/सड़ना**
सड़ जाने पर पनीली वस्तुओं का **बजबजाना**
मोच आने से कलाई का **मिचुकना**
पुराने पड़े कागज का **खुसखुसाना**

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

टीन के डिब्बे का दब जाने से **पिचकना**
लकड़ी का कुल्हाड़ी की मार से **चिरना/दरकना**
सूखा के कारण भूमि का **दरकना/बररना**
ज्यादा पानी पड़ने से या वाहनों के चलने से सड़क का **धसकना**
रेशमी कपड़े का जोर से निचोड़ने से **मसकना**
ज्यादा माल भरने से बोरी का **फसकना**
सील लगने से कुरकुरी चीज का **बजबजाना/मिहाना**

(घ) 'क्रिया' की क्रियाएँ

फूलों का मन को **लुभाना**
दिल को **बहलाना**
बात करने को **तरसना**
झूठे वायदों से मन **भरमाना**
रोते बच्चे को मिठाई से **फुसलाना**
सरकस ले जाने का वचन देकर बच्चे को **बहकाना**
सरकस न ले जाकर बालक को पिता द्वारा **झुठलाना**
मीठी-मीठी बातें करके बच्चे को **छलना**
दूकानदार का खराब चीज देकर ग्राहक को **ठगना**
अच्छे विक्रेता का ग्राहक को **पटाना**

हिन्दी लेखन की सामान्य अशुद्धियाँ

प्राय: देखा गया है कि विद्यार्थी हिन्दी लिखते समय व्याकरण और रचना सम्बन्धी भूलें तो करते ही हैं साथ ही वर्तनी सम्वन्धी भूलें भी कर बैठते हैं । इसके मुख्य रूप से तीन कारण है (क) अज्ञान (ख) अपनी मातृभाषा का प्रभाव (ग) उच्चारण की भिन्नता। यदि शब्द-विन्यास पर थोडा ध्यान दिया जाएं और सही तथा शुद्ध उच्चारण का अभ्यास किया जाये तो काफी सीमा तक अशुद्धियों से बचा जा सकता है। यहाँ हम कुछ ऐसे शब्द दे रहे हैं जिनकी वर्तनी में प्राय: स्खलन हो जाता है :

(क) स्वर तथा मात्रा सम्बन्धी अशुद्धियाँ

'अ' के स्थान पर 'आ' लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनाधिकार	अनधिकार	आकस्मात्	अकस्मात्
अत्याधिक	अत्यधिक	आधीन	अधीन
भागीरथ	भगीरथ	आजकाल	आजकल
बारात	बरात	बाँगलादेश	बँगलादेश

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

'आ' के स्थान पर 'अ' लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
नरायन	नारायण	अवश्यकता	आवश्यकता
बल्मीकि	बाल्मीकि	तत्कालिक	तात्कालिक
महात्म्य	माहात्म्य	संसारिक	सांसारिक
अइये	आइये	समाजिक	सामाजिक
अकाश	आकाश	अहार	आहार

'इ' के स्थान पर 'ई' लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कालीदास	कालिदास	राशी	राशि
अती	अति	अतिथी	अतिथि
क्रान्ती	क्रान्ति	कवी	कवि
उन्नती	उन्नति	शान्ती	शान्ति
नीती	नीति	प्रीती	प्रीति
मुनी	मुनि	स्थिती	स्थिति
लिपी	लिपि	रात्री	रात्रि
भ्रान्ती	भ्रान्ति	पुष्टी	पुष्टि

'ई' के स्थान पर 'इ' लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
निरस	नीरस	निरिक्षण	निरीक्षण
स्त्रि	स्त्री	निरिह	निरीह
दिजिये	दीजिये	परिक्षा	परीक्षा
लिजिये	लीजिये	दिवाली	दीवाली
महिना	महीना	बिमारी	बीमारी
पिताम्बर	पीताम्बर	रितिकाल	रीतिकाल
श्रीमति	श्रीमती	दिक्षित	दीक्षित

'उ' के स्थान पर 'ऊ' लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
वस्तू	वस्तु	मधू	मधु
तरू	तरु	प्रभू	प्रभु
बिन्दू	बिन्दु	परन्तू	परन्तु
केतू	केतु	दूकान	दुकान
हेतू	हेतु	सूई	सुई

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

साधू	साधु	बन्धू	बन्धु
लघू	लघु	भानू	भानु
गुरू	गुरु	ममुर्षू	मुमूर्षु

'ऊ' के स्थान पर 'उ' लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
हिन्दु	हिन्दू	उपर	ऊपर
बधु	बधू	पुज्य	पूज्य
सिन्दुर	सिन्दूर	पुँजी	पूँजी
मालुम	मालूम	मुल्य	मूल्य
नुपुर	नूपुर	उँट	ऊँट
दुसरा	दूसरा	पुर्ति	पूर्ति
दुषित	दूषित	पुरक	पूरक

'ए' के स्थान पर 'ऐ' लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
वैश्या	वेश्या	ऐतिहासिक	ऐतिहासिक
वैद	वेद	फैल	फेल
ऐक	एक	बैमान	बेईमान
सैना	सेना	जैष्ठ	ज्येष्ठ

'ऐ' के स्थान पर 'ए' लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
एतिहासिक	ऐतिहासिक	सेनिक	सैनिक
मेला	मैला	चेन	चैन
वेश्य	वैश्य	पेंसठ	पैंसठ
पेसा	पैसा	बेर	बैर
नेतिक	नैतिक	बेशाख	बैशाख
वेसा	वैसा	एक्य	ऐक्य
जेसा	जैसा	वेद्य	वैद्य

'ओ' के स्थान पर 'औ' लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
औज	ओज	शौर	शोर
चौर	चोर	मौद	मोद
शौघ	शोध	शौक	शोक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

'औ' के स्थान पर 'ओ' लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
लोकिक	लौकिक	नोकर	नौकर
मोका	मौका	सोरभ	सौरभ
मोन	मौन	सोष्ठव	सौष्ठव
ओदार्य	औदार्य	भोतिक	भौतिक
ओपचारिक–	औपचारिक	ओषध	औपध
योवन	यौवन	ओरत	औरत

मात्रा के कम या अधिक या यथास्थान न होने वाली अशुद्धियाँ

'ई' की मात्रा का प्रयोग भूल जाना

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
खलहान	खलिहान	विलासता	विलासिता
विरहणी	विरहिणी	गायका	गायिका
योगनी	योगिनी	कठनाई	कठिनाई
नीलमा	नीलिमा	वाटका	वाटिका
जात	जाति	रात्र	रात्रि
कुमुदनी	कुमुदिनी	बालका	बालिका
प्रमोदनी	प्रमोदिनी	माचस	माचिस
रागनी	रागिनी	पुजारन	पुजारिन
धोबन	धोबिन	ललता	ललिता
महमा	महिमा	नागन	नागिन
नायका	नायिका	मालन	मालिन

'इ' की मात्रा का गलत स्थान पर प्रयोग होने से उत्पन्न अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कवियत्री	कवयित्री	रचयता	रचियता
राष्ट्रिय	राष्ट्रीय	एकत्रीत	एकत्रित

मात्रा के अधिक प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पहिनना	पहनना	धरम	धर्म
सामिग्री	सामग्री	किरषी	कृषि
वापिस	वापस	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी
मैहनत	मेहनत	परकाश	प्रकाश
पहिला	पहला	परवीन	प्रवीण
बहिन	बहन	मँहिगा	मँहगा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(ख) चन्द्रबिन्दु एवं अनुस्वार सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अनुस्वार के स्थान पर चन्द्रबिन्दु के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
गाँधी	गांधी	अँगूर	अंगूर
पँच	पंच	अँजली	अंजलि
मँच	मंच	ध्वँस	ध्वंस
कँगाल	कंगाल	वँश	वंश
अँगार	अंगार	हँस	हंस

चन्द्रबिन्दु के स्थान पर अनुस्वार के प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अंधेरा	अँधेरा	दांत	दाँत
आंधी	आँधी	ध्वनियां	ध्वनियाँ
ऊंट	ऊँट	फांस	फाँस
अंगीठा	अँगीठी	चंवर	चँवर
भंवरा	भँवरा	गूंज	गूँज
आँख	आँख	गंवार	गँवार
चांद	चाँद	कुंवर	कुँवर
मुंह	मुँह	सूंड	सूँड
अंगरेज	अँगरेज	ऊंचा	ऊँचा

(ग) व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ

'ण' को 'न' लिख जाने से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
वान	वाण	हरिन	हरिण
दर्पन	दर्पण	लक्षन	लक्षण
कर्न	कर्ण	रावन	रावण
मरन	मरण	वेनु	वेणु
रामायन	रामायण	चरन	चरण
स्वरन	स्वर्ण	पुरान	पुराण
गुन	गुण	आभूषन	आभूषण
पोषन	पोषण	कंकन	कंकण
शोसन	शोषण	प्रयान	प्रयाण
कन	कण	स्मरन	स्मरण
शरन	शरण	आक्रमन	आक्रमण

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

'व' के स्थान पर 'ब' लिख जाने से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
बाण	वाण	बिद्यार्थी	विद्यार्थी
ब्रत	व्रत	बादविवाद	वादविवाद
बर	वर	बसन	वसन
बिकार	विकार	बनस्पति	वनस्पति
बसुदेव	वसुदेव	बसंत	वसंत
बाताबरण	वातावरण	बिष	विष

'ब' के स्थान पर 'व' लिख जाने से होने वाली अशुद्धियां

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
विन्दु	बिन्दु	विजली	बिजली
वाजार	बाजार	वाल	बाल
वहादुर	बहादुर	विगुल	बिगुल
वहुत	बहुत	वाग	बाग

'य' के स्थान पर 'ज' लिख जाने से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
जोवन	यौवन	जोनि	योनि
जोधा	योद्धा	जात्रा	यात्रा
जिजमान	यजमान	जमराज	यमराज
जामिनी	यामिनी	जोग	योग
जुमना	यमुना	जादव	यादव
जश	यश	जोगिनी	योगिनी
जवन	यवन	जसोदा	यशोदा

'ष' के स्थान पर 'स' या 'श' लिख जाने से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
असाढ़	आषाढ़	भासा	भाषा
पोशण	पोषण	दुस्कर	दुष्कर
घोस	घोष	हितैसी	हितैषी
धनुस	धनुष	शीर्सक	शीर्षक
भास्य	भाष्य	शोशण	शोषण

'श' के स्थान पर 'स' लिख जाने से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
प्रकास	प्रकाश	सुद्ध	शुद्ध

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY 5666
Jangamawadi Math, Varanasi

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

यस	यश	सौधन	शोधन
सासन	शासन	सोचनीय	शोचनीय
विस्वास	विश्वास	सोक	शोक
हमेसा	हमेशा	खुस	खुश
कलस	कलश	संसोधन	संशोधन
सरन	शरण	सायद	शायद

'स' के स्थान पर 'श' लिख जाने से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
प्रशाद	प्रसाद	आशमान	आसमान
शारांस	सारांश	विकाश	विकास
किशान	किसान	शाबुन	साबुन

'ष्ठ' के स्थान पर 'ष्ट' लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
गरिष्ट	गरिष्ठ	घनिष्ट	घनिष्ठ
वरिष्ट	वरिष्ठ	गोष्टी	गोष्ठी
श्रेष्ट	श्रेष्ठ	विसष्ट	वसिष्ठ
पृष्ट	पृष्ठ	प्रतिष्टा	प्रतिष्ठा
ज्येष्ट	ज्येष्ठ	बलिष्ट	बलिष्ठ
कनिष्ट	कनिष्ठ	निष्टा	निष्ठा

'ष्ट' के स्थान पर 'ष्ठ' लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अभीष्ठ	अभीष्ट	भ्रष्ठ	भ्रष्ट
कष्ठ	कष्ट	आकृष्ठ	आकृष्ट
शिष्ठ	शिष्ट	प्रविष्ठ	प्रविष्ट
नष्ठ	नष्ट	उच्छिष्ठ	उच्छिष्ट
समाविष्ठ	समाविष्ट	इष्ठ	इष्ट

'क्ष' के स्थान पर 'छ' लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
छेपक	क्षेपक	लछमन	लक्ष्मण
छिप्र	क्षिप्र	विपछ	विपक्ष
छण	क्षण	कच्छ	कक्ष
छय	क्षय	यच्छ	यक्ष
छति	क्षति	दीच्छा	दीक्षा

LIBRARY

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

छमा	क्षमा	सिच्छा	शिक्षा
छत्रिय	क्षत्रिय	नछत्र	नक्षत्र
छेत्र	क्षेत्र	समच्छ	समक्ष
छितिज	क्षितिज	भिच्छा	भिक्षा
छीण	क्षीण	साच्छी	साक्षी
छीर	क्षीर	प्रतीच्छा	प्रतीक्षा

'छ' के स्थान पर 'क्ष' लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
क्षद्म	छद्म	मूर्क्षा	मूर्च्छा
क्षत्र	छत्र	इक्षा	इच्छा
म्लेक्ष	म्लेच्छ	क्षात्र	छात्र
क्षड़ी	छड़ी	क्षत्र	छत्र

महाप्राण के स्थान पर अल्पप्राण वर्ण लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पौदा	पौधा	भूक	भूख
काना	खाना	गर	घर
भाबी	भाभी	ठाट	ठाठ
ठटेरा	ठठेरा	जोंपड़ी	झोंपड़ी
घोका	धोखा	दूद	दूध
भीक	भीख	धन्दा	धन्धा

अपने ही वर्ग की दो महाप्राण ध्वनियां एक साथ लिख जाने की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अछ्छा	अच्छा	मखखी	मक्खी
भठ्ठा	भट्ठा	मखखन	मक्खन
बिठ्ठल	बिट्ठल	समृध्धि	समृद्धि
इकठ्ठा	इकट्ठा	उछ्छवास	उच्छ्वास

पंचमाक्षर (ङ,ञ,न,म,ण) के प्रयोग में त्रुटि से उत्पन्न अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
दन्ड	दंड (दण्ड)	रन्क	रंक (रङ्क)
पन्डित	पंडित (पण्डित)	घन्टा	घंटा (घण्टा)
प्रचन्ड	प्रचंड (प्रचण्ड)	खन्ड	खंड (खण्ड)
मन्डी	मंडी (मण्डी)	झन्डा	झंडा (झण्डा)
डन्डी	डंडी (डण्डी)	लन्का	लंका (लङ्का)

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ठन्ड	ठंड (ठण्ड)	पन्च	पंच (पञ्च)

व्यंजन-संयोग सम्बन्धी भूलों से उत्पन्न अशुद्धियाँ

द्ध (द्ध) से सम्बधित अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शु
अविरुध	अविरुद्ध	सिध्धि	सिरि
बुध	बुद्ध	समृध्धि	समृदि
वृध्ध	वृद्ध	उध्धव	उद्ध
युध्ध	युद्ध	क्रुध्ध	क्रु

द्व (द्व) से सम्बन्धित अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शु
द्वादश	द्वादश	द्वारिका	द्वारि
द्वार	द्वार	द्वेष	द्वे
द्वीप	द्वीप	दुगुणित	द्विगुणि
द्वापर	द्वापर	दुन्द	द्व
द्विज	द्विज	दुतीय	द्विती

'ह' में अन्य व्यंजन के संयोग से सम्बन्धित अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शु
चिन्ह	चिह्न	असह	असा
आल्हाद	अह्लाद	मध्यान्ह	मध्या
व्योहल	विह्वल	वहि	व
सघ्य	सह्य	आव्हान	आह्वा
जिव्हा	जिह्वा	बाह्य	बा

र तथा इसके रूपों (ॅ , ़ , ्र) से अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शु
करम	कर्म	दुदर्शा	दुर्द
आर्शीवाद	आशीर्वाद	शकर्रा	शर्क
नर्क	नरक	और्दाय	औदा
आर्दश	आदर्श	राष्ट्र	रा
वृज	ब्रज	उष्ट्र	उ
मयार्दा	मर्यादा	ड्राम	ड्र
निरदय	निर्दय	नर्म	न
निरदोर्ष	निर्दोष	परमाण	प्रमा
क्रिरोध	क्रोध	चकर्	च

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

'ऋ' से सम्बन्धित अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पृथक	प्रथक्	पृगट	प्रकट
क्रिपण	कृपण	जाग्रत	जागृत
म्रग	मृग	प्रक्रति	प्रकृति
रिण	ऋण	प्रथिवी	पृथ्वी
रितु	ऋतु	क्रप्या	कृपया
रिचा	ऋचा	ग्रहीत	गृहीत
रिता	ऋता	श्रिंगार	श्रृंगार
द्रश्य	दृश्य	श्रिंखला	श्रृंखला
द्रष्टि	दृष्टि	क्रिष्ण	कृष्ण
दृष्टा	द्रष्टा	वृज	ब्रज

व्यंजन द्वित्व सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अनावश्यक द्वित्व सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
रक्खा	रखा	चक्खा	चखा
प्रज्ज्वलित	प्रज्वलित	लिक्खा	लिखा

अपेक्षित द्वित्व के अभाव में अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
महत्व	महत्त्व	निमित	निमित्त
उतम	उत्तम	चित	चित्त
उलघन	उल्लंघन	उदंड	उद्दंड
सजन	सज्जन	उत्पति	उत्पत्ति
मृतिका	मृत्तिका	तत्व	तत्त्व

(घ) संधि सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अत्याधिक	अत्यधिक	जगबन्धु	जगत्बन्धु
अतैव	अतएव	छत्रछाया	छत्रच्छाया
निपेक्ष	निरपेक्ष	किंवदन्ती	किम्वदन्ती
निशेष	निश्शेष	अन्तर्साक्ष्य	अन्त:साक्ष्य
निराभिमान	निरभिमान	तदोपरान्त	तदुपरान्त
अतिउक्ति	अत्युक्ति	परमर्थ	परमार्थ
अद्याअपि	अद्यापि	दीर्घयु	दीर्घायु

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पयोपान	पय:पान	सुक्ति	सूक्ति
पुनरोत्थान	पुनरुत्थान	भनुदय	भानूद
यावत्जीवन	यावज्जीवन	शुभिच्छा	शुभेच्छ
वयवद्ध	वयोवृद्ध	मतेक्य	मतैक
वयोप्रांप्त	वय:प्राप्त	उपरोक्त	उपर्युक
सदोपदेश	सदुपदेश	स्वगत	स्वाग
सन्मान	सम्मान	रामेश	रमेश
सन्बन्ध	सम्बन्ध	मुनेश	मुनीश
सन्यास	संन्यास	देवर्षी	देवर्षि

(ङ) समास सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
भ्रातागण	भ्रातृगण	स्वामीभक्त	स्वामिभक्त
पिताभक्ति	पितृभक्ति	विद्यार्थिगण	विद्यार्थीगण
मंत्रीमंडल	मंत्रिमंडल	योगीराज	योगिराज
माताहीन	मातृहीन	यथाविधि	यथाविध
अष्टवक्र	अष्टावक्र	रामराज	रामराज
उन्नतशील	उन्नतिशील	दुरावस्था	दुरवस्थ
निरापराध	निरपराध	निशिशेष	निशाशेष
निलर्ज्जा	निर्लज्ज	सभापत्नी	सभानेत्री
पक्षीराज	पक्षिराज	प्रधानमंत्राणी	प्रधानमंत्री

(च) लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनाथिनी	अनाथा	सुलोचनी	सुलोचना
कोमलांगिनी	कोमलांगी	कृशांगिनी	कृशांगी
त्रिनयनी	त्रिनयना	यवनानी	यवनी
नारि	नारी	भुजंगिनी	भुजंगी
प्रेयसि	प्रेयसी	सुकेशिनी	सुकेशी
शताब्दि	शताब्दी	पंचालिका	पांचाली
मयूरनी	मयूरी	श्वेतांगिनी	श्वेतांगी

(छ) हलन्त सम्बन्धी अशुद्धियाँ

हलंत के अभाव से उत्पन्न अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
विद्वान	विद्वान्	शरद	शरद

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

विधिवत	विधिवत्	विराट	विराट्
श्रीमान	श्रीमान्	सत	सत्
अकस्मात	अकस्मात्	पश्चात	पश्चात्
भविष्यत	भविष्यत्	सम्राट	सम्राट्
प्रथक	प्रथक्	भगवत	भगवत्
जगत	जगत्	सम्वत	सम्वत्
मूल्यवान	मूल्यवान्	संवित	संवित्
शक्तिमान	शक्तिमान्	आत्मन	आत्मन्
श्रद्धावान	श्रद्धावान्	परिषद	परिषद्
हनुमान	हनुमान्	महान	महान्

(ज) विसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अधोपतन	अध:पतन	दुसाध्य	दुस्साध्य
अधगति	अधोगति	निरावलम्ब	निरालम्ब
बहिर्साक्ष्य	बहि:साक्ष्य	निरोग	नीरोग
अन्तर्रात्मा	अन्तरात्मा	पुनरोद्धार	पुनरुद्धार
अन्तर्कथा	अन्त:कथा	यशगान	यशोगान
दुरोपयोग	दुरुपयोग	मन:योग	मनोयोग
शिरोपीड़ा	शिर:पीड़ा	सद्योजात	सद्य:जात

(झ) अन्य प्रकार की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
ग्यान	ज्ञान	अन्तर्राष्ट्रीय	अन्तर-राष्ट्रीय
त्राण	त्राण	आवश्यकीय	आवश्यक
अत्रि	अत्रि	पड़ोसन	पड़ोसिन
सर्वग्य	सर्वज्ञ	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी
कृतग्य	कृतज्ञ	मँहगी	मँहगाई
ज्योत्सना	ज्योत्स्ना	एकत्रित	एकत्र
उज्जवल	उज्ज्वल	कर्तव्यपालन	कर्त्तव्य-पालन
गोप्यनीय	गोपनीय	व्यवसायिक	व्यावसायिक
अन्तर्ध्यान	अन्तर्धान	शान्तमय	शान्तिमय
ईर्षा	ईर्ष्या	सदृश्य	सदृश
अश्रृंखल	उच्छृंखल	सप्ताहिक	साप्ताहिक
तिरष्कार	तिरस्कार	साहित्यक	साहित्यिक
मूर्धन्य	मूर्द्धन्य	सौजन्यता	सौजन्य

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

केवलमात्र	केवल या मात्र
अधिकांश भाग	अधिकांश या अधिकतर भाग
गुप्त रहस्य	गुप्त या रहस्य
तब इसके बाद	तब या इसके बाद
तब फिर	तब या फिर
लेकिन फिर भी	लेकिन या फिर भी
सायं के समय	सायंकाल
सानन्दपूर्वक	सानन्द
सपरिवार सहित	परिवार सहित
अध्यव्यसाय	अध्यवसाय

स्वस्थ्य	स्वस
स्वास्थ	स्वास्थ
श्राप	श
स्मसान	श्मश
वांगमय	वाङ्
अर्ध	अ
उदभ्रत	उद्
कैलाश	कैल
उपलक्ष	उपल
आर्द, आद्र	अ

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

मुहावरा एक अरबी भाषा का शब्द है। इसका वास्तविक रूप 'महावरा' है, जिसका अर्थ होता है किसी कार्य को बार-बार करना। हिन्दी भाषा ने अरबी के 'महाबरा' शब्द को अपनी प्रकृति के अनुसार परिवर्तित करके 'मुहावरा' शब्द बना लिया। किसी कार्य को बार-बार करने से कुशलता आती है, जिसका परिणाम सामान्यत: चमत्कारपूर्ण होता है। जो वाक्यांश हमारे दैनिक प्रयोग में आते-आते अपना सामान्य अर्थ त्याग कर असामान्य अर्थ के द्योतक बन गये हैं , वे मुहावरे कहलाते हैं।

लोकोक्तियों का तो सारे संसार से सम्बन्ध है। लोगों के जीवन के अनुभव के बल पर ही लोकोक्तियाँ बनती हैं। इतिहास, राजनीति, समाज, धर्म, घर-परिवार आदि से लोकोक्तियों का निकटतम सम्बन्ध है1 यही लोकोक्तियों का परिवेश है। लोकोक्तियों में युग की साधना निहित रहती है, जो परम्परा से आने वाली पीढ़ियों में जीवित रहती है। इसलिए लोकोक्ति जीवित एवं परम्परागत संसार का भार उठाती चलती है1 इसमें ऐतिहासिक घटनाएँ भी परिबद्ध हो जाती हैं।

मुहावरे और लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा की अभिव्यक्ति में सौन्दर्य निखर आता है। हास्य एवं व्यंग्य का वातावरण पाठकों में ताजगी लाता है। गम्भीर विषयों में प्रयुक्त मुहावरे -लोकोक्तियाँ उस विषय की गरिमा को बढ़ी देते हैं।

मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भाषा एवं लोक जीवन में समान महत्व हैं। दोनों के जन्म, आकार ग्रहण एवं प्रचलन में समानता है। इतना होने पर भी मुहावरों और लोकोक्तियों के व्यक्तित्व सर्वथा भिन्न हैं। दोनों की आकृति एवं प्रकृति में पर्याप्त अन्तर है। मुहावरों एवं लोकोक्ति का अन्तर निम्न बिन्दुओं पर निर्धारित किया जा सकता है:

(1) मुहावरों का वाक्यांश होना अनिवार्य है, पर लोकोक्ति का वाक्यांश होना अनिवार्य नहीं। लोकोक्ति वाक्य अथवा .उपवाक्य भी हो सकती है।

(2) अधिकांश मुहावरों के अन्त में धातु जुड़ी रहती है, लोकोक्ति के अन्त में धातु कभी नहीं रहती।

(3) मुहावरों का प्रयोग केवल वाक्य रचना में होता है, जबकि लोकोक्तियाँ वाक्य-रचना के साथ-साथ स्वतंत्र रूप से भी व्यवहार में आती हैं।

(4) मुहावरे में भाव की पूर्णता नहीं रहती, जबकि लोकोक्ति अपने मूल रूप को सदैव सुरक्षित रखती है। जैसे 'डकार जाना' अथवा 'डकारना' मुहावरे के व्यवहार में निम्नलिखित अनेक रूप हो सकते हैं:

(क) डकार गया (ख) डकार जाता है (ग) डकार जायेगा (घ) डकार तक नहीं लेगा (ङ) डकार सकता है।

पर लोकोक्तियों में रूप का परिवर्तग नहीं होता। 'अधजल गगरी छलकत जाय' का रूप इसी प्रकार रहेगा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

यहां मुहावरे और लोकोक्तियों के कतिपय प्रयोग दिये जा रहे हैं। भाषा के प्रयोग के प्रति सचेत अध्ययनशील विद्यार्थी इनके अध्ययन से अपनी भाषा में सौष्ठव ला सकते हैं तथा भाषा को प्रभावपूर्ण बना सकते हैं।

मुहावरे

1. **अपने पैरों पर खड़ा होना (किसी के आश्रित न रहना)** देखो अब तुम्हारे पिताजी नहीं रहे, तुम्हें अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए।

2. **अड्डा जमाना (दृढ़ता से रहना)** रमेश, पंकज के यहाँ अतिथि बनकर आया था किन्तु उसने तो अड्डा ही जमा लिया।

3. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना (स्वयं अपनी प्रशंसा करना)** हम तुम्हारी वास्तविकता जानते हैं, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू क्यों बनते हो भाई।

4. **अंधे की लकड़ी (एक मात्र सहारा)** उस विधवा का जवान बेटा मर गया, बेचारी की अंधे की लाठी भी छिन गयी।

5. **अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना (स्वयं अपनी हानि पहुँचाना)** तुमने रेस में अपना वेतन लगाकर अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मार ली।

6. **आँखों में धूल झोंकना (धोखा देना)** नकलची छात्र निरीक्षकों की आँखों में धूल झोंककर परीक्षा में नकल करते हैं।

7. **आँख लगना (नींद आना)** औषधि लेते ही रोगी की आँखें लग गयीं।

8. **आँखों का तारा होना (बहुत प्रिय)** बच्चे अपने माँ-बाप की आँखों का तारा होते हैं।

9. **आपे से बाहर होना (क्रोधित होना)** मैंने अपने रुपये माँगे तो वह आपे से बाहर ही हो गया।

10. **आसमान से बातें करना (इतराना)** उसे नौकरी क्या मिल गयी, आजकल तो वह आसमान से बातें करता है।

11. **कलेजे पर साँप लोटना (डाह से जलना)** विदेशी जब भारत की प्रशंसा करते हैं तो पाकिस्तान के कलेजे पर साँप लोटने लगता है।

12. **खून उबलना (क्रोध करना)** वह इतना धूर्त है कि उसे देखकर मेरा खून उबलने लगता है।

13. **गर्दन पर छुरी फेरना (अत्याचार करना)** उसने मेरी झूठी शिकायत कर कॉलेज से निकलवा दिया। मित्र होकर उसने मेरी गर्दन पर छुरी फेरी।

14. **गड़े मुर्दे उखाड़ना (पुरानी बातें दुहराना)** जब मैं अपनी गलती मान चुका हूँ तब पुरानी घटना दुहरा कर गड़े मुर्दे क्यों उखाड़ते हो?

15. **घड़ों पानी पड़ना (अत्यन्त लज्जित होना)**

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

जब नेताजी घूस लेते पकड़े गये तो बेचारों पर घड़ों पानी पड़ गया।

16. **चेहरे की हवाइयाँ उड़ना (परेशान होना)** स्टेशन पर जब उसका सूटकेस उठ गया तो उसके चेहरे की हवाइयाँ उड़ने लगीं।

17. **चुल्लू भर पानी में डूब मरना (बहुत लज्जित होना)** हर्षत मेहता के यह कहने पर कि उसने प्रधानमंत्री को एक करोड़ रुपये दिये; श्रीमान को चुल्लू भर पानी में डूब मरने की जगह न बची।

18. **छक्के छुड़ाना (बुरी तरह से हराना)** इस बार के क्रिकेट मैच में भारत की टीम ने पाकिस्तान की टीम के छक्के छुड़ा दिये।

19. **छाती पर मूँग दलना (दिल दुखाना)** पुत्र के व्यवहार को देख कर पिता ने कहा कि मेरी छाती पर मूँग मत दलो।

20. **छप्पर फाड़कर देना (विना परिश्रम प्राप्त होना)** दलबदलुओं को तो भगवान छप्पर फाड़ कर देता है।

21. **जान हथेली पर रखना (मृत्यु की चिन्ता न करना)** गोताखोर जान हथेली पर रखकर समुद्र से मोती निकलते हैं।

22. **जीती मक्खी निगलना (सरासर बेइमानी)** जस्टिस रामस्वामी का पक्ष लेकर काँग्रेस को जीती मक्खी निगलनी पड़ी।

23. **टेढ़ी खीर (कठिन काम)** तुम्हारा पी.यू.सी. पास होना टेढ़ी खीर प्रमाणित होगा।

24. **तीन तेरह होना (इधर उधर फैलना)** बाढ़ के बाद उसका परिवार तीन-तेरह हो गया।

25. **तूती बोलना (आतंक होना)** आजकल नगर में गुण्डों की तूती बोलती है।

26. **दाँतो तल उंगली दबाना (आश्चर्य करना)** उस बेहद कमजोर विद्यार्थी के पास हो जाने पर अध्यापक ने दाँतों तले उँगली दबाई।

27. **दाल न गलना (वश न चलना)** सोनिया के सामने चंडाल चौकड़ी की दाल नहीं गलती।

28. **दूध की मक्खी (अनावश्यक वस्तु)** यदि तुम ढँग से काग नहीं करोगे तो इस दफ्तर से दूध की मक्खी की, तरह निकाल फेंके जाओगे।

29. **नाकों चने चबाना (बहुत परेशान करना)** बच्चे ने अपनी माँ को नाकों चने चबवा दिये।

30. **पाँव उखड़ना (भाग जाना)** कुत्तों के भौंकते ही चोरों के पाँव उखड़ गये।

31. **पेट में चूहे कूदना (बहुत भूख लगना)** स्कूल से लौटकर बच्चे ने कहा कि माँ, पेट मे चूहे कूद रहे हैं; जल्दी खाना दो।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

32. पैरों तले से जमीन खिसकना (घबरा जाना) जब उस आदमी का बैंक से लौटते हुए थैला खो गया तो उसके पैरों तले से जमीन खिसक गयी।

33. बाल बाँका न होना (कुछ भी हानि न होना) प्रधान मंत्री ने कहा कि जब तक मुझे बहुमत प्राप्त है, विरोधी, मेरा बाल भी बाँका नहीं कर सकते।

34. मुँह काला करना (कलंक लगना) सिर्फ सौ रुपये घूस लेकर उसने मुँह काला करा लिया।

35. मुँह में पानी भर आना (इच्छा जागना) तली हुई मछली देखकर उनके मुँह में पानी भर आता है।

36. रोड़े अटकाना (विघ्न डालना) मेरे मार्ग में तुम कितने ही रोड़े अटकाओ, मैं अपना संकल्प पूरा करके ही रहूँगा।

37. रंग में भंग पड़ना (आनन्द में खलल पड़ना) अच्छी खासी पिकनिक मना रहे थे कि कुमार को साँप के काट लेने से रंग में भंग पड़ गयी।

38. लकीर का फकीर होना (अंधविश्वासी होना) बच्चे को अच्छे डॉक्टर को दिखाओं; माँ-बाप के कहने में आकर जादू टोना कराकर लकीर के फकीर मत बनो।

39. हवा से बातें करना (बहुत वेग से चलना) चनम्मा का घोड़ा थोड़ी ही देर में हवा से बातें करने लगा।

40. हाथ खींचना (सहयोग न देना) काम शुरू कराकर हाथ खींच लेना अच्छी बात नहीं है।

41. अक्ल का दुश्मन (मूर्ख व्यक्ति)।

42. अपना राग आलापना (अपने बारे ही में बातें करना)।

43. आँखें चुराना (सामने न आना)।

44, आग में घी डालना (क्रोध भड़काना)।

45. आस्तीन का साँप होना (छिपा हुआ शत्रु)।

46. ईद का चाँद होना (बहुत दिनों बाद दिखना)।

47. ईंट से ईंट बजाना (नष्ट-भ्रष्ट कर देना)।

48. उंगली पर नचाना (वश में करना)।

49 ओखली में सिर देना (जानबूझकर विपत्ति में पड़ना)।

50. कफन सिर पर बाँधना (मरने को तैयार रहना)।

51. कटे पर नमक छिड़कना (दुखी व्यक्ति को और दुखी करना)।

52. कमर टूटना (बहुत हानि होना)।

53. कान का कच्चा होना (बिना सोचे-समझे विश्वास कर लेना)।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

54. गागर में सागर भरना (थोड़े शब्दों में बहुत कह देना)।

55. गिरगिट की तरह रंग बदलना (सिद्धान्तहीन होना)।

56. गुड़ गोबर करना (बात बिगाड़ देना)।

57. घड़ों पानी पड़ना (बहुत लज्जित होना)।

58. घी के दीए जलाना (बहुत प्रसन्न होना)।

59. घाट-घाट का पानी पीना (अनेक स्थानों का अनुभव होना)।

60. घोड़े बेचकर सोना (गहरी नींद सोना)।

61. छठी का दूध याद आना (कठिनाई का अनुभव होना)।

62. छाती पर साँप लोटना (ईर्ष्या करना)।

63. छोटा मुँह बड़ी बात होना (अपनी सीमा से बढ़कर बोलना)।

64. टका-सा जवाब देना (साफ इंकार करना)।

65. तारे गिनना (व्यग्रता से प्रतीक्षा करना)।

66. दाँत कटी रोटी होना (पंक्की दोस्ती होना)।

67. नाक रख लेना (इज्जत बनाये रखना)।

68. पानी-पानी होना (अत्यंत लज्जित होना)।

69. फूँक-फूँक कर कदम रखना (बड़ी सावधानी से काम करना)

70. बहती गंगा में हाथ धोना (अवसर का लाभ उठाना)।

71. मुँह की खाना (सबके सामने पराजित होना)।

72. मुट्ठी गर्म करना (रिश्वत लेना)।

73. राई का पर्वत बनाना (बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहना)।

74. सिर से पानी गुजरना (सहनशीलता की सीमा टूटना)।

75. सोने में सुहागा होना (अच्छी चीज का और अच्छा होना)

76. हाथ मलना (पश्चाताप् करना)।

77. हथियार डालना (पराजय स्वीकार करना)।

78. हथेली पर सरसों उगाना (असंभव काम का संभव करना)।

79. हाथ धोकर पीछे पड़ना (किसी को परेशान करने के लिए हमेशा तैयार रहना)।

80. होश उडना (डर जाना)।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लोकोक्तियाँ

1. **एक पंथ दो काज** (एक ही साधन से दो काम)

चलो बाग की सैर करें और आम भी खरीद लायें, इस प्रकार एक पंथ दो काज होंगे।

2. **एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है** (एक बुरे व्यक्ति से सारा समाज बदनाम होता है)

कुमुद एक बुरा लड़का था जिसके कारण कॉलेज के सम्मान का धक्का लगा। ठीक ही है एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।

3. **काला अक्षर भैंस बराबर** (बिल्कुल निरक्षर)।

चपरासी हस्ताक्षर के स्थान पर अँगूठा लगाता है। उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर है।

4. **दीया तले अंधेरा** (योग्य के निकट अयोग्य)।

हिन्दी प्राध्यापक की पुत्री हिन्दी में फेल हो गयी; इसी को कहते हैं दीया तल अँधेरा।

5. **देख ऊँट किस करवट बैठता है** (अंतिम परिणाम देखना)।

बोफोर्स का रहस्य खुल जाने का शोर हैं; देखें ऊँट किस करवट बैठता है।

6. **नाच न जाने आँगन टेढ़ा** (दूसरों को दोष देना)।

विद्यार्थी ध्यान लगाकर तो पढ़ते नहीं; दोष निकालते हैं- शिक्षा नीति का। ठीक है नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

7. **अंधे के हाथ बटेर लगना** (अयोग्य को इच्छित वस्तु मिलना)।

रात को पढ़े हुए प्रश्न परीक्षा में आ गये इस कारण वेंकटेश उत्तीर्ण हो गया। उसी को कहते है - अंधें के हाथ बटेर लगना।

8. **अंधों में काना राजा** (मूर्खों के बीच कम अयोग्य का मान)।

यों तो विदेश के सम्बन्ध में गाँव में किसी को भी कुछ पता नहीं था, पोस्ट मैन ने कुछ सुन रखा था, उसी के बल पर वह उछलता था। उसी को कहते हैं अंधों में काना राजा।

9. **कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली** (महान् अन्तर) अरे किससे मुकाबला कर रहे हो उसका? कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली।

10. **घर की मुर्गी दाल बराबर** (अपनी वस्तु का मूल्य नहीं होता)।

लेखक को जब उसकी रचना पर शिखर सम्मान मिल तो कस्बे के लोग चौंके। उनके लिए तो वह घर की मुर्गी दाल बराबर थी।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

11. घर का भेदी लंका ढाये (आपसी फूट बुरी होती है)

12. चार दिन की चाँदनी, फिर अँधेरी रात (क्षणिक सुख)

13. चोर की दाढ़ी में तिनका (अपराधी की हरकत से पता लगना)

14. छोटे मुँह बड़ी बात (योग्यता के बाहर बहकना)

15. मन चंगा तो कठौती में गंगा (शुद्ध हृदय वालों को तीर्थ जाने की क्या आवश्यकता है)

16. जिसकी लाठी उसकी भैंस (बलवान ही का अधिकार)

17. डूबते को तिनके का सहारा (दुखी व्यक्ति को थोड़ा-सा सहारा भी बहुत होता है)

18. न रहे बाँस न बजे बाँसुरी (दुःख को समूल नष्ट करना)

19. पाँचों उँगली घी में (सब प्रकार से लाभ)

20. मान न मान मैं तेरा मेहमान (जबरदस्ती सिर पड़ना)

21. मुँह में राम बगल में छुरी (कपट व्यवहार)

22. सिर मुँडाते ही ओले पड़े (प्रारम्भ ही में कठिनाई)

23. हाथ कंगन को आरसी क्या (प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण क्यों)

24. हाथी के दाँत, खाने के और दिखाने के और (दिखावटीपन)

25. होनहार बिरवान के होत चीकने पात (योग्यता शुरू ही में दीख जाती है)

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

व्यावहारिक व्याकरण (Applied Grammar)

अभ्यास

1. **नीचे लिखे शब्दों से भाव-वाचक संज्ञाएँ बनाओः-**

खोजना =	खोज	रगड़ना
रोना		सुनना
मिलना		कमाना
घटना		मूर्ख
बोलना		लघु
चढ़ना		सावधान
करना		नेक
चलना		सुस्त
पहुँचना		चतुर
घेरना		अपना
उतरना		खट्टा
फिसलना		मलिन
सूजना		जटिल
बनना		फकीर

2. **निम्नलिखित शब्दों के सामने कोष्ठक में उसकी भाववाचक संज्ञाएँ लिखिए—**

(क)	कठिन	(　　)	(च)	ईश्वर	(　　)
(ख)	उदार	(　　)	(छ)	प्रभु	(　　)
(ग)	चोर	(　　)	(ज)	पुरुष	(　　)
(घ)	बच्चा	(　　)	(झ)	गुरु	(　　)
(ङ)	बूढ़ा	(　　)	(ञ)	स्वामी	(　　)

3. **निम्नलिखित शब्दों के लिंग निर्धारित कीजिए :-**

यात्रा, सिपाही, सन्तान, हवा, नींद, लहर, दिन, गोद, आरती, चश्मा, सन्दूक, आत्मा , काया, पंछी, पपही, तलवार, चम्मच, दही, समीर, जनता, दुनिया, प्रदेश, तलाश, पनघट, पत्थर, जमीन, जिज्ञासा, गुफा , निवास, नाखून, देशाटन, छलाँग, क्षमा, क्रीड़ा, आफत, संगठन, प्रतिबन्ध, अनुशासन, गाड़ी, आज्ञा, आशिष, उम्र, श्वास, वसन्त, वर्जन, इज्जत, अदालत, प्रभाव, दौरा, मारपीट, छेद, लालसा, शनि, थैला, हुल्लड़, सजावट, सड़क, विवाद, विष, नीलम, परिहास, पहचान, नीड़, पंखा, बूँद, नमक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

4. **निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तित कीजिए:-**

नर्तक, ग्वाला, मक्खी, याचक, चील, युवा, वर, विद्वान, शूद्र, पंडित, चूहा, सुनारिन, देवरानी, ठकुराइन, बन्दर, सम्राट्, विधुर, इन्द्र, बाल, कवयित्री।

5. **निम्नलिखित पुल्लिग शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए:**

नौकर, बन्दर, चूहा, धोबी, मोर, सदस्य, लेखक, कवि, माली, विद्वान, डाक्टर, नर, देव, गायक, मुर्गा, ठाकुर, जुलाहा, लाला, बैल, मर्द, भैंसा, रँडुआ।

6. **निम्नलिखित स्त्रीलिंग शब्दों के पुल्लिग रूप लिखिए :**

गाय, साँडनी, चमारिन, चिड़िया, महिला, गुड़िया, दुलहन, महोदया, शिक्षिका, छात्रा, वधू, ठकुराइन, सुनारिन।

7. **निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए :**

पिता, हाथी, कथा, साधु, लता, उल्लू, कामना, तिथि, नारी, स्त्री, कुआँ, प्राण, आँसू, अक्षत, लोग , दर्शन, पाठक, नीति, आदत, दयालु, पहिया, ध्वनि, चिड़िया, पुजारी, अत्याचार, समाचार, मकान, प्याला, हस्ताक्षर, कलम, डाली, हीरा, दीपक, धूप, प्रभु, पूजा।

8. **निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूपों को वाक्यों में प्रयुक्त करें :**

रानी,धोबी, आँसू, शत्रु, विद्यार्थी, गौ, युवा, कथा, जाति, माला, महिला, कमरा, चिड़िया, परछाई।

9. **निम्नलिखित वाक्यों में बहुवचन के गलत प्रयोगों को पहचानिए और उन्हें सही रूप में लिखिए :–**

(क) भारत में कई पवित्र नादियाँ हैं।

(ख) उन स्त्री ने खाना खा लिया।

(ग) महिलाओं लड़ रही हैं।

(घ) उन कमरे में बिजली नहीं है।

(ड) भरत की रुचिएँ फिल्म देखना है।

(च) डाकुओं की आतंक है।

(छ) लताओं फैल गयी हैं।

(ज) लड़के चाकू चलाता है।

(झ) घोड़ाओं मैदान में चर रहे हैं।

10. **निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया रूप को शुद्ध मानते हुए सही सर्वनाम का प्रयोग कीजिए :**

(क) आप सब कुछ भूल चुका हूँ

(ख) क्या आप दूध लाए हो?

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(ग) क्या तुम पत्र लिख चुके हैं?

(घ) तू आज मेरे साथ घर चलो।

(ङ) तू परीक्षा दे चुके हैं।

(च) कुछ बाहर आये हैं, उसे अन्दर बैठाओ।

(ज) तुम्हारे से कोई काम नहीं हो सकता।

(झ) हम हमारे घर जा रहे हैं।

(त्र) दूध में कोई पड़ गया है।

11. **निम्नलिखित शब्दों के विशेषण रूप लिखिए:**

भारत, दिन, पूजा, रक्षा, अपमान, पाप, नगर, धर्म, चमक, बाजार, स्वर्ग, बल, ग्राम, माया, रक्त, लोभ, सिन्धु, तेल, मिट्टी।

12. **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप लिखिए:**

खाना, लिखना, सोना, देखना, धोना, सुनना, गाना, भरना, खरीदना।

13. **निम्नलिखित वाक्यों को भूतकाल में लिखिए:**

(क) बालक अन्दर सोता है।

(ख) वह जोर से हँसेगा।

(ग) राकेश पी.यू.सी. में पढ़ता है।

(घ) विनोद बाग में घूम रहा है।

(च) माता जी खाना बना चुकेंगी।

(च) अदिति बाजार जाएगी।

(छ) उत्सा तो गाती रहेगी।

14. **निम्नलिखित वाक्यों में वाच्य परिवर्तन कीजिए :**

(क) कई कवियों ने सुन्दर कविताएँ लिखी थीं।

(ख) अब चलें।

(ग) मुझसे तो उस गर्मी मे सोया नहीं जायेगा।

(घ) मनोज परिषद में गीत सुनायेगा।

(ङ) वासवी नहीं चलती।

(च) शीला पुस्तक पढ़ती है।

(छ) रामन्ना नहीं खेलेगा।

(ज) सुरेश पतंग उड़ा रहा है।

(झ) रेखा नहीं गाती।

(त्र) दिव्य मैदान में खेल रहा है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

15. **निम्नांकित को सूचनानुसार बदलिए :**

(क) बच्चा सो गया । (माँ ने बच्चे को सुला दिया)।

(ख) लड़कियाँ सुनायेंगी (ये कहानियाँ)

(ग) हमें बहुत देर हुई। (रिक्शेवाला)

(घ) सामान अब पहुँचना चाहिए (रमेश)

(ङ) छात्र पढ़ रहे हैं। (अध्यापक)

16. **निम्नांकित वाक्यों को उचित रूप से जोड़िए:**

(क) मैं कॉलेज जाता हूँ।
रास्ते में मैं गाड़ी लेता हूँ।

(ख) आप बहुत दुखी हैं।
मैं जानता हूँ।

(ग) पक्षी आकाश में उड़ रहा है।
पक्षी कितना सुन्दर है।

(घ) संदीप यहाँ आया।
संदीप काम करने लगा।

(ङ) बैठक समाप्त हुई।
सब लोग चले गये।

17. **निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति अव्यय शब्दों से कीजिए:**

(क) .... बोलो, कोई सुन लेगा।

(ख) वह .... देख रहा था।

(ग) मैं घटना के .... वहीं था।

(घ) हमने तो बहुत कहा .... वह चलने को तैयार न हुआ।

(ङ) कॉलेज मेरे घर .... है।

(च) धन .... कोई नहीं पूछता।

(छ) पुलिस डाकू .... लगी है।

(ज) .... ! दिनेश ने क्या छक्का मारा है!

(झ) बहन .... भाई विद्यालय जाते हैं।

18. **शायद ही, तक, दिनभर, ऊपर का, पूर्णतः, हफ्ते भर, की ओर, का उचित प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कीजिए:**

(क) मैं उसकी बात से .... सहमत हूँ।

(ख) वह आज .... यहाँ आये।

(ग) मकान का .... कमरा गंदा है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(घ) रमा कल देर रात .... जागी।

(ङ) कुमार मैसूर से .... बाद वापिस आया।

(च) चेतन महात्मा गाँधी रोड .... रहता है।

(ठ) मैं .... दफ्तर में काम करता हूँ।

19. **निम्नलिखित शब्दों को यथा स्थान भरें- बिल्कुल, जरा, अकस्मात्, आ ध्यानपूर्वक, तड़ातड़ :**

(क) खींचने से पतंग .... जाती है।

(ख) मैं यह बात .... भूल गया।

(ग) उसके लड़के को .... मार दिया।

(घ) आप .... गौर से देखिए।

(ङ) ऋचा .... पढ़ती है।

(च) कल उसके भाई .... आ गये।

20. **सम्बन्ध बोधक अव्यय शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:**

(क) द्रोपदी .... किसी ने नहीं सहा होगा।

(ख) गंगा नदी हरिद्वार .... बहती है।

(ग) उन्हें अंत .... प्रयास करना चाहिए।

(घ) तुम्हारे .... यह काम आसान है।

(ङ) धन .... मनुष्य सुखी बनता है।

(च) तुम मुझसे .... 'नहीं जा सकते।

(छ) वह रास्ते .... दौड़ाए गया।

(ज) घर से .... मत जाओ।

(झ) धन की .... धर्म श्रेष्ठ है।

21. **समुच्चय बोधक अव्यय शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:**

(क) परिश्रम करो .... फेल हो जाओगे।

(ख) तुमने पानी पिया .... नहीं?

(ग) केशव आया .... वेंकट नहीं आया।

(घ) विपत्ति में उसने मेरी मदद की, ... वह सच्चा मित्र है।

(ङ) राम वन गये .... वहाँ उन्होंने राक्षसों को मारा।

22. **निम्नलिखित वाक्यों को विस्मयादिबोधक शब्दों से पूरा कीजिए:**

(क) .....! कैसा अच्छा गाना है।

(ख) .....! हम जीत गये।

(ग) .....! यह क्या हो गया।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(घ) ....! सविता चल बसी।

(ङ) ....! हम ऐसा काम नहीं करते।

23. **निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग कीजिए:**
पर्वतीय, पढ़ाकू, बलवान, बिहारी, कीमती, कृपालु, भूखा, पुजारी, मानवता, समझदार, दार्शनिक।

24. **निम्नलिखित शब्दों से उपसर्गों को अलग कीजिए:**
बदनसीब, अनुकूल, उपकार, निरपराध, प्रख्यात, संकल्प, दुराचारी, सद्गति, प्रतिकूलता, निस्तेज, लाचारी, अध्यक्षता।

25. **निम्नलिखित उपसर्गों के प्रयोग से दो-दो शब्द बनाइए:**
अति, दूर, बद, गैर, परि, परा, नि, अधि।

26. **निम्नलिखित शब्दों में कोई एक उपसर्ग जोड़ कर नये शब्द बनाइए:**
जीवन, दिल, जन्म, विचार, रूप, पति, आदर, यश, नाथ, शासन, फल, रस, आग्रह।

27. **निम्नलिखित प्रत्ययों के योग से दो-दो शब्द बनाइए:**
आलु, पन, आन, या, त्व।

28. **निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक (विलोम) शब्द लिखिए:**
परतंत्र, उत्तीर्ण, कपटी, शिष्ट, उपयोगी, सुबोध, अनुराग, कृतज्ञ, निंदा, नूतन, प्रत्यक्ष, प्राचीन, विकास, यश, पैर, स्वार्थ, दुर्लभ, सार्थक, सौभाग्य, स्वागत, दूरदर्शी, पक्ष, दिन।

29. **निम्नांकित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची (समानार्थक) शब्द लिखिए:**
स्त्री, कमल, मित्र, भूमि, शरीर, धन, किनारा, सुन्दर, वसन्त, उन्नति, अपमान, साँप, पेड़।

30. **निम्नलिखित शब्द समूहों को एक-एक शब्द से व्यक्त कीजिए:**

(क) मन से सम्बन्ध रखने वाला।

(ख) जिसकी गहराई न नापी जा सके।

(ग) संदेश ले जाने वाला।

(ङ) नष्ट हो जाने वाला।

(च) बिना मूल्य के प्राप्त होने वाला।

(छ) जिसके मन में दया न हो।

(ज) जो उपकार न माने।

(झ) जिस स्त्री का पति जीवित हो।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(झ) जिसका कोई भी न हो।

31. **निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त करके इनके दो-दो अर्थ स्पष्ट कीजिए:**

अंक, कर, उत्तर, काम, सोना, पय, मत, हार, हल, धातु, कक्षा ।

32. **निम्नलिखित शब्द-युग्मों के अर्थ का अन्तर दो-दो वाक्य बनाकर स्पष्ट कीजिए :**

आधी-आँधी, आदि-आदी, अवधि-अवधी, उधार- उद्धार, एकांकी-एकाकी, शोक-शौक, समान-सामान, कर्म-क्रम, परिणाम-परिमाण, हँस-हंस, असमान- आसमान, गृह-ग्रह, उपेक्षा- अपेक्षा, सुखी- सूखी, सुना-सूना ।

33. **निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों को उपयुक्त मुहावरों से पूर्ण कीजिए:**

(क) डरते क्यों हो, मेरे साथ रहो तुम्हारा .... न होगा।

(ख) विवेक को जब पुरस्कार मिला तो वह .... समाया।

(ग) अधिकारी की .... होते ही तुरन्त काम हो गया।

(घ) मेरे मित्र को उसका साथी .... नहीं भाता।

(ङ) झूठ बोलने के कारण सबके सामने उसकी .... गयी।

34. **निम्नलिखित मुहावरों को वाक्यों में इस प्रकार प्रयुक्त कीजिए कि उनके अर्थ स्पष्ट हो जायें:**

मिट्टी में मिलाना, हक्का-बक्का रहना, जमीन आसमान एक करना, अंधे की लाठी होना, मुँह लगाना ।

35. **निम्नलिखित सरल कथनों के लिए उनके अंत में दिये मुहावरों से उपयुक्त मुहावरे चुनिए:**

(क) इतना बढ़ा-चढ़ा कर क्यों सुना रहे हो?

(ख) मूर्ख पुत्र ने पिता का सारा सम्मान नष्ट कर दिया।

(ग) यह तो अति सरल कार्य है।

(घ) जीवन की परवाह न करके वह लड़ा।

(ङ) नदी पर पुल बनाने की योजना अभी तक यों ही पड़ी है।

चींटी की चाल, जान हथेली पर रखना, नानी याद आना, बाएँ हाथ का खेल, फूट-फूट कर रोना, खटाई में पड़ना, नमक मिर्च लगाना, मिट्टी में मिलना।

36. **कारक विभक्ति (चिह्न) लगाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:**

(क) आज मनुष्य जाति एक ऐसे चौराहे ..... खड़ी है जहाँ ..... वह चाहे तो उस मार्ग ..... चुन सकती है जो विज्ञान और अध्यात्म ..... समन्वय बनने वाली दुनिया ...... ओर ले जाता है और चाहे तो वह ऐसे रास्ते ...... जा सकती है जहाँ संपूर्ण मानव अपने .... ही टकरा कर चकनाचूर हो जाएगा। हमें कौन सा रास्ता चुनना है, यह

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सोचने....हम जितनी देर लगाएंगे उतना ही संकट बढ़ता जाएगा। यह निश्चित है कि यदि मनुष्य अपने ....परमाणु अस्त्रों.....भंवर .....फँसने.......बचा सका, तो आज उसने अपने प्रयत्नों....ऐसी वैज्ञानिक उपलब्धियाँ प्राप्त कर ली हैं जिनके कारण वह शीघ्र ही विराट विश्व नागरिक बन सकता है।

(ख) जिस समय महात्मा बुद्ध....भारत ....जन्म लिया उस समय देश......अनेक धार्मिक और सामाजिक कुरीतियाँ विद्यमान थीं। लोग धर्म ....वास्तविक स्वरूप......भूलकर रुढ़िवाद.....ग्रस्त थे। चरित्र और आचरण......किसी.....चिंता न थीं। जात-पाँत और बाह्य आडंबरों.....जोर था। यज्ञ और कर्मकांडों ......प्रचलन था। उनमें पशुओं .....बलि और मांसाहार धर्म ......विशेष अंग बन गया था। धर्म वस्तुत: धर्म न रहकर उसका कंकाल मात्र रह गया था। जो दुर्दशा सामाजिक क्षेत्र.....थी, राजनीतिक क्षेत्र ......भी वैसी ही थी। देश अनेक छोटे-छोटे राज्यों ......बँटा हुआ था। राजा एक दूसरे......लड़-भिड़कर अपनी राज्य-सीमाओं ..... बढ़ाने........ प्रयत्न करते रहते थे और उस लूट-खसूट .....सामान्य व्यक्ति पिस रहा था।

(ग) स्वतंत्र भारत....संपूर्ण दायित्व आज विद्यार्थियों........ही ऊपर है क्योंकि आज जो विद्यार्थी हैं, वे ही कल स्वतंत्र भारत ......नागरिक होंगे। भारत......उन्नति और उसका उत्थान उन्हीं ....उन्नति और उत्थान .....निर्भर करता है। अत: विद्यार्थियों .....चाहिए कि वे अपने भावी जीवन.....निर्माण बड़ी सर्तकता और सावधानी ....साथ करें। उन्हें प्रत्येक क्षण अपने राष्ट्र, अपने समाज, अपने धर्म और अपनी संस्कृति.......अपनी आँखों ......सामने रखना चाहिए ताकि उनके जीवन.....राष्ट्र ......कुछ बल प्राप्त हो सके। जो विद्यार्थी राष्ट्रीय दृष्टिकोण......अपने जीवन ......निर्माण नहीं करते, वे राष्ट्र और समाज ......भार स्वरूप होते हैं।

(घ) आदमियों .....तिजारत करना मूर्खों.....काम है। सोने और लोहे......बदले मनुष्य .....बेचना मना है। आजकल भाप ....कलों .....दाम तो हजारों रुपया है, परन्तु मनुष्य कौड़ी....सौ-सौ बिकते हैं। सोने और चाँदी....प्राप्ति....जीवन....आनन्द नहीं मिल सकता। सच्चा आनन्द तो मुझे मेरे काम .....मिलता है। मुझे अपना काम मिल जाये तो फिर स्वर्ग प्राप्ति.....इच्छा नहीं। मनुष्य पूजा ही सच्ची ईश्वर पूजा है। मन्दिर और गिरजा ....क्या रखा है? ईंट, पत्थर, चूना कुछ भी हो- आज .....हम अपने ईश्वर .....तलाश मन्दिर, मस्जिद, गिरजा और पोथी ......न करेंगे। अब तो यही इरादा है कि मनुष्य .....अनमोल आत्मा .....ईश्वर .....दर्शन करेंगे। यही आर्ट है....यही धर्म है। मनुष्य .....हाथ ही .....तो ईश्वर....दर्शन कराने वाले निकलते हैं। मनुष्य और मनुष्य .....मजदूरी.....तिरस्कार करना नास्तिकता है। बिना काम, बिना मजदूरी, बिना हाथ ....कला -कौशल.....विचार और चिन्तन किस काम.....? सभी देश....इतिहास....सिद्ध है कि निकम्मे पादिरयों, मौलवियों, पण्डितों और साधुओं .....दान .....बल.....पला हुआ ईश्वर-चिन्तन अन्त.....पाप, आलस्य और भ्रष्टाचार.....परिवर्तित हो जाता है।

(ङ) लेखक.....काम बहुत-सी बातों....मधु-मक्खियों......मिलता है। मधु-मक्खियाँ मकरंद-संग्रह .....कोसों.....चक्कर लगाती हैं और अच्छे-फूलों ......बैठकर उनका रस लेती

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हैं तभी तो उनके मधु...संसार ....सर्वश्रेष्ठ मधुरता है। यदि आप अच्छे लेखक बनना चाहें तो आपको यही वृत्ति ग्रहण करनी होगी। अच्छे-अच्छे ग्रंथों.....खूब अध्ययन कीजिए और उनकी बातों .....मनन कीजिए। फिर आपकी रचनाओं ....भी मधु का-सा माधुर्य आने लगेगा। कोई अच्छी उक्ति, कोई अच्छा विचार भले ही दूसरों ......ग्रहण किया गया हो पर यदि यथेष्ट मनन कर आप उसे अपनी रचना......स्थान देंगे तो वह आपका हो जाएगा। मननूपर्ण लिखी हुई सामग्री.....संबंध ......शीघ्र किसी .....यह कहने ....साहस ही न होगा कि यह अमुक स्थान......ली गई है या उच्छिष्ट है। जो बात आप भली भाँति आत्मसात् कर लेंगे वह फिर आपकी हो जाएगी।

(च) मैं प्राणियों.....विकास......स्त्री.....पद .....पुरुषों.....पद.....श्रेष्ठ समझता हूँ, उसी तरह जैसे प्रेम और त्याग और श्रद्धा ....हिंसा और संग्राम और कलह .....श्रेष्ठ समझता हूं। अगर हमारी देवियाँ सृष्टि और पालन....देव मन्दिर.....हिंसा और कलह.....दृढ हूँ। पुरुष .....अपने अभिमान.....अपनी दानवी कीर्ति.....महत्व दिया। वह अपने भाई ....छीन कर आर उसका रक्त बहाकर समझने लगा, उसने वहुत बड़ी विजय पायी। जिन शिशुओं ....देवियों.....अपने रक्त .....सिरजा और पाला उन्हें बम और मशीनगन और सहस्रों टैंकों....शिकार बनाकर वह अपने....विजेता समझता है और जब हमारी ही माताएँ उसके माथे.....केसर .....तिलक लगाकर और उसे अपनी असीसों.....कवच पहना कर हिंसा-क्षेत्र.....भेजती हैं, तो आश्चर्य है कि पुरुष.....विनाश.....ही संसार.....कल्याण .....वस्तु समझा और उसकी हिंसा-प्रवृत्ति दिन-दिन बढ़ती गयी और आज हम देख रहे कि यह दानवता प्रचण्ड होकर समस्त संसार.....रौंदती, प्राणियों.......कुचलती, हरी-भरी खेतियों ......जलाती और गुलजार बस्तियों .....वीरान करती चली जाती है।

(छ) इसकी प्राप्ति.......शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक तीनों शक्तियों....... विकास होता है। विद्या प्राप्ति करके हम अपने शरीर......हृष्ट-पुष्ट बना सकते हैं। इसकी प्राप्ति......हम अपने मन......सदैव प्रसन्न रख सकते हैं। शुद्ध भावनाओं......इसे ओतप्रोत कर सकते हैं। दत्त-चित्तता और एकाग्रता......खोज हम विद्या द्वारा कर सकते हैं। आज हम कई मील ऊँचाई .....उड़ रहे हैं, पहाड़ों.....मोटर दौड़ा रहे हैं, चन्द्रलोक तक पहुँचने .....साहस कर रहे हैं। रावण-सीता सम्वाद, अंगद-रावण-संवाद, सीता.....आकाश-रोदन, राम-जटायु-वार्ता आदि सबकी खोज वैज्ञानिक मानव बड़ा व्यग्र है। किसके बल पर? विद्या ....बल पर।

इसके पढ़ने .....मनुष्य .....ज्ञान बढ़ता है। अपने पूर्वजों.....सारी जानकारी एक विद्या-प्रेमी कर लेता है। कालिदास, सूर, तुलसी, माघ, न्यूटन, प्लेटो, अरस्तू, शेक्सपियर, टाल्सटाय.....सिद्धान्तों ......हम विद्या द्वारा ही जान सकते हैं। देश-विदेश ....सारी खबरें हमें मिलती रहती है। किसके द्वारा? विद्या ....द्वारा।

(ज) श्रमदान....देश ......उन्नति होती है। दो-चार हाथ सड़क बनाने.....लोग कठिनता ....अनुभव करते हैं किन्तु जब सैकड़ों फावड़े एक साथ गिरते हैं तो वह काम बड़ी आसानी .....हो जाता है। इस कार्य ......लोगों ......निःस्वार्थ भाव......काम करना पड़ता है। आपसी संगठन दृढ़ होता है। मेल-मिलाप होता है। बंजर भूमि इसके द्वारा उर्वरा बनायी जाती है। सिंचाई.....तरह-तरह.....साधन तैयार किये जाते हैं। यातायात ......साधन सरलता

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

......तैयार किये जाते हैं। पुल, सड़क, अस्पताल, गलियाँ, बाँध, ग्राम-पंचायत-भवन आदि सब इसके द्वारा सरलता तैयार हो जाते हैं। सम्पूर्ण देश, समाज समुदाय आदि......उन्नति इससे होती है। इससे एक प्रकर.......परमानन्द मिलता है। इस दान.......फल लोगों ....इसी जीवन ......मिल जाता है जब कि अन्य दानों ....फल दूसरे जन्म ......मिलता है। अत: श्रमदान सब दानों ......श्रेष्ठ दान है।

(झ) शरीर एक प्रकार.....यंत्र है। इसके अन्दर कई प्रकार......कल पुर्जे हैं। जिस प्रकार किसी मशीन.,....कल-पुर्जों......ठीक ठाक काम न लिया जाय तो वह रखी-रखी खराब हो जाती है और उसमें मोर्चा लग जाता है, उसके कल-पुर्जे सब ढीले पड़ जाते हैं; उसी प्रकार यदि शरीर.....कल-पुर्जों .....प्रतिदिन ठीक-ठाक काम न लिया जाय तो वे निकम्मे हो जायेंगे। उनमें खराबी आ जायेगी। रक्त-सन्चालन-क्रिया.....गड़बड़ी आ जायगी। पाचन-क्रिया बिगड़ जायगी। शरीर रूपी मशीन.....तरह-तरह रोग रूपी मोर्चे लग जायेंगे। शरीर सभी अवयव निकम्मे हो जायेंगे। शरीर थोड़े ही दिनों ..... निकम्मा बनकर बेकार हो जायेगा और उस शरीर.....मालिक जीव कोई दूसरा शरीर ढूँढ लेगा। शरीर रूपी मशीन....ठीक रखने......व्यायाम ही उसका तेल है, पेट्रोल है। अत: व्यायाम करना नितान्त आवश्यक है।

(ञ) कृषक खेती.....स्वयं बड़ा लाभ उठाता है। एक सच्चे कृषक ....कभी अस्पताल जाने.....आवश्यकता नहीं पड़ती। कारण वह प्रति दिन नियमपूर्वक अपना कार्य करता है। खुली हवा.....काम करता है। प्रात:काल ......हवा व सूर्य ......किरणों......वह स्वच्छ वायु......सेवन करता है। प्रतिदिन परिश्रम करता है। इसी ......वह एक अच्छे स्वास्थ्य ......लाभ पाता है। कुर्सी ...... बैठनेवाले, लम्बा-लम्बा वेतन लेनेवाले ...... कलाई वह चुटकी बजाकर तोड़ सकता है। वह जितना मनोरंजन......लाभ उठाता है उतना मंत्री लोग अपने आलीशान बँगलों ..... नहीं उठा सकते। प्रकृति कृषक.....पीछे-पीछे घूमा करती है। कोयल प्रति दिन उसे अपनी कूक.....रिझाती है। पपीहा पी कहाँ, पी कहाँ......पावस.......सूचना देता रहता है। उसके हृदय ......गुदगुदाया करता है। पक्षी अपनी मीठी सुरीली तान सुनाया करते है। ये सारे लाभ कृषक अकेले लूटता है।

(ट) संसार....भिन्न-भिन्न जातियों.....उत्थान और पतन सदा होता रहा है। परन्तु कुछ समय....बाद एक दूसरी जाति पहली जाति.....स्थान ले लेती है। प्राचीन काल....जिन जातियों....बहुत उन्नति ......थी, अब उनका कोई नाम भी नहीं लेता, उनका अस्तित्व ही मिट गया है। काल .....प्रभाव.....उनका चित्र संसार ......मिट जाता है। यद्यपि वे जातियाँ नष्ट हो गई हैं, तथापि उन्होंने संसार....जिस मार्ग .....चलाया, यह आज तक उसे रास्ते ......चल रहा है। संसार.....ज्ञान-भण्डार.....उन जातियों.....सम्पत्ति रखी हुई है। आजकल .....सभ्यता .....भवन उन्हीं .....दीवार.....बना हुआ है।

ज्ञान.....यह शक्ति प्रबल है। देश नष्ट होते हैं, जातियाँ नष्ट हो जाती हैं; परन्तु ज्ञान निरन्तर आगे ही बढ़ता जाता है। प्रश्न हो जाता है कि जब महाप्रलय .....ज्ञान.....आधारभूत मानव-समाज......ही नाश हो सकता है तब ज्ञान भी नष्ट हो जाता होगा। परन्तु बात ऐसी नहीं; वह नित्य हैं, शाश्वत है। मानव समाज.....हटकर भी वह किसी अविनाशी तत्व .....फिर भी रहता है। अन्यथा उसका सृष्टि निर्माण-काल ......पुन: विकास होना सम्भव है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(ठ) लोग राजनीति....प्रवेश कर जाते हैं और बड़ी-बड़ी बातें करने लगते है, किन्तु उनमें कइयों ....राजनीति शब्द....अर्थ भी नहीं आता। वे दो-चार इधर-उधर सुनी-सुनाई कहकर अपने....बड़ा भारी राजनीतिक मानने लगते हैं। इसके विरुद्ध जो सच्चे अर्थों में राजनीति .....तत्व .....पहचानते हैं वे बहुत कम बोलते हैं, लोगों....ऊटपटाँग बातें सुनकर अन्दर ही अन्दर मुस्कराते हैं और आवश्यकता पड़ने.....सभा-सोसाइटियों ......राजनीतिपूर्ण ऐसे सारगर्भित वाक्य बोलते हैं जिन्हें सुनकर श्रोतागण दंग रह जाते हैं। केवल किसी पार्टी .... नेता बन जाने एवं किसी.......झूठी प्रशंसा .....व्यक्ति राजनीतिज्ञ नहीं बन सकता। उसके लिए राजनीति.......गहन सागर ......गोता लगाने .....आवश्यकता है।

(ड) धन दौलत.....पीछे दौड़ने वाले.....सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह होता है ...., हम असावधानी .....कारण अपने मित्रों....गँवा बैठते हैं, जिनके कारण हमें बाद .....पछताना पड़ता है। साधनों .....विपुलता तथा अभूतपूर्व अवसरों ....प्राप्ति .....हम ....महत्वाकांक्षाएं जागती हैं। उस समय यदि हम नितान्त स्वार्थ-भावना ....वशीभूत ही जायें तो मित्रों ....खो बैठते हैं। व्यक्तिगत स्वार्थ .....अंधाधुंध दौड़.....हम मित्रों .....कोमल भावनाओं......ख्याल नहीं रख पाते और जीवन.....इस अमूल्य विभूति.....हाथ.......खो देते हैं। हो सकता है आपके कई परिचित हों, कई मधुर परिचित हों, कई आकर्षण परिचित हों, कई लाभ पहुँचाने वाले परिचित हों, परन्तु 'मित्र' शब्द.....जिस ऊँची भावना.....अर्थ प्रकट होता है, ऐसे मित्र पाना दुर्लभ है।

(ढ) जिस समय महात्मा बुद्ध.....जन्म लिया उस समय देश में अनेक धार्मिक सामाजिक कुरीतियाँ व्यापक रूप.....विद्यमान थीं। लोग धर्म.....वास्तविक स्वरूप....भूलकर रुढ़िवाद......ग्रस्त थे। चरित्र ओर आचरण ......किसी .....चिन्ता नहीं थी। जात-पात और बाह्य आडम्बर....जोर था। यज्ञ और कर्मकाण्डों .....बहुत प्रचलन था। परन्तु उनमें पशु-बलि और मांसाहार धर्म .....विशेष अंग बन गया था। जो दुर्दशा सामाजिक क्षेत्रों....थी, राजनीतिक क्षेत्र.....भी वही हालत थी। देश अनेक छोटे-छोटे राज्यों....बँटा हुआ था। इसी कारण राजवंशों .....वैर-द्वेष....भावना बहुत बढ़ गई थी। ऐसे समय .....भारत.....पवित्र भूमि .....महात्मा बुद्ध जैसी पुण्य आत्मा ....आविर्भाव हुआ।

(ण) आज.....शिक्षाक्रम....चरित्रगठन....कोई स्थान नहीं है और न उसे कोई महत्व दिया जाता है। हमारी संस्कृति.....गुरु और शिष्य.....सम्बन्ध बहुत ही सुन्दर और मीठा हुआ करता था। गुरु शिष्य....पुत्रवत् मानते थे ओर उस पर स्नेह रखते थे। शिष्य गुरु..... पिता-तुल्य और विश्वसनीय समझता था। गुरु.....शिष्य .....जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा करता था और गुरु-शिष्य....बीच केवल व्यापारिक सम्बन्ध, जिसमें पैसे....बदले कुछ पुस्तकें पढ़ा देने मात्र.....एक सम्पर्क होता है न रहकर आध्यात्मिक सम्बन्ध हो जाता था जो घनिष्ट हुए बिना नहीं रह सकता था। आज आये दिन समाचार-पत्रों ....पढ़ने...मिलता है कि कहीं विद्यार्थियों .....शिक्षकों.....विरुद्ध हड़ताल कर दी तो कहीं शिक्षकों .....भी दल-बन्दियाँ हो गयीं और विद्यार्थी भी कुछ एक दल और कुछ दूसरे दल ....शामिल हो गये और एक या दूसरे....समर्थन करने लगे। हाल .....एक भयंकर दुर्घटना भी सुनने....आयी है कि शिक्षक...परीक्षा सम्बन्धी कड़ाई करने.....असन्तुष्ट होकर कुछ विद्यार्थियों ....शिक्षक ....प्राण

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ही ले लिये। यदि दूसरे किसी....भी उनकी बुराई की या उनके किसी बुरे काम ....विरोध किया तो उनके साथ भी वे लड़ने-झगड़ने .....बाज नहीं आते।

37. निम्नांकित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :—

1. बार-बार क्या देख रहा है?
2. मेरा सौभाग्य है कि आपका दर्शन मिला।
3. दिनेश ने तीन रोटी खायी।
4. उसमें अनेक अच्छाई है।
5. लड़के ने फुटबॉल मैंच जीत लिया।
6. हमारे तो आँसू ही निकल पड़ा।
7. महात्मा गाँधी सच्चा मानव था।
8. उसका प्राण निकल गया।
9. पुस्तक के अन्दर क्या लिखा है?
11. घर के भीतर का अनाज पहले खर्च करो।
11. छत में मत चढ़ो।
12. मैं तुम्हारे सहारे से हूँ ।
13. आपने क्या करना है?
14. तुम्हारे घर पर कौन-कौन आया था।
15. हम आपसे कहे थे न कि वह आज आयेगा।
16. मेरा जीवन आप पर निर्भर करता है।
17. वे धीरे-धीरे भारत भर पैर पसारे।
18. समय बड़ा टेढ़ा होता जा रहा है।
19. फिर उसे नींद लग गयी।
20. किशोरी ने पढ़ते-पढ़ते आँख उठा कर देखा।
21. आसमान में काले बादलों के टुकड़े मँडराते रहे।
22. उसके दोनों बगल में लड़के चल रहे थे।
23. चेन्नू ने अपने केश को हाथ से ठीक किया।
24. शेट्टी ने बेटे को लड़ाई की शिक्षा दिलायी।
25. वे लोगों की आँख बचाकर घूमने निकले।
26. चेन्नू की बीमार माँ की नींद लगी।
27. मोहन ने जीतने की पूरी कोशिश की, पर कुछ नहीं बना।
28. बालण्णा ने जीभ निकाल कर उसे चिढ़ाया।
29. घोड़ा एड लगाते ही मचल उठा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

30. उसके मुँह से झाग आ गयी।
31. मोहिनी निडर होकर वापिस आ रही थी।
32. उसकी तलवार लपलपा उठी।
33. उन दोनों की वही बात थी।
34. महाराज खुद शादी करने को राजी हुआ।
35. ऐसे सम्बन्ध पाने पर मुझे गर्व है।
36. वह शादी के दिन गिनने लगी।
37. भारत का नक्शा बदल रहा था।
38. उन्होंने महल से लगे मैदान को चारों ओर से घिरा दिया।
39. वह इतिहास में गंभीर अध्याय जोड़ेगा।
40. वह रोज अखाड़ेबाजी करता था।
41. उसने यदि सबका सफाया न किया तो बात रही।
42. उसको कूट चालों का पता नहीं थी।
43. बेटा अकाल मृत्युवश हो गया।
44. मैं नाममात्र के सहारा बनी हूँ।
45. रानी के बात सुनकर वह गद्‌गद् हुआ।
46. मैं ठीक हुआ ही जा रहा हूँ।
47. रानी की जिन्दगी के दिन में भी अंधेरा छा गया।
48. लोगों के सिर पर से छाया उठ गयी थी।
49. उसे मिट्टी में मिलाने पर ही हम हाथ-पैर फैला सकेंगे।
50. सुरेश मामूली-सी बीमारी का शिकार बना।
51. आहट पाते ही पहरेदार सशंकित हो गया।
52. गुरु के ऊपर श्रद्धा रखनी चाहिए।
53. बहुत दौड़ लगाने के बाद दिव्या को नौकरी मिली।
54. पुलिस ने अपराधी पर अभियोग चलाया।
55. उसके मौत की खबर सुनते ही मेरा चेहरा गिर गया।
56. प्रेम करना तलवार की नोंक में चलना है।
57. सीता की आँख में आँसू निकल पड़ा।
58. कुत्ता दरबान की तरह द्वार पर दुम हिलाता हुआ खड़ा रहता है।
59. बहुत से कॉलेज के विद्यार्थी जमा हुए।
60. दोनों सेना में घोर घमासान युद्ध हुआ।
61. चौकीदार पर चोर होने का शंका है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

62. हमारी उन्नति के मार्ग में बड़े-बड़े संकट हैं।
63. मेरे को पुस्तक देने से तुम्हें लाभ होगा।
64. निरपराधी को दण्ड देना पाप है।
65. बाजार बन्द होने की संभावना की जा रही है।
66. इसका मूल्य तौला नहीं जा सकता ।
67. तार देखते ही उसकी चेहरा गिर गया।
68. इस काम को आप आसानी पूर्वक कर सकते हैं।
69. वे परस्पर एक दूसरे को बातें कर रहे थे।
70. मैंने यह पुस्तक खरीद लेनी चाहिए।
71. मनीषा प्रात:काल के समय जाएगी।
72. आप कल दिल्ली जायेगा ऐसा मैं समझा।
73. न केवल भोजन ही, बल्कि उन्होंने पानी भी छोड़ दिया।
74. बिना किसी की सहायता के मैं अमेरिका नहीं जा सकता।
75. पूर्व इसके कि मैं भाषण दूँ अपनी पार्टी का परिचय दे देना चाहती हूँ।
76. इसके बदले कि मृदुला आये मंजुल ही मृदुला के यहाँ आ जायेगी।
77. उसने सम्पादक के लिए एक कहानी भेजी।
78. तुम्हारा ऋण बहुत दिनों तक पड़ा रहा।
79. घूँघट काढ़े हुए एक युवती के साथ प्रतिहार आया।
80. कृपया उसके पास समाचार भेजो।
81. आप बहुत दिनों पर इस नगर में आये हैं।
82. स्त्रियाँ हँसती हुई अपने पतियों को मरने के लिए भेजेंगी।
83. तुम किसी संन्यासी का वेश लेकर आओ।
84. बर्फ से लदे पहाड़ी पर वे चढ़े।
85. सैंकड़ों घावों का यह शरीर खड़ा रहा।
86. महिलाएँ सिर में सिन्दूर डालकर बैठेंगे।
87. वह ठंडा घड़े का पानी पीने को दिये।
88. बड़े दुकानों में अच्छा सामान नहीं मिलता।
89. क्या किताबें उस काला सन्दूक में हैं?
90. हमको, तुमको और श्याम को अवश्य जाना है।
91. कल आपके घर में या मेरी बहन आयेंगे।
92. वह कौन से मकान में रहता है?
93. नदी की उस ओर पनघट है तो उसकी दूसरी ओर मरघट है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

94. मैं पुष्प और पक्षी को प्रकृति की सबसे सुन्दरतम मानता हूँ।
95. गाँव पर सर्पों की अधिकता है।
96. सड़क में भारी भीड़ लगा है।
97. दुश्मनों ने प्रत्येक क्षेत्र पर अधिकार जमा लिया।
98. मैंने अब तक किसी काम नहीं किये।
99. साहित्य और जीवन का घोर सम्बन्ध है।
100. मेरा नाम श्री विजयकुमार जी है।

38. **सूचनानुसार लिखिए:**

1. घोड़े मैदान में दौड़ते हैं। ('रहे होंगे' का प्रयोग कीजिए)
2. चोट के कारण वह चल नहीं सकता। ('जाता' का प्रयोग कीजिए)
3. मुरलीधर मुरली बजाते हैं। (भविष्यत् काल में लिखिए)
4. वह पुस्तक प्रेमी है। ('अनुराग 'का प्रयोग कीजिए।)
5. मेरा काम बिगड़ गया। ('बिगाड़ दिया'का प्रयोग कीजिए)
6. मेरी शरण में आइए ('भूत काल' में लिखिए)
7. मनुष्य रुपये का गुलाम है। ('को'का प्रयोग कर वाक्य बनाइए')
8. नेता जी ने झंडा फहराया। ('के द्वारा' का प्रयोग कीजिए।)
9. भारत राष्ट्र-ध्वज का सम्मान करता है। ('ने' का प्रयोग कीजिए।)
10. मुझे पुरस्कार मिला। ('बहुवचन' में लिखिए)
11. भारत एक निर्धन राष्ट्र है ('निर्धनता' का प्रयोग कीजिए)
12. विजय के कारण वह प्रसिद्ध हो गया। ('धूम मचना' का प्रयोग कीजिए)
13. अरुण कला की साधना करता है। ('से' का प्रयोग कर वाक्य बनाइए)
14. भिखारी को भीख दो।(भविष्यत् काल में लिखिए।)
15. बच्चे माँ को सताते हैं। ('जाती है' का प्रयोग कीजिए)
16. उसका चेहरा खिल उठा। ('प्रसन्न' का प्रयोग कीजिए)
17. छात्र बहानेबाज है। ('बहानेवाली' का प्रयोग कीजिए)
18. ब्राह्मण की पत्नी समझ गयी। ('ज्ञान' का प्रयोग कीजिए)
19. मैं झूठ नहीं बोलूँगा। ('बोला जायेगा' का प्रयोग कीजिए)
20. वह मैसूर जाना चाहता है। ('चाहिए' का प्रयोग कीजिए)
21. अच्छा विद्यार्थी परिश्रम करता है। (बहुवचन में लिखिए)
22. मैं पानी पीयूँगा। ('मुझसे' का प्रयोग कीजिए)
23. कौन काम से छुट्टी पा गया। ('किसको' का प्रयोग कीजिए।)
24. हम खेल खेलते हैं। ('अनिवार्य' का प्रयोग कीजिए)

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

25. आज की सभा में वह अध्यक्ष बना। ('अध्यक्षता'का प्रयोग कीजिए)
26. परिश्रम करोगे, सफल होगे। ('जो-तो'का प्रयोग कीजिए)
27. कॉलेज में प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। ('आयोजित' का प्रयोग कीजिए)
28. वह परिणाम सुनकर रो पड़ा। ('आँसू' का प्रयोग कीजिए)
29. रूस ने भाषा समस्या हल की। ('से'का प्रयोग कीजिए)
30. बच्चे प्रेमचन्द की कहानियाँ पढ़ते हैं। ('पढ़ी जाती हैं' का प्रयोग कीजिए)
31. उससे मेरी दोस्ती है। ('दोस्त' का प्रयोग कीजिए)
32. दिन छिप गया। ('रात' का प्रयोग कीजिए।)
33. उसने मेरी बात को ध्यान से सुना। ('कान देना' का प्रयोग कीजिए)
34. आपका अनुरोध माना गया। ('अनुरोध' के स्थान पर अन्य शब्द का प्रयोग कीजिए)
35. आप कितने अच्छे हैं। ('कैसी' का प्रयोग कीजिए)
36. लड़का पाठ पढ़ चुका। ('ने' का प्रयोग कीजिए)
37. अमोलकचन्द ने काम सौंपा। ('से' का प्रयोग कीजिए)
38. वह प्याज नहीं खाती। ('परहेज' का प्रयोग कीजिए।)
39. बच्चा पढ़ता है। ('पड़ता' का प्रयोग कीजिए)
40. तैरना जानने के कारण उसकी मुसीबत आ गयी। ('आफत गले पड़ी' का प्रयोग कीजिए)
41. उसकी आत्मा स्वीकार नहीं करती। ('बहुवचन' में लिखिए)
42. ईमानदार आदमी सफल होगा। ('यदि-तो' का प्रयोग कीजिए)
43. प्रसाद ने अच्छी कविता की। ('कवि'का प्रयोग कीजिए)
44. उन्होंने दस्तावेज पर हस्ताक्षर किये। ('एकवचन' में लिखकर वाक्य बनाइए)
45. बच्चा प्यासा था। ('प्यास' का प्रयोग कीजिए।)
46. महात्माओं ने आशीर्वाद दिया ('के द्वारा' का प्रयोग कीजिए)
47. चिन्ता, चिता समान है। ('बहुवचन में लिखिए)
48. गरीब होते हुए भी वह उदार है। ('के बावजूद' का प्रयोग कीजिए)
49. यह वाक्य शुद्ध कीजिए। ('शुद्धिकरण' का प्रयोग कीजिए)
50. उसका स्वभाव कठोर है। ('कठोरता' का प्रयोग कीजिए)

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

रचना

भाग 2

Composition (Part II)

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

2

निबन्ध: स्वरूप एवं सिद्धान्त

भाषा भावों की अनुगामिनी मानी जाती है। हमारे मन में जो अनुभूति होती है, उन्हें शब्द प्रदान करना भाषा का कार्य होता है। शब्दों का सही सार्थक चयन करने वाला व्यक्ति लेखक कहलाता है।

निबन्ध, सृजनात्मक साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। निबन्ध का शाब्दिक अर्थ है- बांधना, संग्रह करना या रोकना। हिन्दी में जिस अर्थ में आज 'निबन्ध' शब्द ग्रहण किया जाता है यह अंग्रेजी के Essay शब्द का पर्याय है जो प्रयोग की दृष्टि से उस गद्य रचना के लिए प्रयुक्त होता है जिसमें उसका रचनाकार अनात्मीयता या आत्मीयता, वैयक्तकता-निर्वैयक्तिकता के साथ किसी एक विषय या प्रसंगों पर अपनी भाषी-शैली में भाव या विचार प्रकट करता है।

यों तो निबन्ध को विद्वानों ने अनेक प्रकार से परिभाषित किया है किन्तु इनमें डॉ0 त्रिगुणायत की परिभाषा सर्वाधिक स्पष्ट है-'निबन्ध वह एक छोटा-सा गद्य विधान है जिसमें निबन्धकार जीवन या जगत् से सम्बन्धित किसी भी वस्तु या व्यक्ति के प्रति उद्भूत अपनी मानसिक और बौद्धिक प्रतिक्रियाओं को इस प्रकार निर्बाध व्यक्त करता है कि वह अधिक से अधिक रोचक, संवेदनशील और चमत्कारपूर्ण हो।'

परिभाषा से निबन्ध की निम्नलिखित विशेषताएं प्रकट होती हैं- 1. निबन्धकार का व्यक्तित्व, 2. विषय-स्वतन्त्रता और सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि, 3. आकार की लघुता, 4. विचारों की स्वाधीनता, 5. निजी अनुभूति का प्रकाशन, 6. भावप्रवणता एवं सजीव भाषा-शैली, 7. सहज-प्रभावोत्पादकता, आदि।

आइए अब हम इन विशेषताओं पर विचार कर लें :—

1. निबन्धकार का व्यक्तित्व—निबन्ध में लेखक का निजी व्यक्तित्व साफ झलकता है। निबन्ध में प्रकट किए गए विचार उसके अपने होते हैं। उसके लेखन से उसका व्यक्तित्व प्रकट होता है। गम्भीर प्रकृति का व्यक्ति प्राय: गम्भीर और चंचल प्रकृति का व्यक्ति सामान्य विषयों का चुनाव करता है।

2. विषय स्वतन्त्रता और सूक्ष्म-निरीक्षण दृष्टि—लेखक अपनी दृष्टि के अनुसार विषय का चयन करता है और उसी विषय का चुनाव करता है जिसके प्रति उसका रुझान हो। निबन्ध के लिए यह आवश्यक है कि लेखक में चीजों को गहराई में देखने की सूझ-बूझ और दृष्टि हो।

3. आकार की लघुता—निबन्ध लेखक को ध्यान रखना चाहिए कि जिस विषय का भी उसने चयन किया है, उसका प्रतिपादन संक्षिप्त रूप में किन्तु प्रभावशाली ढंग से करे।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

4. विचारों की स्वाधीनता—निबन्धकार, निबन्ध लिखते समय दूसरों के विचारों का उदाहरण दे सकता है किन्तु उपसंहार करते समय निबन्ध के निष्कर्ष उसके अपने होने चाहिए।

5. निजी अनुभूति का प्रकाशन—लेखक निबन्ध में अपने अनुभवों का प्रकाशन करे। यदि उसकी अपनी अनुभूतियाँ निबन्ध मे प्रकट नहीं होतीं तो वह निबन्ध, गद्य का शुष्क टुकड़ा बनकर रह जाता है।

6. भाव प्रवणता तथा सजीव भाषा-शैली—भषा शैली निबन्ध का प्राण है। कुशल वाक्य संयोजन और शब्द-चयन निवन्ध में चार-चाँद लगा देते हैं ।

7. सहज प्रभावोत्पादकता—निबन्ध ऐसा होना चाहिए कि जैसे ही पाठक उसे पढ़ना शुरू करे, वह उसे छोड़ना न चाहे। कुछ इस प्रकार का प्रभाव पाठक के मन पर छोड़े कि वह उसे भूल न सके और उसके मानस को जकड़ ले।

निबन्ध के प्रकार

सभी प्रकार के निबन्धों को हम प्राय: दो वर्गों में बाँट लेते हैं—

(क) व्यक्ति प्रधान, (ख) विषय प्रधान। प्रथम वर्ग के निबन्धों में लेखक के भावों से सम्बन्धित निबन्ध आते हैं1 इन्हें इस प्रकार रखा जा सकता है—

(i) विचारात्मक निबन्ध—इन निबन्धों में लेखक अपने-मौलिक विचारों को तर्क-संगत ढंग से प्रस्तुत करता है।

(ii) भावात्मक निबन्ध—इस श्रेणी के निबन्ध लेखक की निजी अनुभूतियों के आकलन होते हैं। इनमें लेखक अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति देता है। इस प्रकार के निबन्धों में विचार गौण हो जाते हैं।

(iii) आत्मपरक निबन्ध—इन निबन्धों में लेखक अपने व्यक्तिगत जीवन को प्रकट करता है। ललित निबन्धों के अधिकांश रूप इस वर्ग में आते हैं।

(iv) वर्णननात्मक निबन्ध—किसी वस्तु या स्थान का वर्णन जब लेखक इस प्रकार से करता है कि पाठक के सामने वह दृश्य सजीव हो उठे तो इस प्रकार के निबन्ध इस श्रेणी में आते हैं।

(v) विवरणात्मक निबन्ध—इस वर्ग के निबन्धों में अतीत का चित्रण रोचक शैली में किया जाता है।

विषय प्रधान निबन्ध का वर्गीकरण विषय के आधार पर होता है। जैसे-

(i) साहित्यिक निबन्ध—सभी प्रकार के साहित्यिक विषयों पर लिखे गये निबन्ध इस वर्ग में आते हैं।

(ii) आर्थिक निबन्ध—विभिन्न आर्थिक समस्याओं पर लिखे गये निबन्ध इस कोटि में आते हैं।

(iii) वाणिज्यिक निबन्ध—उद्योग, व्यापार-वाणिज्य आदि विषय पर लिखे गये निबन्ध इस वर्ग में रखे जाते हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

निबन्ध के अंग

लेखन सुविधा की दृष्टि से निबन्ध को चार भागों में बाँट लेना चाहिए—शीर्षक, प्रस्तावना, विषयवस्तु तथा उपसंहार।

शीर्षक—जिस विषय पर भी आप निबन्ध लिख रहे हों, यह आवश्यक है कि उसके शीर्षक का चुनाव बहुत सेचा-विचार कर करें। शीर्षक ऐसा हो कि आपके विष प्रतिपादन को समझ ले। जहाँ तक संभव हो शीर्षक छोटा दें तथा वह आकर्षक हो।

प्रस्तावना—यह निबन्ध का पहला अनुच्छेद होता है। इसमें विषय का सामा परिचय तथा आप क्या कहना चहते हैं, उसका हल्का-सा संकेत होना चाहिए। प्रस्तावना में भाषा कसी हुई और विचार, गुंफित होने चाहिए।

विषयवस्तु—निबन्ध में जिन-जिन मुद्दों को आप उठाना चाहते हैं उन्हें एक क्र में लेकर एक-एक विचार, एक-एक अनुच्छेद में देते जाएँ। इससे विषय के प्रतिपादन में पुनरावृत्ति नहीं होगी और सारा विषय स्पष्ट हो जायेगा।

उपसंहार-यह निबन्ध का अन्तिम भाग होता है। इसमें अपना अभिमत या जो कुछ विचार समस्याएँ आपने अपने निबन्धों में उठाये हैं उनका संक्षेप में उल्लेख करते हुए; अन्त निराकरण या निष्कर्ष प्रस्तुत करें।

निबन्ध -लेखन से पहले

पी.यू.सी. के विद्यार्थियों को सामान्य विषयों पर निबन्ध लिखने को कहा जाता है विद्यार्थी इस दिशा में यदि नियमित अभ्यास करें तो अच्छे और सारगर्भित निबन्ध लि सकते हैं। आप उन विषयों की एक सूची बना लें। जिन विषयों पर आप निबन्ध तैय करना चाहते हैं। अब विषय से सम्बन्धित जो भी सामग्री प्राप्त हो सकती है, उसे प्राप्त क नोट्स बना लें।

हमारे दैनिक जीवन में वे समस्याएँ क्या प्रभाव डाल रही हैं, उन पर भी ध्या दें। समाचार-पत्र, आसपास की घटनाएँ और अनुभवों का आकलन करें। इससे आपके निब में रोचकता पैदा होगी। सूक्ष्म-निरीक्षण द्वारा ही एक अच्छा निबन्ध लेखक बना जा सक है अत: चीजों/घटनाओं/स्थितियों को ध्यान से देखना बहुत आवश्यक है।

जब सारी सामग्री आप जुटालें तो अभ्यास शुरू करें। निबन्ध, सतत अभ्या चाहता है। आप सोचते हों कि परीक्षा भवन में ही लिख लेंगे पहले ही से क्यों कष्ट उठा तो वह संभव नहीं होगा। अभ्यास द्वारा ही आप इस विधा में दक्षता पा सकते हैं अन्य नहीं।

निबन्ध लिखते समय

1. शीर्षक का चयन ध्यान से करें और विषय की रूपरेखा बनायें। जो बात आ कहना चाहते हैं, उसे परिच्छेदों में बाँट लें। एक परिच्छेद में मात्र एक ही बात कहें।

2. आपके निबन्ध की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण तथा शुद्ध हो। मुहावरे तब ही प्रयो करें जब आप उसका सही प्रयोग जानते हों।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

3. छोटे-छोटे वाक्य बनाएँ और विचारों की पुनरावृत्ति से बचें।

4. जितने शब्दों या पंक्तियों में निबन्ध लिखने के लिए आपसे कहा गया है, उस सीमा का ध्यान रखें ओर जहाँ तक संभव हो आप अपने निबन्ध की लम्बाई उतनी ही रखें।

5. विदेशी भाषाओं के उद्धरण देने यदि आवश्यक हों तो उसका अनुवाद करके हिन्दी में दें। चाहें तो मूल भाषा का उद्धरण कोष्ठक में या फुटनोट (Footnote) में दे दें।

6. आपके विचार स्पष्ट, निर्भीक तथा पक्षपात रहित होने चाहिए।

7. निबन्ध पूरा हो जाने पर एक बार पूरा पढ़ लें। कोई शब्द या वाक्य हटाना या बदलना हो तो शुद्ध कर लें।

यदि आप इन सब बातों पर ध्यान देंगे और निरन्तर अभ्यास करेंगे तो निबन्ध लेखन सरलतापूर्वक कर सकेंगे। अधिक से अधिक ध्यान अभ्यास पर दें। अभ्यास के बिना अच्छा निबन्ध लिखना असंभव है।

आपकी सहायता के लिए कुछ निबन्ध यहाँ दिए जा रहे हैं-

1. दूरदर्शन

मनोरंजन के आधुनिकतम साधनों में दूरदर्शन का महत्वपूर्ण स्थान है। जब रेडियो प्रचलन में आ गया तो श्रोताओं के मन में एक विचार कौंधा कि कितना अच्छा हो यदि बोलने वाले का चेहरा भी देखा जा सके। विज्ञान ने इस कल्पना को साकार कर दिखाया। आज तो स्थिति यहाँ तक आ पहुँची है कि दूर संचार, चिकित्सा विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में दूरदर्शन का पर्दा (स्क्रीन) वरदान सिद्ध हो चुका है।

यों तो इसका आरम्भ अमेरिका से हुआ किन्तु आज यह संसार के हर कोने में पहुँच चुका है और इसकी लोकप्रियता दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। आज दूरदर्शन विकसनशील देशों में भी पहुँच कर मनोरंजन का लोकप्रिय साधन बन चुका है।

दुरदर्शन जनसंचार के साधनों में अत्यन्त प्रभावी माना जाता है। भारत में इसका प्रारम्भ दो दशक पूर्व दिल्ली से हुआ। फिर 1972 में बम्बई दूरदर्शन केन्द्र स्थापित हुआ। आज इसका जाल समूचे देश भर में फैल चुका है।

भारत में दूरदर्शन शुरू से ही मनोरंजन का साधन नहीं बनाया गया। इसे शिक्षा से भी जोड़ा गया और कार्यक्रमों का चयन ओर निर्माण इस प्रकार से किया गया कि मनोरंजन के साथ-साथ किसानों, महिलाओं और बच्चों के उपयोग की सामग्री का प्रसारण किया जा सके। देश की अखंडता, साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीयता और नागरिकता का भाव दर्शकों में जागृत हो तथा वे अपने देश के गौरववशाली अतीत से परिचित हो सकें।

हमारे देश में दूरदर्शन का पहला कार्यक्रम शारीरिक व्यायाम से होता है। दोपहर की सभा स्त्रियों और बच्चों के कार्यक्रम प्रस्तुत करती है। शाम की सभा जो देर रात तक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चलती है, उसमें समाचारों के अतिरिक्त ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन के विविधतापूर्ण कार्यक्रम होते हैं। क्योंकि सभी आयुवर्ग और मानसिक स्तर का ध्यान रखा जाता है अत: किसी को भी यह शिकायत नहीं हो सकती कि उसकी रुचि का कार्यक्रम नहीं दिया जाता। राष्ट्रीय कार्यक्रमों (जो हिन्दी और अंग्रेजी में प्रसारित होते हैं) के अतिरिक्त प्रादेशिक भाषाओं के कार्यक्रमों के प्रसारणों को भी पर्याप्त समय दिया जाता है।

दूरदर्शन से अनेक लाभ हैं- यह मनोरंजन तो कराता ही है; साथ ही साथ बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष सभी वर्गों को ज्ञानवर्द्धक सामग्री भी देता है। महिलाएँ घरेलू कामकाज और पाक-कला में, कार्यक्रम देखकर दक्ष हो सकती हैं। बच्चों को साहसी और अच्छा नागरिक बनाने की शिक्षा दी जाती है। दूरदर्शन आरम्भ होने से पहले, लोगों के सामने समय बिताने की विकट समस्या होती थी, अब लोग अपना घर छोड़कर कहीं जाना नहीं चाहते। 'रामायण','महाभारत', 'मुजरिम हाजिर' 'राग दरबारी' 'खानदान' आदि कार्यक्रमों ने तो इतनी अधिक लोकप्रियता प्राप्त की , कि आवश्यक काम छोड़कर लोग इन्हें देखना नहीं भूलते थे।

दूरदर्शन के जहाँ इतने लाभ हैं, वहाँ हानियाँ भी हैं। इनके आ जाने से बच्चों का सहज भोलापन समाप्त हो रहा है। विज्ञापनों की चकाचौंध उन्हें यथार्थ से दूर ले जा रही है। वे सारे दिन टी.वी. सैट से चिपके रहना चाहते हैं। इससे उनकी पढ़ाई तो चौपट हो ही रही है साथ ही छोटी उम्र के आँखों पर चश्मा चढ़ने लगा है। 'वयस्कों के लिए'- देर रात्रि शुरू होने वाली फिल्में देखना भी वे नहीं चूकते। वी.डी.ओ. ने सर्वनाश ही कर डाला है। दिन में तीन-तीन चार-चार फिल्में वी.सी.आर. पर देखना फैशन हो गया है। इससे धन तो बरबाद होता ही है,स्वास्थ्य भी नहीं बच पाता।

नि:सन्देह दूरदर्शन एक उपयोगी उपकरण है और मनोरंजन के क्षेत्र में एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति करता है। आवश्यकता मात्र इस बात की है कि इसका सदुपयोग किया जाए। बच्चों को उतने ही कार्यक्रम देखने दिये जाएँ जितने वांछित हैं। इसके कारण उनकी पढाई में बाधा न पड़े इसका ध्यान रखना है। इसके लिए बड़ों को भी अपने ऊपर नियन्त्रण रखना होगा।

आज दूरदर्शन के प्रसारण को उपग्रह से जोड़ दिया गया है। इससे एक तो कार्यक्रम साफ दिखाई पड़ते हैं ओर दूसरे देश भर में कहीं भी हम उन्हें देख सकते हैं। वह दिन आ चुका है जब हम जापान और अमेरिका की तरह अलग-अलग चैनलों पर अपना मनपसन्द कार्यक्रम देख सकते हैं।

2. विद्यार्थी जीवन

मनुष्य का जीवन तीन सोपानों में बँटा हुआ है। 1. बाल्यकाल 2. यौवनावस्था और बुढ़ापा। बचपन के 2-3 वर्षों से लेकर 24-25 वर्ष की अवस्था तक वह विद्याध्यन करता है जो उसके भविष्य का आधार होती है। यह ही वह समय है। जब उसका चरित्र बनता है। इस प्रारम्भ के जीवन के आधार पर ही उसकी असफलता-असफलता निर्भर करती है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

विद्यार्थी-जीवन, जीवन का वह काल है, जब मनुष्य विद्या का अर्थी या उपासक बनकर शिक्षा ग्रहण करता है। विश्व में जितने महापुरुष हुए हैं, सबकी महानता का बीज विद्यार्थी-जीवन में ही अंकुरित हुआ है। आज का विद्याथी-जीवन अधिक खर्चीला है। अतः गरीब माता-पिता अपने बच्चे की ऊँची शिक्षा नहीं दिला सकते। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों को अपना खर्च स्वयं चलाना पड़ता है।

वास्तव में आज की शिक्षा पेट की खातिर होती है। आज का विद्यार्थी पढ़ता है इसलिए कि डिग्री-धारी बनकर बाबू बन सके। इसके अतिरिक्त आज की शिक्षा विद्यार्थियों के ऊपर गधे के बोझ की तरह लाद दी गई है। आज विद्यार्थी पुस्तकों के कीड़े बनकर परीक्षा पास करने का ध्येय रखते हैं। जीवन की अन्य महत्वशाली वस्तुएँ, जिनका बीज जीवन में पड़ना अत्यन्त आवश्यक है, विद्यार्थी के लिए कोई महत्व नहीं रखतीं।

हमारा प्राचीन शिक्षा-अध्ययन अत्यन्त सुन्दर था। शिक्षा का मुख्य ध्येय नैतिक था। विद्यार्थी 25 वर्ष तक नगर से दूर, वन की सुरम्य भूमि स्थित कुटियों में गुरुओं द्वारा शिक्षा ग्रहण करते थे विद्यार्थी नगर से अपने लिए तथा गुरु के लिए भिक्षा लाते थे। उस भिक्षा में अमीर और गरीब का कोई अन्तर नहीं था। प्राचीन शिक्षा अत्यन्त सादी तथा महत्वपूर्ण थी। विद्यार्थी अपने गुरु के परम आज्ञाकारी होते थे। उनका जीवन सात्विक और महान् आदर्शों से परिपूर्ण होता था।

आज के बीसवीं सदी के इस वैज्ञानिक युग में यद्यपि हम प्राचीन विद्यार्थी जीवन की परिपाटी का अनुकरण नहीं कर सकते, तथापि आज के विद्यार्थी-जीवन में उसकी अधिकाधिक आवश्यकता है। विद्यार्थी जीवन का धरातल नैतिक तथा व्यावहारिक शिक्षा पर अवलम्बित होना चाहिए।

आज के विद्यार्थी स्वतन्त्र देश के विद्यार्थी हैं। उनका मस्तिष्क और हृदय स्वतन्त्र और निर्भीक हो। वे अपने जीवन का ध्येय उच्च आकाँक्षाओं को बनावें जिसने राष्ट्र का गौरव विश्व में फैले। स्वतन्त्र भारत में शिक्षा पद्धति में परिवर्तन होने चाहिए। जिससे आज का विद्यार्थी-जीवन मनुष्य के भविष्य को नहीं, वरन् देश के भवष्य को सुन्दर बनाने में सहयोग दे सके। स्वतन्त्र भारत के विद्यार्थी को अपना महत्व समझ, अपने जीवन को अधिक से अधिक सफल बनाने की चेष्टा करनी चाहिए।

3. दहेज प्रथा

शायद ही कोई दिन ऐसा होता हो, जब सामाचार-पत्र में किसी युवती के पंखे से लटकने, तालाब या कुएँ में अथवा स्टोव फटने से मृत्यु न होती हो। ये युवतियाँ धनी और सम्पन्न परिवारों की भी होती हैं और सामान्य मध्यवर्ग की भी। वह स्वयं भी अत्याचारों से तंग आकर आत्महत्या करती है और उसे पति, ससुर, सास आदि के द्वारा भी परलोक पहुँचाया जाता है। इन सब हत्याओं आत्महत्याओं के मूल में सिर्फ एक ही वस्तु होती है- दहेज।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भारतीय सामाजिक जीवन में आर्यों के समय ही से पुत्री के विवाह में माता-पिता की ओर से जो आभूषण, बरतन, कपड़े तथा अन्य वस्तु अपनी पुत्री या उसके वर परिवार को दी जाती थी वह स्त्री-धन कहलाता था जो आज की भाषा में दहेज हो गया है। इस प्रथा का वर्णन हमारे प्राचीन धर्म ग्रन्थों मे भी मिलता है। उस समय दहेज देने के दो कारण थे– 1 माता-पिता पुत्री के विवाह पर यह सोचते थे कि पुत्री को घरेलू प्रयोग की वस्तुएँ दे दी जाएँ ताकि उसका जीवन सुविधापूर्वक चल सके। 2. पुत्री भी घर में अपने भाइयों के समान ही पिता की सम्पत्ति में भगीदार है। अत: दहेज के बहाने उसे सम्पत्ति का कुछ अंश दे दिया जाए ताकि श्वसुराल में वह सम्मानपूर्वक जीवन जी सके और हीन भावना की शिकार न हो।

आज के 'अर्थ-पिशाच' समाज में दहेज की व्याख्या ही बदल गयी। कन्या के विवाह पर पशुओं को बेचने, खरीदने की तरह मोल भाव किया जाता है और वर पक्ष, कन्या पक्ष को दहेज के नाम पर इस प्रकार निचोड़ता है जैसे मधुमक्खियों के छत्तों से मधु निचोड़ा जाता है। इसी कारण कई बार पिता को पुत्री के विवाह के लिए अपना मकान, खेत अथवा अन्य सम्पत्ति बेचना पड़ती है। इससे दो परिवारों के जुड़ने और स्नेह पैदा होने के बजाय, उसमें विवाह के बाद कटुता की दरारें पड़ जाती है।

यदि गम्भीरता से विचार किया जाए तो देखेंगे कि आज उच्चता और महानता का मानदण्ड पैसा हो गया है। किसी ने धन चाहे छल, कपट, भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, अपराध आदि द्वारा ही क्यों न प्राप्त किया हो किन्तु यदि उसका बैंक बैलेंस मोटा है तो वह आज की भाषा में 'बड़ा आदमी' है चाहे उसके पास बैठने से ही उबकाई आती हो। प्राचीन समय में यह बात नहीं थी और 'बड़ा आदमी' अपने ज्ञान, प्रतिभा, आचरण, शौर्य, दानवीरता और सेवा भावना से बनता था। उसका परिणाम यह हुआ है कि आज प्रत्येक व्यक्ति बड़ा कहलाना चाहता है। परिणामत: यदि किसी पिता के एक-दो या अधिक पुत्र हैं तो वह उन्हें 'ब्लैंक चैक' मानता है जिन पर विवाह के बाजार में अवसर के मुताबिक बेटों को बेचकर रकम भरी जा सकती है। जब तक 'बड़े' की परिभाषा नहीं बदलेगी; तब तक यह 'दहेज-दानव' कोमल कलियों को अपना ग्रास बनाता ही रहेगा और समाज या सरकार का कोई नियम या कानून इसे मिटा नहीं सकेगा।

विवाह एक पवित्र अनुष्ठान है1 जो लड़की विवाह हो जाने के बाद वरपक्ष के परिवार से जुड़ती है, वह उस परिवार पर भार बनकर तो नहीं आती। वह भी उस परिवार के कार्यकलापों में हाथ बँटाती है, सेवा करती है और कई बार नौकरी अथवा व्यवसाय करके उस परिवार की आय में वृद्धि करती है। फिर भी उस कन्या को भार स्वरूप माना जाता है और उसके माता-पिता से उसके जीवन भर के भरण- पोषण का धन वसूला जाता है।

इस दूषित प्रथा को मिटाने का कार्य तीन स्तरों पर होना चाहिए। पहला तो यह कि लड़की को इतना पढ़ा-लिखा दिया जाए कि वह आर्थिक रूप से स्वयं को असुरक्षित न महसूस करे और आवश्यकता पड़ने पर वह अपने पैरों पर स्वतन्त्र रूप से खड़ी हो सकती है यह अहसास अपनी ससुराल वालों को करा दे। दूसरा, यह कि पढ़ाई के दौरान

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

लड़कों को यह अनुभव कराया जाए कि जो धन स्वयं कमाया जाता है उसी पर तुम्हारा नैतिक अधिकार है। दान में या अन्य किसी भी रूप में प्राप्त धन के तुम अधिकारी नहीं। उनमें उत्सर्ग भावना उदारता और चारित्रिक दृढ़ता विकसित करनी चाहिए। तीसरा, समाज के सम्मानीय सदस्य ऐसे परिवारों का कठोरता से बहिष्कार करें जिनमें बहुओं को सताया जाता हो अथवा जो पुत्रों के विवाह में दहेज की माँग करते हों। समाज के नवयुवकों को प्रेरित किया जाए कि वे ऐसे घरो के सामने धरना दें, उनके विरुद्ध प्रचार करें ताकि वह परिवार सही रास्ते पर आ सके। इस मामले में सरकार को कठोर से कठोर कानून बनाने चाहिए ताकि कानून के भय से इस जघन्य अपराध के करने से बचें।

यह ठीक है कि दहेज प्रथा को सर्वथा नहीं रोका जा सकता किन्तु यदि सामाजिक संस्थाएँ और चरित्रवान युवक चाहें, तो इसे कम अवश्य कर सकते हैं। शिक्षा के कारण अब लड़कियों में भी वह साहस आ गया है। वे दहेज के कारण अपने परिवार को नष्ट होता देख विवाह-वेदिका तक से उठ खड़ी हुई हैं। इधर भारतीय समाज में जाग्रति आयी है और हमारे समाज का अभिशाप और कलंक 'दहेज' अब समाप्त होकर ही रहेगा।

4. समय का सदुपयोग

जीवन में समय का बहुत मूल्य है। समय एक कल्पवृक्ष की भाँति है जिसका सदुपयोग हमें इच्छानुसार फल देता है। संसार में प्रत्येक व्यक्ति वैभव, सम्पत्ति और स्वास्थ्य लाभ चाहता है। परन्तु ये सब एक बार खोने पर पुनः प्राप्त हो सकते हैं। अथक परिश्रम से सम्पत्ति और वैभव तथा सुयोग्य चिकित्सक के परामर्श एवं संयम-पालन से खोये हुए स्वास्थ्य को प्राप्त किया जा सकता है। खोई हुई प्रतिष्ठा और भूली हुई विद्या की प्राप्ति भी परिश्रम द्वारा प्राप्त की जा सकती है। परन्तु समय एक ऐसी मूल्यवान वस्तु है जिसके खो जाने या चले जाने पर जीवन-भर हजार प्रयत्न करके भी प्राप्त नहीं की जा सकती। समय एक बार आकर जब चला जाता है, तब वह फिर वापस नहीं आता। इसलिए महात्मा कबीर ने समय के मूल्य को समझ कर समय के रहते हुए कार्य करने का सत्परामर्श दिया है-

"काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगा कब।"

समय का उपयोग दो प्रकार से किया जाता है-एक, समय का दुरुपयोग और दूसरा, सदुपयोग। नींद, कलह, विवाद, अपकार, गप-शप, आलस्य में समय का उपयोग उसका दुरुपयोग है और कार्य सिद्धि, मैत्री, विद्यार्जन, उपकार आदि में समय का लगाना उसका सदुपयोग कहलाता है। समय आदमी की प्रतीक्षा नहीं करता है और न परवाह ही। जिस प्रकार रेलगाड़ी यात्रियों की परवाह नहीं करती कि कोई उसमें बैठे या नहीं परन्तु समय पर रवाना हो जाती है उसी प्रकार समय की गाड़ी भी बिना आदमी की प्रतीक्षा व परवाह किये चलती रहती है। मानव-जीवन क्षणभंगुर है और समय की गति अत्यन्त तीव्र। इसीलिए मनुष्य को समय का दुरुपयोग न कर, सदुपयोग ही करना चाहिए।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

समय का दुरुपयोग करने या उसका मूल्य न समझने से अनेक हानियाँ हैं। समय का अपव्यय आत्महत्या के समान होता है। आत्महत्या का तो कोई भीषण परिणाम हत्या करने वाले व्यक्तियों को नहीं भोगना पड़ता, परन्तु समय का अपव्यय करने वाले व्यक्ति को आजन्म कष्ट मिलता है। आलसी व्यक्ति कोई काम ठीक समय पर नहीं कर सकता। अत: उसका सम्पूर्ण जीवन ही कष्टों से परिपूर्ण रहता है। वह न अपना कल्याण कर सकता है, न देश का। समय की पाबन्दी न रखने से अनेक दुर्घटनाएँ घटित होने की सम्भावना रहती हैं। परीक्षा में विद्यार्थी का एक घण्टे बाद पहुँचने का अर्थ होगा- उसके एक अमूल्य वर्ष का नाश। और डाक्टर भी यदि बीमार के इलाज में विलम्ब करता है तो बीमार का इलाज़ फिर स्वर्ग में ही होता है। दूर जाने की आवश्यकता नहीं है-बड़े-बड़े जंकशनों पर यदि विलम्ब किया जाय तो रोज हजारों-लाखों व्यक्तियों के प्राण रेल दुर्घटनाओं से समाप्त हो जायेंगे। अत: समय का दुरुपयोग कभी भी उचित नहीं है।

समय के सदुपयोग से व्यक्तिगत व समष्टिगत अनेक लाभ हैं। प्रतिदिन के कार्य को ठीक प्रकार विभाजित कर समय पर पूरा कर लेने वाला व्यक्ति कभी कष्ट नहीं पाता। एक घण्टे नियमित रूप से अध्ययन करने वाला छात्र मेधावी बन जाता है और उतने ही समय व्यायाम या किसी खेल-कूद का अभ्यास करने वाला एक अच्छा खिलाड़ी। समय के सदुपयोग से जीवन में सफलता के साथ ही चित्त को सुख, सन्तोष व शान्ति उपलब्ध होती है। शारीरिक, मानसिक व आत्मिक उत्थान का यह सर्वप्रथम सोपान है। राष्ट्र और विश्व के कल्याण का यह साधन है।

समय का सदुपयोग करने की अनेक विधियाँ हैं। प्रत्येक व्यक्ति की विधि भिन्न हो सकती है परन्तु सदा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि समय की पाबन्दी रखी जा रही है या नहीं और समय को बरबाद तो नहीं किया जा रहा है। श्रेष्ठ कार्यों में समय लगाना समय का सदुपयोग है। इससे अपना, समाज का और देश का कल्याण होता है। भारत जैसे धर्म व संस्कृति-प्रधान देश में दिन का कुछ-न-कुछ समय भगवान के भजन में लगाना भी श्रेष्ठ समझा जाता है। नाटक, खेल-कूद, गाना आदि ललित कलाओं द्वारा मनोरंजन में समय लगाना भी समय का सदुपयोग ही है, यदि इनसे जीवन में मधुरता व सरसता का संचार हो। उत्तम साहित्य का अध्ययन, विद्या का उपार्जन, मैत्री का विस्तार, विश्व को कुटुम्ब समझकर किये गये कार्य आदि में समय लगाना सदुपयोग है। समय की पाबन्दी का ध्यान रखना भी समय का सदुपयोग है।

जब मानव द्वारा निर्मित यन्त्र भी हमें समय का सदुपयोग सिखलाते हैं तब यदि हम समय का सदुपयोग न करेंगे तो पछताना पड़ेगा। समय संसार में सबसे अधिक मूल्यवान व शक्तिशाली है। वैज्ञानिक ने प्राकृतिक पदार्थों पर अधिकार कर लिया है, परन्तु समय के ऊपर उनका भी वश नहीं। वे जल, थल, नभ पर विजय प्राप्त कर सकते हैं परन्तु समय की गति को रोके रखना उनके लिए असम्भव है। इसलिए समय रहते हुए हमें अपने शारीरिक, मानसिक व आत्मिक उत्थान के लिए समय का सदुपयोग करना चाहिए जिससे हमारे साथ ही समाज और राष्ट्र का भी विकास हो।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

5. पुस्तकालय

पुस्तकालय वह स्थान है जहाँ ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें ज्ञान के प्यासों के लिए उनकी प्यास बुझाने के लिए रखी जाती हैं। पाठक यहाँ आकर और पुस्तकों का अध्ययन कर अपने मस्तिष्क का विकास करते हैं।

पुस्तकालय व्यक्तिगत व सामाजिक विकास की आधारशिला है, जिनके बल पर कोई भी राष्ट्र जीवित रह सकता है। इसलिए आक्रमणकारी राष्ट्र, विजित राष्ट्र के पुस्तकालयों का सर्वप्रथम नाश करता है जिससे वहाँ के ज्ञान-विज्ञान की समाप्ति अवश्यम्भावी हो जाती है। पुस्तकालय ज्ञान के अक्षय भण्डार होते हैं और इनका मूल्य किसी भी राष्ट्र के लिए बैंकों के क्षयशील भौतिक सम्पत्ति से कई गुना अधिक है। व्यक्तिगत विकास के लिए अध्ययन आवश्यक है और अध्ययन के प्रधान स्थान दो ही हैं- विद्यालय और पुस्तकालय। विद्यालय अध्ययन की नींव है, परन्तु वहाँ के अल्प समय में कोई भी व्यक्ति थोड़ी-सी पुस्तकों का ही अध्ययन कर पाता है जो समुचित नहीं होता। अध्ययन का समुचित स्थान पुस्तकालय ही है जहाँ नाना प्रकार की पुस्तकों के अध्ययन का अवसर प्राप्त होता है।

पुस्तकालय के अनेक लाभ हैं । प्रथम लाभ है- ज्ञान की वृद्धि। ज्ञान की वृद्धि में पुस्तकालय से जो सहायता मिलती है वह अनेक शिक्षकों तथा जीवन के व्यवहारों व अनुभवों से मिलने वाले सम्मिलित ज्ञान से नहीं मिल पाती मनुष्य ज्ञानशील प्राणी है और उसका ज्ञान ही उसे पशु-समुदाय से भिन्न करने में समर्थ है। ज्ञानहीन मनुष्य पशु कहलाता है। इसलिए ज्ञान ही पुरुष का प्रथम लक्षण होता है जो उसे संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाता है। पुस्तकालयों में प्राप्त ज्ञान के बल पर आज सभ्यता व संस्कृति का जो विकास हो रहा है उससे हम अपरिचित नहीं हैं। पुस्तकालय में भी सभी विषयों की पुस्तकें प्राप्त होती हैं, अत: व्यक्ति के ज्ञान को सीमित न रखकर उसको विकसित करना है। कहानी, उपन्यास, कविता आदि साहित्यिक विषयों के साथ-साथ चित्र, मूर्ति, दर्शन, विज्ञान, इतिहास, भूगोल आदि समस्त विषयों का ज्ञान यदि कोई कराने में समर्थ है तो वह है पुस्तकालय।

पुस्तकालय एक ऐसा सुगम साधन है जिसके द्वारा गरीब व अमीर व्यक्ति किसी भी विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। ज्ञान-वृद्धि के साथ-साथ ज्ञान-प्रसार में भी चलते -फिरते पुस्तकालयों का पर्याप्त योग है। पुस्ताकालय ने ज्ञान-द्वार जन-साधारण के लिए खोल दिया है।

पुस्तकालय का दूसरा लाभ है- समय का सदुपयोग। अवकाश के समय बेकार बैठे रहने से मनुष्य के मस्तिष्क में विकृत भावनाएँ व विचारधाराएँ उत्पन्न होती हैं शून्य मस्तिष्क को 'शैतान की कार्यशाला' कहा जाता है। अवकाश के इन क्षणों को खेलकूद, ताश, सिनेमा, क्लब आदि साधनों द्वारा भी बिताया जाता है; परन्तु इन साधनों द्वारा इतना लाभ नहीं होता, जितना कि पुस्तकालय में बैठकर अवकाश के समय का सदुपयोग करने से होता है क्योंकि वहाँ आनन्द-प्राप्ति के साथ-साथ ज्ञान-प्राप्ति होती है, जो अन्यत्र दुर्लभ है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पुस्तकालय सामाजिक हितों में बड़े सहायक होते हैं। पुस्तकों के अध्ययन से सामाजिक विचारधारा का जागरण होता है और व्यक्ति अधिक से अधिक सदाचारी व उदार बनकर समाज का हित करने के लिए प्रवृत्त होता है। सामाजिक कुरीतियों, अज्ञान व अशिक्षा के निराकरण करने से पुस्तकालयों द्वारा जनसमुदाय में समानता, भ्रातृत्व, अनुशासन, देश-प्रेम आदि सामाजिक हित करने में समर्थ भावनाओं का स्फुरण होता है और देश-विदेश की अनेक समाज व्यवस्थाओं के अध्ययन से सुधार का श्रीगणेश होता है।

पुस्तकालयों से शिक्षा-प्रसार में सहायता मिलती है। छोटे-बड़े, अमीर गरीब स्त्री-पुरुष सभी पुस्तकालयों मे पढ़ सकते हैं। चलते-फिरते पुस्तकालयों की अनेक उपयोगी पुस्तके पढ़ने से शिक्षा का प्रसार होता है और पुस्तकालयों के साथ में होने वाले वाचनालयों के दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक व मासिक पत्र-पत्रिकाओं से देश-विदेश के समस्त समाचारों का ज्ञान पाठकों को हो जाता है।

पुस्तकालय आत्मसंस्कार का भी अच्छा साधन है। आहार, निद्रा, भय आदि पशु-सुलभ वृत्तियाँ व छल-कपट, द्वेष जैसी राक्षसी वृत्तियों में पुस्तकों के अध्ययन से परिवर्तन हो जाता है। पुस्तकों में प्रत्येक प्रकार के मानव समूह का वर्णन रहता है जो प्रत्येक रुचि के पाठक की वृद्धि में परिवर्तन कर सकता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है और वह निरन्तर अपने मानसिक मनोरंजन के लिए साथी ढूँढता रहता है। पुस्तकालय व्यक्तियों के लिए अच्छे साथियों की योजना कर उनके मानसिक मनोरंजन में पर्याप्त सहायक होता है। मित्र की भाँति ही नहीं अपितु उससे भी बढ़कर पुस्तकें हमारा मानसिक मनोरंजन करती हैं।

पुस्तकालयों की व्यवस्था कई प्रकार से की जाती है। उत्तम व्यवस्था वाले पुस्तकालयों में पाठकों को कम से कम समय में उसकी रुचि की पुस्तकें उपलब्ध हो जाती हैं और जिन पुस्तकालयों की व्यवस्था अच्छी नहीं होती, वहाँ पुस्तकों के मिलने में समय अधिक लगता है। इसलिए आजकल विश्वविद्यालय पुस्तकालय व्यवस्था की शिक्षा का प्रबन्ध भी कर रहे हैं। प्रशिक्षित व अनुभवी व्यक्ति पुस्तकालय की व्यदस्था को उत्तम बनाने में समर्थ हो सकते हैं। उत्तम पुस्तकालयों में अब उन पुस्तकालयों की गणना की जाती है जहाँ पाठक को पुस्तक के चुनाव व अध्ययन की खुली छूट हो अर्थात् जहाँ स्वयं चलित-व्यवस्था (Open self-system) हो। उत्तम पुस्तकालय में इसके साथ प्रत्येक रुचि के पाठकों के लिए उत्तम पुस्तकों का संग्रह होता है। इस प्रकार पुस्तक संग्रह, विवरण व अध्ययन आदि सभी की उत्तम व्यवस्था ही किसी भी पुस्तकालय को उत्तम बनाती है।

अनुभवी प्रशासकों की देख-रेख में संग्रह, वितरण, अध्ययन व्यवस्था की कमियों को दूर किया जा सकता है। पुस्तकालय में रहने वाले व्यक्तियों का व्यवहार-कुशल व चतुर होना भी आवश्यक है। पुस्तकालयों में जनता को पढ़ने की अधिक सुविधाएँ प्राप्त होनी चाहिए। पुस्तकालयों में पुस्तकों के चुनाव व संग्रह में बड़ी सतर्कता की आवश्यकता है अन्यथा पुस्तकालय दूषित पुस्तकों से भरपूर होकर निकृष्ट बन जायेगा। इसलिए चरित्र-निर्माण व राष्ट्र को प्रगति की ओर ले जाने वाली पुस्तकें ही पुस्तकालय में होनी चाहिए।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पुस्तकालय राष्ट्र की थाती है, जिसके बल पर राष्ट्र-प्रेम, स्वतन्त्रता, सभ्यता व संस्कृत की लौ जलती है। परन्तु भारत में विशाल व सुव्यवस्थित पुस्तकालयों का अभाव है। इसके लिए सरकार प्रयत्नशील है और आशा है, जनता का सहयोग प्राप्त कर यहाँ भी पुस्तकालय निरन्तर प्रगति करेंगे और विदेशों की भाँति एक दिन भारत के गाँव-गाँव में आदर्श पुस्तकालय होंगे।

6. समाचार-पत्र

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। यह सदैव समाज का अंग बनकर रहना चाहता है। समाज से विलग होकर वह अपना अस्तित्व खो बैठता है ओर अपने सम्बन्धियों का स्मरण क्षण-क्षण में करता रहता है। वह दूसरों की बातों को स्वयं सुनना चाहता है और अपनी स्थिति से दूसरों को अवगत कराना चाहता है। समाज में दूसरे मनुष्यों की दशा जानने एवं दूसरे मनुष्यों को अपनी दशा प्रकट करने की भावना ने समाचार-पत्र को जन्म दिया।

प्राचीन काल में सिद्धान्तों एवं राजाओं की घोषणाओं को स्थान-स्थान पर शिलाओं, चट्टानों एवं पत्थरों पर खुदवा दिया जाता था। अशोक के शिलालेख इस बात के ज्वलन्त उदाहरण है। इसके पूर्व दूतों, तोतों एवं कबूतरों के द्वारा एक देश से दूसरे देशों को समाचार भेजे जाते थे। बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म के साधु भिक्षुक भी चलते-फिरते समाचार-पत्र थे।

समाचार-पत्र 16वीं शताब्दी में सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में प्रारम्भ हुआ। मुद्रणकला के अभाव से समाचार-पत्रों की स्थिति उत्तम नहीं थी। परन्तु फिर भी भारत में मुगल काल से ही समाचार-पत्र प्रारम्भ हो गये थे। वारेन हेस्टिंटग्ज के समय सरकारी पत्र प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात् राजा राममोहनराय की 'कौमुदी', तिलक की 'केसरी' व द्विवेदीजी की 'सरस्वती' विशेष उल्लेखनीय हैं। गणेशशंकर विद्यार्थी व स्वामी श्रद्धानन्द के क्रमश: 'प्रताप' तथा 'अर्जुन' की भी बड़ी धूम मची। इस समय 'नवभारत टाइम्स' और 'जनसत्ता' दैनिक पत्रों में प्रसिद्ध हैं। आजकल मासिक एवं साप्तहिक पत्रों की संख्या दिनों-दिन बढ़ रही है।

आज के युग में देश के प्रत्येक कोने से समाचार-पत्र प्रकाशित हो रहे हैं। अँग्रेजी के अतिरिक्त राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा सभी विदेशी भाषाओं में अनेक पत्र प्रकाशित होते हैं। चारों ओर समचार पत्रों की धूम मची हुई हैं। यद्यपि कुछ समाचार पत्र कुछ समय चलकर बन्द हो जाते हैं, फिर नये प्रकाशित होने वाले पत्रों की संख्या अधिक है। १५-२० वर्ष पूर्व समाचार-पत्र पढ़ने वालों की संख्या आज की अपेक्षा बहुत ही कम थी परन्तु आज का नागरिक जागरूक है अत: वह संसार एवं अपने राष्ट्र के नये समाचारों से अवगत होना चाहता है। इसलिए निरन्तर समाचार-पत्रों की संख्या एवं पाठकों की संख्या बढ़ती रहेगी।

बहुत-से लोग व्यावसायिक दृष्टि के समाचार-पत्र प्रकाशित करते हैं। इसके द्वारा सुगमता से जीविकोपार्जन करते हैं। यदि पत्र नियमित रूप से चलता रहा तो प्रकाशक धनी व्यक्ति हो जाता है। अन्य देशों में यह व्यवसाय सुचारु रूप से चल रहा है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

समाचार पत्रों की उपयोगिता निर्विवाद है। अतः समाचार-पत्रों का प्रकाशन उपयोगी ही हुआ। इसमें विभिन्न प्रकार के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, व्यावहारिक एवं परीक्षोपयोगी लेख प्रकाशित होते रहते हैं, जिन्हें पढ़ने का जनता को काफी शौक है। वास्तव में समाचार-पत्रों ने सम्पूर्ण विश्व को परिवार का रूप प्रदान कर दिया है। संसारके प्रत्येक स्थान की खबरें नित्य-प्रति छपती रहती है, जिनसे अध्येताओं को संसार के कोने-कोने का समाचार ज्ञात होता रहता है। इंन समाचारों के अध्ययन से पाठक के हृदय में राष्ट्रीय, जातीय एवं धार्मिक विचारों की जागृति होती रहती है तथा उसका मस्तिष्क विकसित हो जाता है।

समाचार-पत्रों के द्वारा जनता का मनोरंजन ही नहीं होता, अपितु व्यापार में भी बहुत उन्नति होती है। व्यापार को विकसित रूप इन पत्रों के द्वारा ही प्राप्त हुआ। आज से 60 वर्ष पूर्व समाचार-पत्रों के प्रकाशन का उद्देश्य केवल लोकसेवा ही था किन्तु अब इसका उपयोग आजीविका साधन हो गया है। व्यापार में भी समाचार-पत्रों ने काफी उन्नति की है। आज का व्यापारी संसार के भावों का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। वह अपनी बिक्री बढ़ाने हेतु समाचार-पत्रों में विज्ञापन निकाल देता है। वस्तुतः विज्ञापन प्रणाली ने व्यापार-जगत में क्रान्ति-युग उपस्थित कर दिया है।

प्रत्येक देश ने राष्ट्रीय एवं जातीय विचारों के निर्माण में समाचार-पत्रों से अपार सहयोग प्राप्त किया है। अन्य राष्ट्रों की उन्नति के समाचार पढ़ने से राष्ट्रीय भाव जाग्रति होते हैं, उन्नति के क्षेत्र में पारस्परिक स्पर्धा के भाव पैदा होते हैं। सुधार, क्रान्ति एवं स्वाधीनता के विचार जनता में समाचार-पत्र ही फैलाते हैं। समाचार-पत्रों के सहयोग से प्रत्येक आन्दोलन साध्य हो जाता है। राजनैतिक विचारधाराओं एवं कलाओं का विस्तार होता है।

भारत प्रजातन्त्रीय देश है। अतः स्वस्थ जनमत का निर्माण करने में समाचार पत्रों का विशेष योगदान है। यही कारण है कि प्रजातन्त्रीय राज्य में ऐसे समाचार-पत्रों की आवश्यकता है जो जनता की आवाज को सही रूप में शासन के समक्ष प्रस्तुत कर सकें। जनता में नागरिकता के उच्च्व गुणों को उत्पन्न कर शासक एवं शासित के मध्यस्थ होकर दोनों में सहानुभूति एवं प्रेम की स्थापना समाचार-पत्र करा सकते हैं।

समाचार-पत्रों द्वारा जनता का एक तरफ इतना उपकार सम्भव है, वहाँ दूसरी ओर उसका दुरुपयोग हानिप्रद भी हो सकता है। कभी-कभी समाचार-पत्र ऐसा मिथ्या द्वेषपूर्ण समाचार प्रकाशित कर देता है कि राष्ट्र एवं जातियों में अपार विषमता उत्पन्न हो जाती है और राष्ट्र पतन के गर्त में चला जाता है। फिर भी समाचार-पत्रों से प्राप्त लाभ, हानि की अपेक्षा अधिक हैं।

समाचार-पत्र प्रत्येक राष्ट्र के लिए अपरिहार्य है। युग की गति से अवगत होने के लिए समाचार-पत्रों से सम्बन्ध बनाए रखना अति आवश्यक है। ये प्रत्येक देश के लिए कल्याणकारी मित्र हो सकते हैं। उनसे जनता की सुरुचि का निर्माण हो सकता। संस्कृति का उत्थान, समाज का सुधार एवं देश में शान्तिमय वातावरण की स्थापना हो सकती है। आधुनिक युग में ये सभ्यता एवं संस्कृति के आधारभूत स्तम्भ हैं। जागृति, सुधार, क्रान्ति स्वतन्त्रता के साधन हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

7. सिनेमा से लाभ-हानि

सिनेमा आज के युग में मनोरंजन का बहुत ही लोकप्रिय साधन है जहाँ छोटे-बड़े, निर्धन-धनी, अढ़ाई-तीन घण्टे अपने चारों तरफ की दुनिया से बेखबर हो परदे पर नाचने वाली तस्वीरों में डूब जाते हैं।

आधुनिक सिनेमा 'मैजिक लेन्टर्न' का ही विकसित रूप है। इसका आविष्कार अमेरिका के महान् वैज्ञानिक एडीसन ने किया था। पहले ये छायाचित्र मूक होते थे, पर अब इनमें वाणी भी साथ-साथ सुनाई पड़ती है। चित्रपट एक मशीन द्वारा संचालित होता है, जो चित्रों को परदे पर बड़ी तेजी से फेंकता है। यह कार्य जो मशीन करती है, उसे प्रोजेक्टर कहते हैं।

पुराने जमाने में मनोरंजन छोटी-छोटी नाटक-मण्डलियों द्वारा नाटकों के अभिनय या कठपुतली आदि से किया जाता था, उसका स्थान अब चित्रपट ने ग्रहण कर लिया है। आज सिनेमा का प्रचार इतना अधिक बढ़ गया है कि किसी भी बड़े या छोटे नगर में इसे देखा जा सकता है।

यह मनोरंजन का इतना लोकप्रिय तथा सस्ता साधन है कि साधारण-से साधारण व्यक्ति इसका आनन्द ले सकता है। देश-विदेश के विषय में जानकारी सर्वसाधारण के लिए सुलभ नहीं, समाचार चित्रों द्वारा देखा और जाना जा सकता है।

चित्रपट ने शिक्षा के क्षेत्र में बड़ी सहायता दी है। भूगोल, विज्ञान और इतिहास आदि विषयों की शिक्षा सफलतापूर्वक चित्रपट द्वारा दी जाती है। चित्रों द्वारा विषय का स्पष्टीकरण अधिक अच्छा और अमिट होता है और मनोंरंजन -ही-मनोरंजन में गम्भीर-से-गम्भीर विषय भी समझ लिये जाते हैं।

अतीत की घटनाओं को बताने तथा सभ्यता और संस्कृति के सम्बन्ध में यह साधन पर्याप्त सफल रहा है। चन्द्रगुप्त, पृथ्वीराज चौहान, कवि कालिदास, सन्त कबीर आदि के चित्रों ने जनता के हृदय में उथल पुथल मचा दी है। सिनेमा विज्ञापन का भी एक सुन्दर साधन है, जिसके व्यवसाय में उन्नति हुई है।

हमारे सिनेमा ने जहां लोगों को मनोरंजन दिया है, वहाँ हानियाँ भी पहुँचायी हैं। एक बार फिल्म अभिनेता तथा निर्माता राजकपूर ने कहा था कि हम सपने बेचते हैं और जनता सपने खरीदती है। सचमुच हमारा सिनेमा स्वप्न लोक ही है जिसमें जीवन की सचाई बहुत कम रहती है।

फिल्म निर्माता वह फिल्म बनाता है जिसमें खूब कमाई हो। मारधाड़, डकैती, लूटमार, सैक्स, भड़कीले दृश्य, अस्वाभाविक स्थितियाँ ये सब क्या देते हैं समाज को? किशोरों में अपराध वृत्ति , यह फिल्मों का ही प्रभाव था कि बम्बई के विद्यालय में आठवीं कक्षा की एक छात्रा पर परीक्षा लिखते समय तेल डालकर आग लगा दी। राह चलती महिलाओं की चेन खींचना, फब्तियाँ कसना, बेहूदी इशारेबाजी करना, इन्हीं फिल्मों की देन है। 'चोरी' वाला गीत भोंडेपन का चरम है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आज जो चारित्रिक भ्रष्टता और पतन दिखाई पड़ रहा है, उसके मूल में ये सिनेमा ही हैं जो प्रतिदिन मनोरंजन के नाम पर मीठा जहर जनता के गले में उंडेल रहे हैं। सरकार और विशेष रूप से सेंसर बोर्ड का काम है कि ऐसी किसी भी फिल्म को 'स्क्रीनिंग' का प्रमाणपत्र न दे जो समाज के लिए किसी भी रूप में उपयोगी नहीं है।

सिनेमा,जनसाधारण तक विचार पहुँचाने का एक बहुत ही सशक्त माध्यम है। आवश्यकता आज इस बात की है कि हमारे फिल्म निर्माता स्वार्थ भावना से ऊपर उठकर देश -हित और समाज-हित के विषय में भी सोचें और 'रुदाली जैसे चित्रों का निर्माण करें जो नई पीढ़ी में अनुशासन, नागरिकता, राष्ट्रीयता, साम्प्रदायिक सद्भाव और सहिष्णुता के भाव भर सकें। तभी हमारे सिनेमा की उपयोगिता और सार्थकता सिद्ध होगी।

8. देशाटन

अपने घर से दूर बहुत दूर, केवल स्थानों को देखने और वहाँ के जन-जीवन को समझने के उद्देश्य से की गयी यात्रा को देशाटन कहते हैं। एक ही जगह पर रहते-रहते व्यक्ति ऊब और एकरसता महसूस करने लगता है; बाहर निकलने पर उसकी ऊब खत्म हो जाती है और उसके अनुभवों का दायरा बढ़ता है।

वास्तव में मनुष्य की यह स्वाभाविक इच्छा होती है। कि वह अन्य देशों के लोगों के रहन-सहन, आचार-विचार से परिचय प्राप्त करे, संसार में स्थित बड़े-बड़े नगरों, वहाँ की अद्भुत वस्तुओं, कला-केन्द्रों और प्राचीन ऐतिहासिक वस्तुओं को देखे। मनुष्य के हृदय की इसी स्वाभाविक प्रवृत्ति ने देशाटन को जन्म दिया है। यह सत्य है कि आजकल विज्ञान और पुस्तकों के सहारे ही घर बैठे देश-विदेश की सारी बातें ज्ञात हो जाती हैं। परन्तु सच्चा अनुभ्रव और सच्चा आनन्द तो बिना अपनी आँखों से देखे नहीं प्राप्त होता। किसी देश अथवा स्थान के विषय में पुस्तकों द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान तो हमारे हृदय में उत्सुकता जगता है कि वह देश सचमुच कैसा होगा? स्थान की क्या विशेषताएँ है? हृदय की यही उत्सुकता देशाटन की मूल प्रेरणा है।

प्राचीन काल में हमारे पास यातायात के ऐसे सुगम साधन नहीं थे। यही कारण था कि पहले लोग यात्रा आदि के लिए अपने घर से बहुत कम निकलते थे। परन्तु लाखों मनुष्य आज आपको देशाटन करते हुए मिलेंगे। सत्य तो यह है कि जिन अगम्य स्थानों पर पहुँचना मनुष्य के लिए असम्भव था, विज्ञान ने अपने बल पर वहाँ मनुष्य को पहुँचा दिया है।

देशाटन से अनेक ऐसे लाभ हैं जो जीवन के लिए परम उपयोगी है। अनुभव के विकास के लिए, जीवन का सच्चा आनन्द प्राप्त करने के लिए , जीवन की विविध परिस्थितयों से संघर्ष की शक्ति प्राप्त करने के लिए , देशाटन आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य भी है। वह हमारी मानसिक तृप्ति का सबसे बड़ा साधन है। देशाटन हमें नये देशों की सैर कराता है, अनेक नई वस्तुएँ हमें मिलती है। भला कश्मीर की रमणीक घाटियाँ, साँची के स्तूप, लन्दन के विशाल भवन, अमरीका के जलप्रपात, पेरिस के राजमार्ग, अजन्ता

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

और ऐलोरा की गुफाएँ इन सबकी छवि का अपनी आँखों से आनन्द लेना किसे रुचिकर प्रतीत नहीं होगा और यह सब देशाटन द्वारा ही सम्भव है।

देशाटन हमारे मनोरंजन का ही साधन नहीं, वरन् उससे हमारी ज्ञानवृद्धि भी होती है। देशाटन से ही हम समझ पाते हैं कि रूस के व्यक्तियों का सामाजिक जीवन किस प्रकार का है? जापान ने किस प्रकार उन्नति की? अमरीका के धन-कुबेर बनने का क्या कारण है? विभिन्न देशों की जलवायु, रहन-सहन, भाषा, परम्परा, सभ्यता और संस्कृति का वास्तविक ज्ञान देशाटन द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

आज वैज्ञानिक साधनों की इतनी सुविधा होते हुए भी हमारे देश में देशाटन के प्रति लोगों की अभिरुचि नहीं है। अन्य देशों में जहाँ देशाटन के लिए लाखों लोग निकलते हैं, वहाँ हमारे देश में यह संख्या अंगुलियों पर गिनने लायक है। हमारे यहाँ देशाटन की कमी का मुख्य कारण अशिक्षा, निर्धनता ओर रुढ़िवादिता है। जीवनयापन में जुटे हुए हमारे यहाँ के नागरिकों को इतना समय ही नहीं मिलता कि वे देशाटन के लिए समय निकाल सकें, फिर भारत का विशाल अशिक्षित समुदाय अपने देश से बाहर की दुनिया का ज्ञान प्राप्त करने में कोई रुचि भी नहीं रखता। आशा है, हमारे देश में ज्यों-ज्यों शिक्षा का विकास होगा और देश की निर्धनता दूर होगी, त्यों-त्यों देशवासी अधिक से अधिक देशाटन की ओर प्रवृत्त होंगे।

9. स्त्री-शिक्षा

नेपोलियान बोनापार्ट कहा करता था कि आप मुझे अच्छी माताएँ दीजिए, मैं आपको अच्छा और चरित्रवान राष्ट्र दूँगा। उसका कहना ठीक ही था। परिवार नागरिक जीवन की प्रथम पाठशाला होती है। परिवार स्त्री या माँ से ही बनता है। अतः परिवार को शिक्षित होने या चरित्रवान बनाने की पहली शर्त है कि उस परिवार की माँ भी शिक्षित हो। इस दृष्टि से स्त्री-शिक्षा का भारी महत्व है!

हमारे देश में स्त्री-शिक्षा को पहले अच्छा नहीं समझा जाता था। जिसके कारण स्त्रियों की दशा बहुत खराब थी। किन्तु बीसवीं शताब्दी के शुरू में स्त्री-शिक्षा के विषय में लोगों ने गम्भीरतापूर्वक विचार किया। कुछ परिवारों की बालिकाएँ पढ़ने-लिखने लगीं। स्वतन्त्रता के बाद भारत में स्त्री-शिक्षा का काफी विकास हुआ है और अब गांवों में भी स्त्री-शिक्षा के महत्व को समझा जाने लगा है।

स्त्री-शिक्षा के अनेक लाभ हैं। शिक्षित स्त्री अपने परिवार को स्वच्छ और शांत वातावरण दे सकती है। वह बच्चों में शुरू से शिक्षा प्रति रुचि जगाकर उनकी नींव मजबूत कर सकती है। शिक्षा प्राप्त कर मनुष्य में दूरदर्शिता और बातों को ठीक से समझने की बुद्धि आ जाती है। अतः शिक्षित स्त्रियाँ अपने पति के कार्यों में भी सहयोग प्रदान कर सकती हैं।

यह जरूरी नहीं कि स्त्रियाँ शिक्षा प्राप्त कर पुरुषों की भाँति नौकरी ही करें। कुछ लोगों का यह तर्क है कि जब स्त्रियों को घर की चहारदीवारी में ही रहना है तो उन्हें स्कूल

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

या कॉलेज की शिक्षा दिलाने से क्या लाभ? किन्तु ऐसा सोचना ठीक नहीं है। पढ़ी-लिखी स्त्री भले ही नौकरी न करे किन्तु शिक्षित होकर घर में रहते हुए भी एक आदर्श परिवार का निर्माण कर सकती है।

बच्चे पर सबसे ज्यादा प्रभाव अपनी माताओं के आचरण का पड़ता है। यदि माता शिक्षित होगी तो वह बच्चों को भी अच्छे संस्कार दे सकेगी। इसके अलावा स्त्री-शिक्षा के द्वारा महिलाओं को घर की सफाई, रोगों से रक्षा और संगीत आदि की शिक्षा भी दी जाती है। इससे महिलाएँ अपने परिवार को स्वच्छ एवं स्वस्थ रखने के तौर-तरीके सीख लेती हैं जो व्यावहारिक जीवन में उनके बहुत काम आते हैं।

स्त्री-शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ यह है कि स्त्रियाँ शिक्षित होकर आत्म-निर्भर हो सकती हैं। बहुत-सी स्त्रियाँ जवानी में ही विधवा हो जाती हैं उनकी आजीविका का साधन कोई नहीं होता। ऐसी स्थिति में यदि स्त्री शिक्षित हो तो उसे अपने सम्बन्धियों का मुँह न ताकना पड़े और वह नौकरी करके अपना जीवन सम्मानपूर्वक बिता सके। इस दृष्टि से स्त्री-शिक्षा बहुत आवश्यक है।

स्त्री-शिक्षा की कुछ बुराइयाँ भी हैं। इसका सबसे बड़ा दोष यह है कि शिक्षा प्राप्त करके अधिकांश महिलाएँ फैशनपरस्त और अत्याधुनिक विचारों की बन जाती हैं। सादे जीवन से उन्हें नफरत हो जाती है। अँग्रेजी की शिक्षा के कारण उनका पश्चिमी देशों के रीति-रिवाजों के प्रति आकर्षण बढ़ जाता है। उन्हें विदेशों की जानकारी अपने देश से ज्यादा होती है, इसलिए उन्हें अपने देश की सभ्यता और संस्कृति बुरी लगने लगती है। ऐसी शिक्षित महिलाओं से तो अनपढ़ महिलाएँ ही अच्छी हैं।

अत: महिलाओं को अंग्रेजी शिक्षा के बजाय जीवनोपयोगी शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि स्त्री शिक्षा से लाभ होने के बजाय हमारी सामाजिक व्यवस्था ही न चरमरा जाए। कुल मिलाकर स्त्री-शिक्षा समाज परिवार एवं देश के लिए बहुत ज्यादा उपयोगी है।

10. मेरा प्रिय नेता

यह सत्य है कि संसार में जो भी जन्म लेता है, वह अन्त में मृत्यु को प्राप्त होता है। किन्तु जीवन उन्हीं का सफल है जो अपने अच्छे कर्मों के कारण मरने पर भी अमर बने रहते हैं। महात्मा गांधी, एक ऐसे ही व्यक्ति थे। आज वह हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनका नाम युग-युग तक याद किया जाएगा।

बापू का पूरा नाम मोहनदास कर्मचन्द गाँधी था। 2 अक्टूबर, 1866 को काठियावाड़ के पोरबन्दर राज्य में गाँधीजी का जन्म हुआ था। आपके पिता कर्मचन्द गाँधी पोरबंदर राज्य के दीवान थे गाँधी जी की माता पुतलीवाई का झुकाव धार्मिकता की तरफ होने से बालक गाँधी पर इसका अच्छा असर पड़ा। बचपन से ही गाँधी सत्य और अहिंसा के भक्त तथा अपने से बड़ों के प्रति श्रद्धावान रहे। गाँधी जी का जीवन साधारण था। 1887 में मैट्रिक पास करके आप भावनगर कालेज में भर्ती हो गए, किन्तु एक वर्ष बाद ही गाँधीजी बैरिस्ट्री पढ़ने इंग्लैण्ड चले गए।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बचपन में गाँधीजी को कुसंगति में पड़ने से माँस, बीड़ी, चोरी आदि की आदत पड़ गई थी किन्तु विलायत जाने से पूर्व माँस, मदिरा आदि से बचने के लिए गाँधी जी ने अपनी माता के सम्मुख कठिन प्रतिज्ञा की और उसे अन्त तक निभाया। 1891 में गाँधीजी बैरिस्ट्री पास करके स्वदेश लौट आए।

बम्बई में गाँधीजी ने वकालत प्रारम्भ की किन्तु असफल रहे। गाँधीजी को यह कार्य अपने बूते से बाहर जान पड़ा। अतएव वे नौकरी की तलाश में रहे। सौभाग्यवश आपको अफ्रीका की एक फर्म के मुकदमें की पैरवी के लिए जाना पड़ा। अफ्रीका की अदालत में गाँधी पगड़ी धारण किए ही खड़े रहे। पगड़ी उतारने के लिए जब गाँधीजी से कहा गया तो वे उठकर चले गए। उसी दिन अफ्रीका में भारतीय आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ जिसने कि समय आने पर अपना प्रचण्ड रूप धारण किया। अफ्रीका में हुए अपमान ने इस आन्दोलन को प्रोत्साहित किया। रेल, मोटर, जहाज तथा राजपथ पर काले-गोरे के भेदभाव ने इनके हृदय को भारी ठेस पहुँचाई।

यही नहीं, अफ्रीका की सरकार ने वहाँ रहने वाले भारतीयों के विरुद्ध ऐसे काले कानून बनाए जिससे कि हिंदुस्तानी मोल लिए गुलामों से भी हीन हो गए। माहात्मा गाँधी का सात्विक हृदय गोरी सरकार के इन दानवीय कार्यों को सहन नहीं कर सका। बापू ने इसके विरुद्ध जबरदस्त सत्याग्रह किया। इसके लिए उन्हें भीषण यातनाओं का सामना करना पड़ा, पर बापू नही घबराए। संसार में हमेशा सत्य की ही विजय होती है, बापू का कार्य सत्य के धरातल पर अवलम्बित था। अत: गोरी सरकार के विरुद्ध गाँधीजी ने पूर्ण विजय प्राप्त की।

त्याग और कठोर अग्नि में तपे गाँधीजी का स्वदेश में स्वागत किया गया। तब भारत एक गुलाम देश था, अँग्रेजों के नृशंस हाथों में वह पिसा जा रहा था। बापू के सामने भारत पहुँचते ही अनेक समस्याओं के पुलिन्दे आने लगे। गुलाम भारत अपने नेता का इससे ज्यादा क्या स्वागत करता? देश के महान् भावी नेता बापू ने उन समस्याओं को अपने अमोध शक्ति धारक हाथों से सुलझाया। बिहार में नील की खेती करने वाले कृषकों पर किए गए गोरों के अत्याचारों को आपने शान्त किया। अहमदाबाद में मजदूरों की समस्याओं को सुलझाया।

राजनैतिक अधिकार पाने की आशा से आपने प्रथम महायुद्ध में ब्रिटिश सरकार की पूर्ण रूप से सहायता की। इस सेवा का पुरस्कार विलायत सरकार की ओर से रौलट एक्ट जैसा काला कानून दिया गया। भारतीयों पर यह वज्र प्रहार था। गाँधीजी के नेतृत्व में देश ने इसके प्रतिशोध स्वरूप भीषण अन्दोलन किया। जलियाँ वाला गोलीकाण्ड रौलट एक्ट का ही परिणाम था। देश के लाखों नेता जेल में ठूँस दिए गए। गाँधीजी को भी छ: साल की सजा हुई किन्तु स्वास्थ्य बिगड़ने पर छोड़ दिए गए।

1922 में हुए दिल्ली के भीषण हिन्दू-मुस्लिम दंगों को आपने शान्त किया। इसके प्रायश्चित स्वरूप 21 दिन का उपवास भी आपने किया। सन् 30 में नमक कानून तोड़ने के लिए बापू ने प्रसिद्ध डाँडी यात्रा की। गाँधीजी के नेतृत्व में इस आन्दोलन ने फिर जोर

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पकड़ा। सरकार द्वारा अत्यधिक दबाने पर भी आन्दोलन की प्रचण्ड अग्नि दब न सकी। अन्त में सरकार को समझौता करना पड़ा। साम्प्रदायिक निर्णय में अछूतों को विशेषाधिकार के विरुद्ध आपने फिर आन्दोलन किया तथा सफलता प्राप्त की । गोलमेज परिषद् में भी गाँधी जी ने भाग लिया किन्तु अन्य संस्थानों के साम्प्रदायिक अडंगे से आपको निराश लौटना पड़ा।

बापू के जीवन का ध्येय सदा रचनात्मक कार्य रहा। उन्होंने देश के प्रत्येक व्यक्ति को चर्खा चलाने, स्वदेश निर्मित वस्तुओं से प्रेम करने तथा विदेशी वस्तु का बहिष्कार करने की राय दी। प्रत्येक आन्दोलन में विदेशी वस्तु का बहिष्कार किया जाता था। हरिजनोद्धार बापू का सर्वप्रथम कार्य था। हरिजनों को सवर्णों के अपमानजनक व्यवहार से बचाकर बापू ने अछूतों को गैर हिन्दू होने से बचा लिया। अपनी अमूल्य वाणी से बापू ने समाज की आँखें खोली। आपने हरिजन आन्दोलन के लिए हरिजन-पत्र भी निकला।

हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए बापू को अपने प्राणों की बाजी लगा देनी पड़ी। हिन्दू-मुस्लिम बापू की आँखों के दो तारे थे। दिल्ली में बापू ने इस एकता के लिए आमरण अनशन किया। 30 जनवरी, 1948 की संध्या को 4 बजे एक राष्ट्रघातक हिन्दू के द्वारा बापू के भौतिक प्राण हर लिए गए। उस हत्यारे ने भारत का ही नहीं,मानवता का सच्चा पैगम्बर इस दुनिया से छीन लिया।

आज गांधीजी हमारे बीच नहीं रहे, किन्तु उनके अमर सिद्धान्त चिरस्थायी रहेंगे। गांधीजी का यह कथन अक्षरश: ठीक है, "गाँधी मर सकता है, पर गाँधीवाद अमर रहेगा," सत्य, अहिंसा गाँधीवाद के दो स्तम्भ थे। कौन कह सकता था कि सत्य और अहिंसा जैसे आदर्श अस्त्र आज की राजनीति के दो शस्त्र बन सकते हैं जिनके आगे आग उगलती तोपें कुछ नहीं कर सकतीं तथा इन अस्त्रों के द्वारा ही 15 अगस्त का वह दिन देखने को मिला, जब हम स्वतन्त्र हुए।

बापू केवल इसलिए प्रसिद्ध हैं कि वे विश्व के महान पुरुष थे। अपने युग के वे शान्तिदूत थे। विश्व को उन्होंने सत्य और अहिंसा के दर्शन कराए। अपने युग को उन्होंने नयी प्रेरणा दी। उनके सिद्धान्तों तथा कार्यों में विश्व-कल्याण निहित था। यदि आज बापू के पथ का अनुसरण करें, तो यह आज का सारा बवंडर तृतीय महायुद्ध की काली भीषण घटायें क्षण-भर में विलीन हो जाएँ।

11. उगादि

मनुष्य के जीवन में त्योहारों का बड़ा महत्व है। जीवन में नित्यप्रति आने वाली समस्याओं और परेशानियों से ऊब कर हर मनुष्य अपना मनोरंजन करना चाहता है। ताकि उसे कुछ समय के लिये झंझटों से छुटकारा मिल सके और वह हँसी-खुशी के माहौल का आनन्द उठा सके। समय-समय पर मनाये जानेवाले त्योहार इस प्रकार के मनोरंजन का सबसे अच्छा मौका देते हैं। मनुष्य इन त्योहारों पर फिर से तरोताजा हो जाता है और उसके जीवन में पुनः नये उत्साह का संचार होता है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

दुनिया के किसी भी हिस्से में ऐसा कोई मानव-समाज नहीं है जो कोई-न -कोई त्योहार न मनाता हो। मानव के विकास के इतिहास के साथ ही त्योहारों का इतिहास भी जुड़ा हुआ है।

भारत में कर्नाटक और आन्ध्र प्रदेश के निवासी उगादि का पर्व बड़े उल्लास और धूम-धाम के साथ मनाते हैं। यह नये वर्ष का पहला दिन माना जाता है। नये वर्ष का आरम्भ मनुष्य जीवन में नयी आशाओं को जन्म देता है, इसलिए भी नववर्ष का त्योहार विशेष महत्व का है।

उगादि का त्योहार प्रत्येक वर्ष के चैत्र मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के दिन मनाया जाता है। फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की समाप्ति के साथ ही पहला वर्ष पूरा हो जाता है।

उगादि के दिन प्रत्येक परिवार के लोग सवेरे जल्दी उठ कर तेल मालिश करके स्नान करते हैं और शरीर पर नये वस्त्र धारण करते हैं1 पूजा-पाठ होता है, इसके बाद नीम के पत्ते आम, ईख, केले के टुकड़े, गुड़, नमक तथा इमली को एक साथ घोट कर एक चटनी बनायी जाती है जिसे परिवार के सभी लोग चखते हैं। इस चटनी में कई प्रकार के स्वाद होते हैं जो जीवन के कड़वे और मीठे अनुभवों की याद दिलाते हैं। सबसे पहले इस चटनी को खाने का मतलब यह है कि हम भविष्य में आनेवाले सुखों और दु:खों का स्वाद इस चटनी की भाँति समझें और सुख और दु:ख में एक समान रहें।

यों तो उगादि के दिन कई प्रकार के भोजन बनते हैं किन्तु आन्ध्र प्रदेश के परिवारों में विशेष रूप से 'बूरियाँ''बोब्बट्लु', 'बड़ा' और 'आवड़ा'बनाये जाते हैं। दोपहर को पक्वान्नों के साथ भोजन तथा उसके बाद आराम, भाई बन्धुओं से मिलन और गोष्ठी आदि के कार्यक्रम होते हैं।

शाम को सभी लोग मन्दिरों में जाकर भगवान की पूजा करते है और नये वर्ष का पंचांग सुनते हैं। पंचांग का सुनना इस त्योहारकी प्रमुख रस्म है। प्रत्येक गाँव और नगर में मन्दिरों के पुजारी लोगों को पंचांग सुनाते हैं।

रात्रि में हरिकथा या नाटक, प्रदर्शनी आदि के रूप में इस शुभ पर्व की समाप्ति होती है।

12. विज्ञान के हानि-लाभ

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान ने संसार में अनेक परिवर्तन कर डाले हैं। विज्ञान के चमत्कारों ने प्रकृति तक को पीछे खदेड़ दिया है। विज्ञान ने मानव-जीवन को अधिकाधिक आनन्दमय तथा मधुर बना दिया है। इसने अन्धे को आँखें, बहरों को कान तथा पंगु को पैर प्रदान किये हैं। वह मछली के समान यदि समुद्र पर तैर सकता है तो आकाश में पक्षियों के समान उड़ सकता । तात्पर्य यह है कि विज्ञान ने मानव-जीवन को महत्वपूर्ण क्रान्ति दी है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि की उन्नति के बिना देश उन्नति नहीं कर सकता है। विज्ञान की सहायता से इस क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई है। प्रत्येक कार्य मशीनों की मदद से हो जाने के कारण श्रम की बचत होती है और दैवी प्रकोपों से बचा जा सकता है। ट्रैक्टर, नलकूप, वैज्ञनिक खाद आदि इसके उदाहरण हैं। विज्ञान ने भूखों को भोजन, नंगों को वस्त्र और दु:खी मनुष्यों को सुख देने का भरसक प्रयत्न किया है।

विद्युत-शक्ति का आविष्कार साधारण-से-साधारण मानव के लिए एक उपयोगी साधन लेकर उपस्थित हुआ है। विद्युत द्वारा घर का अँधेरा तो भगाया ही जाता है, इसके अतिरिक्त दैनिक जीवन में काम आने वाली अनेक वस्तुएँ विद्युत शक्ति द्वारा परिचालित होती हैं। आवश्यकतानुसार घरों को ठंडा या गरम किया जा सकता है, इसके अतिरक्त रेडियो, टेलीविजन द्वारा मनोंरजन भी किया जा सकता है!

चिकित्सा-क्षेत्र में विज्ञान ने उल्लेखनीय कार्य किया है। विज्ञान द्वारा ऐसे अनेक रोगों पर विजय प्राप्त कर ली गई है, जिनकी चिकित्सा असम्भव थी। एक्सरे (X-Ray) व रेडियम चिकित्सा से शरीर के भीतर छिपे हुए रोगों का पता लगाकर सरलता से चिकित्सा कर दी जाती है। जन्मान्ध व्यक्तियों को नेत्रदान देना कुछ कुछ कम महत्व नहीं रखता।

विज्ञान के द्वारा मानव को मनोरंजन के नये-नये साधन उपलब्ध हुए हैं। दिनभर कठोर परिश्रम करने के बाद प्रत्येक मानव मनोरंजन का साधन ढूँढने का प्रयत्न करता है, सिनेमा इस क्षेत्र में वरदान है। मोटर, जलयान, वायुयान, रेलें आदि ने समस्त संसार को बहुत समीप लाकर बैठा दिया है।

जहाँ विज्ञान ने मानव को अनेक वरदान दिये और उसका जीवन स्वर्ग बना दिया, वहाँ उसके जीवन को अभशप्त बनाने में भी उसका हाथ कुछ कम नहीं रहा है। उद्जन और हाइड्रोजन बमों के द्वारा संसार को नष्ट किया जा सकता है। प्राणघातक गैसों द्वारा सैकड़ों मनुष्यों के प्राण लिए जा सकते हैं।

विज्ञान के युग में पला मानव बड़ा आश्रित तथा आलसी हो गया है। उसे हाथ से काम करना बड़ा अखरता है और पग-पग पर आश्रय चाहता है। उसका शारीरिक बल दिन-प्रतिदिन क्षीण होता जा रहा है। इसके अतिरिक्त वह पूर्णत: भौतिकवादी एवं बुद्धिवादी बन गया है।

हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जहाँ विज्ञान ने सुविधाएँ दी हैं, वहाँ प्राणघातक वस्तुएँ भी। विज्ञान का चाकू फल काटने के लिए बना है, पर यदि उससे मनुष्य फल न काट कर आत्मघात कर ले तो इसमें चाकू या विज्ञान का दोष नहीं। विज्ञान की उपलब्धि मानव हित के लिए है, यह मानव पर है कि उसे किस प्रकार उपयोग करता है। यदि संसार विज्ञान का सदुपयोग करता गया तो वह दिन दूर नहीं, जब सम्पूर्ण विश्व स्वर्ग बन जायेगा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

13. राष्ट्रीय एकता

इस पूरी सृष्टि का सृजन तो एक ही है, किन्तु बुद्धिजीवी मानव ने अपनी सूझ-बूझ और बुद्धि के अनुसार पृथक्-पृथक् सम्प्रदाय खड़े कर दिये और इस प्रकार धीरे-धीरे समस्त विश्व, खण्डों तथा विभागों में बँट गया। धर्मों, जातियों, सम्प्रदायों और वर्गों तक ही यह प्रवृत्ति सीमित न रही, वरन् इससे भी आगे बढ़कर यह वर्ण और भाषा तक आ पहुँची। भारत जैसे देश में तो यह प्रवृत्ति राष्ट्रीय एकता के लिए सबसे अधिक घातक सिद्ध हुई।

हमारा देश स्वाधीन हो गया, इसका हमें गर्व है, किन्तु कोरी भावुकता से हमारा कल्याण नहीं हो सकता। इसके लिए हममें आत्मबल की आवश्यकता है, प्रगाढ़ देशभक्ति की आवश्यकता है तथा आवश्यकता है अटूट जातीय संगठन की। इसके बिना हमारी स्वाधीनता खोखली रह जायेगी और हमारी संकीर्णताएँ अपनी चरम सीमा को पहुँच कर हमें निहत्थों की भाँति विश्व की अन्य शक्तियों के समक्ष नतमस्तक कर देंगी, जो हमारे शौर्य और पराक्रम के लिए अत्यन्त लज्जा की बात होगी। भला कौन ऐसा भारतीय होगा जो अपनी इस हीन अवस्था को बरदाश्त कर सकेगा?

सृष्टि के आदि में मानव अन्य पशुओं के समान जंगल में रहा करता था। उस समय मानव-समाज में संगठन था, एकता थी, क्योंकि उसे अपनी रक्षा जंगली पशुओं से करनी होती थी और संगठन शक्ति के प्रयोग द्वारा जंगली जानवरों का शिकार करके वह अपना पेट पालता था। परन्तु जैसे-जैसे उसके मस्तिष्क का विकास होता गया, वह व्यक्तिपरक होता गया, उसके स्वार्थ बढ़ते नये और वह अन्य लोगों से अलग रहकर कार्य करने की बात सोचने लगा। अनेक जातियाँ, सम्प्रदाय, वर्ग आदि बने और पूरी जाति खण्डों में विभाजित हो गई।

इतना ही नहीं, प्रान्तीयता की संकीर्ण भावना ने जोर पकड़ा। वास्तविकता तो यह है कि शासकों ने शासन की सुविधा के लिए इस प्रकार देश को प्रान्तों में विभाजित किया, किन्तु आगे जाकर यही विभाजन मानव-जाति के लिए घातक सिद्ध हुआ।

केवल प्रान्तीयता की यह अनोखी भावना ही तो नहीं, इससे भी आगे बढ़कर कुछ लोगों ने भाषा को संकीर्णता का आधार बनाया। प्रान्तों के अनुसार पन्द्रह भाषाओं को संविधान में स्थान दिया गया और राजभाषा के पद पर हिन्दी को आसीन किया गया, ताकि जन-मानस की आवाज सुनी जा सके। हिन्दी को यह स्थान इसलिए मिला क्योंकि एक तो वह सरल, बोधगम्य और अल्प समय में सीखी जा सकती है; फिर भारत के रहने वाले 62 करोड़ लोग इसे बोलते हैं और इसके अलावा अन्य भाषा-भाषी इसे भली प्रकार समझ और लिख-पढ़ लेते हैं। भावनात्मक एकता के लिए सर्वग्राह भाषा को अपनाना आवश्यक था और हिन्दी इसके लिए सर्वाधिक उपयुक्त थी।

अब समय आ गया है, जबकि हमें संकीर्ण और संकुचित भावना को त्यागना होगा और 'भारतीय' शब्द की संज्ञा से अपने को विभूषित करना होगा। गत चीनी और पाकिस्तानी आक्रमणों ने हमें राष्ट्रीय एकता में बाँधने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। उस समय

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हमने अपने समस्त भेद भुलाकर तन, मन, धन, न्यौछावर करने के गौरव का अनुभव किया था।

राष्ट्र-कल्याण और मानव-बन्धुत्व के लिए हम भारतीयों को यह उचित है कि अपने आपसी भेद-भाव भुलाकर राष्ट्रीय एकता की डोर को अधिक-से-अधिक मजबूत बनाएँ। इसी में हमारा और समस्त विश्व का कल्याण निहित है।

14. विद्यार्थी और अनुशासन

विद्यार्थी-जीवन मानव का स्वर्णकाल है। वह जितना पवित्र है, उतना महान् भी है। यह वह काल है जिसका स्थायी प्रभाव पड़ता है। इस समय बुद्धि बहुत ही मृदु होती है, उसे जैसे चाहे मोड़ा जा सकता है। अनुशासन इस जीवन का कुशल राजा है जो सतत अपने औजारों को लेकर इसे गढ़ने, बनाने और सँवारने में जुटा रहता है। अनुशासन विद्यार्थी जीवन का प्राण है। अनुशासनहीन विद्यार्थी न तो देश का सभ्य नागरिक बन सकता है और न अपने व्यक्तिगत जीवन में ही सफल हो सकता है।

आज विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता अपनी चरम सीमा पर है। नित्य समाचार-पत्रों में इनकी कारगुजारियों का वर्णन प्रकाशित होता है कि अमुक कॉलेज के विद्यार्थी ने नकल करते हुए अध्यापक द्वारा पकड़ लिए जाने पर उस पर हाथ छोड़ दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हंगामा मचाया आदि।

अध्यापकों या गुरुजनों के प्रति जो श्रद्धा या भक्ति की भावना और आस्था थी, वह समाप्तप्राय है। बेबात की बहस करना, अनावश्यक रूप से वाद-विवाद में पड़ना, कक्षा में अवज्ञा दिखाना आदि वे अपना गौरव और अधिकार समझते हैं। इन सबके लिए कोई कारण तो होगा ही। आखिर अनुशासनहीनता क्यों प्रवेश कर गई? इन प्रश्नों पर विचार करने पर हमें निम्नलिखित कारण दृष्टिगोचर होते हैं-

(क) विभिन्न राजनीतिक संस्थाओं द्वारा अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए विद्यार्थी-वर्ग से सम्बन्ध स्थापित करना और उन्हें तोड़-फोड़ के लिए प्रेरित करना।

(ख) सामाजिक प्रतिक्रियाओं का अप्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष प्रभाव।

(ग) शिक्षण-संस्थाओं का अयोग्य व्यक्तियों द्वारा संचालन और अध्यापकों का अपना पद कायम रखने के लिए विद्यार्थियों का मनमाने रूप में प्रयोग।

(झ) विद्यार्थियों और अध्यापकों का आपस में निकट सम्बन्ध न होना और वर्ग में अधिक छात्रों का रहना।

(ड) दोषपूर्ण शिक्षा-परीक्षा प्रणाली।

(च) नेताओं द्वारा सदैव शिक्षा-प्रणाली की आलोचना करते रहना।

(छ) सभी प्रकार की प्रतिभाओं के विद्यार्थियों को एक जैसी शिक्षा देने की व्यवस्था का होना।

(ज) अभिभावकों में अभिरुचि तथा कर्त्तव्य -पालन का अभाव।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

यों तो राजनीतिक संस्थाएँ किसी-न किसी प्रकार अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए प्रयत्नशील रहती हैं। प्रौढ़ मस्तिष्कों से अपने कार्यो में सहायता पाना उनके लिए कठिन होता है। विद्यार्थी उनकी दूषित चालों को नहीं समझ पाते ओर उनके शिकार हो जाते हैं। अत: छात्रों की ओट में आन्दोलन कराए जाते हैं और तोड़-फोड़ की कार्यवाहियों के लिए उन्हें प्रेरित किया जाता है।

ऐसी संस्थाओं को जिनका चारित्रिक स्तर ऊँचा नहीं, उन्हें कदापि विद्यालय चलाने की अनुमति न दी जाय और संस्थाओं को भी चाहिए कि यदि वे अपने विद्यार्थियों में अनुशासन लाना चाहती हैं तो कदापि घृणित राजनीति में उन्हें न प्रवेश करने दें।

अध्यापक केवल कुछ घण्टे वर्ग लेकर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री न समझ बैठें। उन्हें चाहिए कि वे प्रत्येक छात्र के जीवन के अन्दर झाँकने का प्रयत्न करें। उन्हें अपने विश्वास में ले आयें और सहानुभूतिपूर्वक उनकी समस्याओं पर विचार कर निदान खोजें।

शिक्षा-प्रणाली में थोड़ा सुधार हो जाने से अनुशासन में अन्तर पड़ सकता है। छात्रों की प्रत्येक मास परीक्षा ली जाये और उनके व्यवहार और मासिक रिपोर्ट के आधार पर ही अगली कक्षा में प्रवेश दिया जाय।

इनके अतिरिक्त यदि अभिभावक भी अपने पुत्र-पुत्रियों पर ध्यान देंगे और उनके कार्य-कलापों पर नजर रखेंगे तो यह समस्या इतनी भयंकर प्रतीत न होगी, जैसा कि हम आज समझते हैं।

जाति, समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए विद्यार्थियों को अनुशासन परमावश्यक है। आज का विद्यार्थी कल का सभ्य नागरिक नहीं हो सकता। इसके लिए हमें अपनी शिक्षा-व्यवस्था में आमूल परिवर्तन करने होंगे। देश के नागरिकों का निर्माण अध्यापकों के हाथ में है। उन्हें भी अपने कर्तव्य का पालन करना होगा, उनके चारित्रिक विकास की ओर ध्यान देना होगा। यदि इस दिशा में प्रयत्न हुआ तो निश्चय ही हमारे छात्र योग्य नागरिक बनेंगे।

15. मनोरंजन के साधन

मनोरंजन जीवन की कला है। इसके बिना जीवन का स्रोत नीरस और शुष्क है। संघर्षो की पगडण्डी पर मनोरंजन ही जीवन का सबसे बड़ा सहचर है जोकि हमारे जीवन की गति को नवीन स्फूर्ति और आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करता है। सच पूछा जाय तो मनोरंजन हमारे मन का भोजन है। जिस प्रकार शरीर को पुष्ट बनाने के लिए उत्तम भोजन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मस्तिष्क के विश्राम के लिए मनोरंजन की आवश्यकता होती है।

मनोरंजन हमारे जीवन की सरसता का उद्गम स्थल है। यदि मानव समाज मनोरंजन से वंचित कर दिया जाय तो हमारा जीवन सर्वदा उदासीन और नीरस बन जायेगा। मनोरंजन मस्तिष्क के साथ-साथ शरीर के लिए भी इतना ही आवश्यक है। शरीर की स्वास्थ्य वृद्धि के लिए मनोरंजन परम सहायक सिद्ध हुआ है। मनोरंजन के विभिन्न अंग खेलकूद, अध्ययन

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

एवं सुन्दर दृष्यों के अवलोकन से हमारा हृदय असीम उल्लास का अनुभव करता है जिससे शरीर के रक्त संचार को नीवन गति और स्फूर्ति मिलती है। इससे हमारे स्वास्थ्य की अभिवृद्धि होती है।

मनोरंजन की इसी महिमा की बदौलत बहुत प्राचीन काल से मानव समाज मनोरंजन के साधनों का उपयोग करता आया है। चाहे मानव समुदाय सभ्य रहा हो अथवा असभ्य; मनोरंजन के साधन सदैव उपलब्ध रहे हैं। इतना अवश्य है कि सभ्यता के विकास तथा मानव रुचि के परिवर्तन के साथ-साथ मनोरंजन के साधन भी बदलते रहे हैं। शिकार खेलना, अस्त्र-शस्त्र चलाना, रथ दौड़ाना आदि क्रियाकलाप प्राचीन समय में मनोरंजन के प्रमुख साधन थे। लेकिन आजकल युग परिवर्तन के साथ मनोरंजन के साधन भी बदल गये हैं।

सिनेमा आधुनिक युग के मनोरंजन का सर्वोत्कृष्ट साधन है। सिनेमा की लोकप्रियता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। धनी, निर्धन, मालिक, मजदूर, विद्यार्थी अध्यापक, पिता, पुत्र, स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध सभी की भारी भीड़ सिनेमाघरों में रहती है। सत्य तो यह है कि दिन भर के परिश्रम के पश्चात् थकीमाँदी जनता के लिए यह बड़ा सुगम और खस्ता साधन है। रेडियों दूरदर्शन तो मनोरंजन का जादू भरा पिटारा है। इसे कमरे में रख संसार भर के सुन्दर गाने, महान् राजनीतिज्ञों के भाषण, प्रतिदिन के समाचार, कविता, कहानी, गीत, संगीत सभी कुछ सुन-देख सकते हैं। फोटोग्राफी मनोरंजन का उत्तम साधन है। कैमरे द्वारा मनोहर दृश्यों के सुन्दर चित्र खींचे जा सकते हैं। भ्रमण के समय यह बड़ा सुन्दर मनोरंजन है।

साहित्य हमारे मस्तिष्क को अवर्णनीय आनन्द प्रदान करता है तथा चित्त को प्रफुल्ल बनाता है। जब कभी मस्तिष्क कार्य करते-करते थक आये तो आप एक रोचक उपन्यास, कहानी अथवा कविता लेकर बैठ जाइए और अपनी मानसिक थकावट के साथ अपने को भी भूल जाइए। पत्र-पत्रिकाएँ रेल आदि की यात्राओं में समय को छोटा करने में बड़ी सहायता प्रदान करती हैं। साहित्य के मनोरंजन से मस्तिष्क को आनन्द तो मिलता ही है। साथ में ज्ञान की अभिवृद्धि भी होती है।

ललित कलाएँ मनोरंजन का प्रिय विषय हैं। संगीत, नृत्य, अभिनय, चित्रकला हमारे मस्तिष्क की भूख नहीं वरन् प्यास को तृप्त करने वाली सुधा है। संगीत के मधुर स्वरों में आत्म-विस्मृत करने की अनुपम शक्ति है। यही कारण है कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने खाली समय में संगीत की एकाध कड़ी अवश्य गुनगुनाता है।

खेल भी मनोरंजन के प्रिय विषय हैं। गर्मी की सांय-सांय करती लू में घर बैठे-बैठे ताश, केरम, शतरंज, चौपड़ आदि खेले जाते हैं। शतरंज तो इतना प्रिय खेल है कि इसे खेलते हम अपने आपको भूल जाते हैं। क्रिकेट, हॉकी, टेनिस, फुटबॉल आदि खेल भला किसने न खेले होंगे! जाड़े की शीतल जलवायु में प्रत्येक खेल के मैदानों में आप छात्रों को क्रिकेट खेलता हुआ पायेंगे। टेनिस संध्या के मनोरम वातावरण का सुन्दर खेल है। फुटबॉल तो प्रतिदिन ही प्रभात के मधुर काल में खेली जाती है। इन खेलों के खेलने में खेलने वालों का मनोरंजन होता है, स्वास्थ्य वृद्धि होती है तथा देखने वालों का भी अच्छा मनोरंजन हो जाता है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मेले, तमाशे, भ्रमण, यात्रा, देशाटन मनोरंजन के अच्छे साधन हैं। इनसे हमारा मनोरंजन तो होता ही है, साथ ही व्यावहारिक ज्ञान भी बढ़ता है। देशाटन द्वारा विविध स्थान देखने को मिलते है। भ्रमण और यात्रा में जो आनन्द आता है, वह केवल अनुभव जनित है। सर्कस में बन्दर का साइकिल चलाना, तारों और फुटबॉल पर नृत्य करना, लकड़ी के कुएँ में मोटर साइकिल चलाना आदि सर्कस के विविध क्रिया-कलाप हमें मनोरंजन की उत्कृष्ट सामग्री प्रदान करते हैं।

जीवन के अन्य कार्यों की भांति मनोरंजन का उपयोग भी उचित मात्रा में होना चाहिए। सीमा से अधिक मनोरंजन समय जैसी अमूल्य सम्पत्ति को नष्ट करता है। अधिक उपन्यास पढ़ना, प्रतिदिन सिनेमा देखना, प्रत्येक समय संगीत में ही लगे रहना, ये सब बातें मनोरंजन नहीं कही जा सकती हैं। ये तो मनोरंजन के साधन का दुरुपयोग है। इनसे जो हानि होती है, हम सब उससे भली-भाँति अवगत हैं। हमें चाहिए कि उचित मात्रा में मनोरंजन करते हुए अपने जीवन को सरस और उल्लसित बनाएँ।

16. सह-शिक्षा

छात्र व छात्राओं का एक साथ एक ही भवन में, एक ही अध्यापक द्वारा शिक्षा ग्रहण करना सहशिक्षा है। सहशिक्षा में छात्र-छात्राएँ साथ-शिक्षा प्राप्त करते हैं। पाश्चात्य देशों में सर्वप्रथम सहशिक्षा की पद्धति को अपनाया और ज्यों-ज्यों भारत पर उन देशों का प्रभाव पड़ा त्यों-त्यों यहाँ भी सहशिक्षा की ओर शिक्षाशास्त्रियों का ध्यान गया और अँग्रेजी शासनकाल में सर्वप्रथम भारत में सहशिक्षा का श्रीगणेश हुआ।

भारत जैसे गरीब देश के लिए सहशिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण और लाभदायक सिद्ध हो सकती है। सहशिक्षा से स्त्री शिक्षा को भी प्रोत्साहन मिलता है और व्यय भी कम होता है। एक ही शिक्षालय में छात्र-छात्राओं के पढ़ने से एक बहुत बड़ा आर्थिक लाभ है। सहशिक्षा में एक ही भवन में उतने ही अध्यापकों तथा अन्य वैसी ही व्यवस्था में सुचारु रूप से कार्य चल सकता है। इस प्रकार आर्थिक बचत होती है अन्यथा हमारे देश के लिए शिक्षा एक समस्या बन जाय। अत: आर्थिक दृष्टि से सहशिक्षा अत्यन्त ही लाभप्रद है।

सहशिक्षा से आपस में सहयोग की भावना का विकास होता है। छात्र-छात्राएँ एक से वातावरण में रहकर एक-दूसरे के विचारों,भावनाओं और स्वभाव से परिचित होकर अपने को परस्पर अनुकूल बनाने में सफल होते हैं और इस प्रकार दृढ संगठन की स्थापना होती है। नारी अपने को पुरुष के बराबर समझकर पुरुष के समान कार्य करने में सफल होती हैं और इस प्रकार नारी की हीन भावना का ह्रास होता है। उन्हें अपने अस्तित्व का ज्ञान होता है। सहशिक्षा उनमें नारीत्व का विकास करती है। वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों को भली प्रकार पहचान पाती हैं। इस प्रकार सहशिक्षा से परस्पर सहयोग और स्वतन्त्रता की भावना उत्पन्न होती है।

सहशिक्षा से एक शिष्ट वातावरण का निर्माण होता है। छात्र,छात्राओं के सामने अशिष्ट व्यवहार करने में संकोच करते हैं। हर छात्र-छात्रा की दृष्टि में सम्मानित बनना चाहता है। वह किसी भी छात्रा से अपनी आलोचना नहीं सुन सकता। फलत: वह कभी ऐसा अवसर

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आने ही नहीं देता कि किसी को उसकी आलोचना करनी पड़े। इनमें छात्र शिष्ट होता चला जाता है।

इस प्रकार सहशिक्षा छात्र-छात्राओं के मध्य एक शिष्ट वातावरण को जन्म देती है। सहशिक्षा से युवक-युवती के बीच मिथ्या आकर्षण सर्वदा साथ-साथ रहने से समाप्त हो जाता है और इसके किसी प्रकार के अनिष्ट की आशंका नहीं रहती। इस प्रकार एक स्वस्थ नैतिक वातावरण का निर्माण होता है।

सहशिक्षा परस्पर स्वस्थ प्रतिस्पर्घा की भावना को जन्म देती है। कोई भी छात्र या छात्रा अपने को एक-दूसरे से नीचा नहीं देखना चाहेगी। हर छात्र यह चाहेगा कि वह परीक्षा में अच्छे-से अच्छे अंक प्राप्त करे ताकि वह अन्य छात्र-छात्राओं की दृष्टि में सम्मान का पात्र बन सके। हर छात्र अच्छे अंक प्राप्त करने की सोचता है और छात्राओं को हराने में अपनी सबसे बड़ी सफलता मानता है। इसी प्रकार की भावना छात्राओं में भी रहती है। केवल अध्ययन के क्षेत्र में ही नहीं, खेल-कूद, नाटक आदि हर गतिविधि में छात्र-छात्राओं से बाजी मारने का प्रयत्न करते हैं। यह स्वस्थ प्रतिस्पर्धा भविष्य की सफलता की पृष्टभूमि तैयार करती है।

सहशिक्षा का सबसे पहला दोष है- सम-शिक्षा, अर्थात सहशिक्षा में छात्रों और छात्राओं को समान शिक्षा प्राप्त होती है, परन्तु स्त्री और पुरुष का कार्य-क्षे: भिन्न-भिन्न होता है। पुरुष को धनोपार्जन करना पड़ता है, समाज से व्यवहार बनाये रखना पड़ता है। उसके लिए व्यवहार-कुशल होना आवश्यक है। पुरुष को सम्पूर्ण सामाजिक गतिविधियों के अनुकूल बनना पड़ता है जबकि नारी का कार्य क्षेत्र परिवार है। उसके लिए एक सफल पत्नी, माता, गृहिणी बनना आवश्यक है। परिवार की सुव्यवस्था स्त्री का प्रमुख ध्येय होता है। अत: निश्चय ही स्त्री-पुरुष की शिक्षा भिन्न होनी चाहिए। नारी को सहशिक्षा एक सफल गृहिणी की अपेक्षा एक सबल सभा की परी बना देती है।

नारी स्वभाव से ही संकोचशील होती है और सहशिक्षा में जब तक उसका संकोच दूर नहीं हो जाता है, वह कोई प्रश्न करने में भी झिझकती है और प्रश्नोत्तर के बिना अपूर्ण रह जाती है।

जब तक ये बाधाएँ दूर नहीं हो जाती, तब तक सहशिक्षा सफल नहीं कही जा सकती। छात्रों के लिए ऐसे वातावरण का निर्माण आवश्यक है जिससे कि उनकी एकाग्रता नष्ट न होने पावे। उसमें एक-दूसरे के प्रति सहज आकर्षण की पृष्ठभूमि में सद्भावना हो। एक प्रकार छात्र-छात्राओं का नैतिक पतन न हो- ऐसा वातावरण होना चाहिए।

सहशिक्षा अपने में एक बहुत ही सुन्दर प्रणाली है। इसको बुरा या अच्छा हमारे छात्र-छात्राएँ ही बनाते हैं। यदि हमारे छात्र-छात्राओं में परस्पर सद्भावना होगी तो निश्चय ही सहशिक्षा सफलता की चरम सीमा को प्राप्त कर सकती है। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की मानसिक और नैतिक शक्तियों का विकास है। सहशिक्षा इनकी कसौटी है! छात्र और छात्राओं की विजय इसी में है कि वे इस कसौटी पर खरे उतरें। प्रारम्भिक कक्षाओं तक दी गई

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सहशिक्षा में कोई दोष नहीं है, परन्तु उच्च कक्षाओं में सहशिक्षा के पहलू पर तो खूब विचार कर लेना अनिवार्य है।

प्रमुख निबन्धों की रूपरेखाएँ

17. राष्ट्रभाषा हिन्दी

रूपरेखा-

1. प्रस्तावना - राष्ट्रभाषा का महत्व
2. राष्ट्रभाषा : हिन्दी क्यों?
3. हिन्दी भाषा और साहित्य की विशेषताएँ
4. राष्ट्रभाषा से लाभ:
   (क) देश के गौरव का प्रतीक
   (ख) सम्पर्क भाषा
   (ग) दैनन्दिन उपयोग
   (घ) अन्य
5. प्रादेशिक भाषाओं की स्थिति
6. उपसंहार

18. प्रदूषण की समस्या

रूपरेखा-

1. प्रस्तावना-प्रदूषण क्या है?
2. प्रदूषण के प्रकार (क) जल प्रदूषण (ख) वायु प्रदूषण (ग) ध्वनि प्रदूषण (घ) अन्य।
3. प्रदूषण फैलाने वाले तत्व- फैक्टरियों द्वारा अपना मल बाहर निकालना शवों को नदियों या सरोवरों में समाधि देना, नगर में मनमाने ढँग से कूड़ा-कचरा तथा मरे हुए जानवर फैंकना, सड़े फल, अन्न, चमड़ा खुले में डालना, नगर का गन्दा पानी सड़ने देना, लाउडस्पीकरों या ध्वनि विस्तारकों द्वारा शोर।
4. हानियाँ-शारीरिक स्वास्थ्य की हानि तथा हैजा, पीलिया, अपच जैसी बीमारियों का प्रकोप, ऊँचा सुनने लगना तथा अन्य।
5. रोकथाम के उपाय
6. उपसंहार

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

19. स्वावलम्बन

रूपरेखा-

1. प्रस्तावना- स्वावलम्बन से तात्पर्य
2. लाभ-(क) उन्नति (ख) आत्मविश्वास (ग) सुख और शान्ति (घ) यश प्राप्ति।
3. स्वावलम्बन से देश और समाज का कल्याण।
4. कुछ आदर्श उदाहरण।
5. उपसंहार

20. मेरे प्रिय अध्यापक

रूपरेखा-

प्रस्तावना- अध्यापक का महत्व- राष्ट्र का विकास शिक्षित व्यक्तियों पर निर्भर, शिक्षित व्यक्तियों में गुणों का समावेश अध्यापक द्वारा ही हो सकता है। आदर्श अध्यापक पर बालक के भविष्य के साथ-साथ राष्ट्र का भविष्य भी अवलम्बित है। अत: भारत में ईश्वर से भी अधिक महत्व अध्यापक को दिया गया।

2. आदर्श अध्यापक का परिचय- नाम, शिक्षा, योग्यता, वेषभूषा, व्यक्तित्व का प्रभाव।

3. आदर्श अध्यापक के गुण- विद्वता, अनेक विषयों का पूर्ण ज्ञान। **अध्यापन कुशलता-** व्यवहार की उत्तमता व नीरस तथा शुष्क विषयों को भी सरल तथा रोचक भाषा में इस प्रकार पढ़ाये कि बालक शीघ्र ही समझ जावें। **अध्ययन-प्रेम** अध्ययन करने वाला ही आदर्श अध्यापक हो सकता है-उससे नम्रता का संचार होता है- **व्यवहार-कुशलता** -विद्यार्थियों व सहयोगियों के साथ उचित व सुन्दर व्यवहार। विद्यार्थियों को शारीरिक दण्ड न देते हुए भी उन्हें अपनी भूल या अपराध पर पश्चात्ताप हो। **खेल-कूद-प्रियता-** क्रीड़ा-क्षेत्र में रुचि का अनुभव, अच्छे खिलाड़ी व खिलाड़ी की भावना। **सहृदयता-** दु:खी व निर्धन छात्रों के प्रति सहानुभूति और उनकी सहायता के लिए सदैव तत्पर। **अनुशासनप्रियता** अध्ययनकुशलता के साथ-साथ कक्षा व खेल में अनुशासन रखने वाले। **सदाचारी व समय के पाबन्द-** विद्यार्थी अनुकरण करते हैं, अत: अध्यापक को **सदाचारी व समय का पाबन्द** होना चाहिए।

4. उपसंहार- आदर्श अध्यापक के संरक्षण में विद्यार्थी सच्चे नागरिक बन सकते हैं और राष्ट्र-विकास और कल्याण के मार्ग पर अग्रसर होते हैं। अप्रत्यक्ष रूप से अध्यापक ही राष्ट्र- निर्माता है, अत: उसका आदर्श होना महत्वपूर्ण है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

21. शिक्षा में खेलों का महत्व

रूपरेखा-

1. प्रस्तावना-शिक्षा का उद्देश्य - बालक का मानसिक एवं शारीरिक विकास करना- केवल पुस्तकीय ज्ञान ही पर्याप्त नहीं अपितु स्वस्थ शरीर भी आवश्यक है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है और शारीरिक विकास में खेलों की व्यवस्था अनिवार्य है।

2. खेलों द्वारा शिक्षा देना शिक्षा की सर्वोत्तम पद्धति है- जिससे बालक के मस्तिष्क पर बोझ नहीं पड़ता, अपितु वह खेल ही खेल में शिक्षित हो जाता है और जीवन के संघर्षों से सामना करने की कला में निपुंण हो जाता है।

3. खेलों से लाभ- (1) सहयोग की भावना- विद्यार्थी अपनी स्वतन्त्र सत्ता भूलकर दल की चिन्ता करता है और अनधिकार चेष्टा नहीं करता, (2) आत्म-निर्भरता व स्वावलम्बन- स्वयं की शक्ति व बुद्धि का उपयोग करता है, किसी सहारे पर आश्रित नहीं रहता, (3) अनुशासन की वृद्धि-क्रीड़ास्थली अनुशासन की सर्वोत्तम पाठशाला है- खेल के नियम पालन व निर्णायक के निर्णय को अन्तिम मानना पड़ता है, (4) कर्त्तव्य-भावना- खेल द्वारा कर्त्तव्य परायणता की भावना जागृत होती है। सिनेमा के अपव्यय तथ व्यर्थ सड़कों पर घूमने से बच जाता है, (5) स्वास्थ्य लाभ- शारीरिक सुगठन व स्वास्थ्य -लाभ के लिए खेल अनिवार्य है, (6) मनोरंजन-दिन-भर के मानसिक श्रम के बाद मनोरंजन विद्यार्थी के लिए आवश्यक रहता है। खेल उसको मनोरंजन की सामग्री प्रदान करता है तथा उसके श्रम का परिहार करता है। मनोरंजन का स्वस्थ माध्यम खेल है।

4. उपसंहार-जीवन भी एक खेल है- शिक्षा के साथ खेल से सफलता प्राप्त करना ही जीवन की सफलता है- उपर्युक्त गुणों के अतिरिक्त धैर्य, सन्तोष, मित्रता आदि अनेक सद्गुणों की प्राप्ति खेल द्वारा होती है। शिक्षा का वास्तविक ध्येय खेलों द्वारा ही पूर्ण किया जा सकता है। खेल शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार-स्तम्भ हैं। अत: खेल के बिना शिक्षा अपूर्ण रहती है। शिक्षा की पूर्णता खेल पर ही निर्भर करती है। खेल शिक्षा के प्रत्यक्ष व सक्रिय स्वरूप हैं। पाठ्यक्रम के साथ-साथ खेलों का महत्व भुलाया नहीं जा सकता। प्रत्येक विश्वविद्यालय व शिक्षण संस्था खेलों की व्यवस्था करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में खेलों का महत्वपूर्ण योगदान है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

3

अनुवाद-कला

(TRANSLATION)

आजकल 'अनुवाद' शब्द अँग्रेजी के Translation के पर्याय रूप में प्रचलित है। इसका अर्थ है एक भाषा से दूसरी भाषा में भाव-विचार को ले जाना। 'अनुवाद' को हिन्दी में 'भाषान्तर' भी कहा जाता है।

'अनुवाद' के अभिप्राय: वर्तमान सन्दर्भ और विशिष्टताओं में समझने से पूर्व हम यह समझ लें कि अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में किया जाता है। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता उसे 'स्रोत भाषा' और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे 'लक्ष्य भाषा' कहा जाता है।

'ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी' में अनुवाद की परिभाषा देते हुए कहा गया है- 'अनुवाद वह क्रिया अथवा प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक भाषा में कही गयी बात को दूसरी भाषा में रूपान्तरित किया जाता है।'

अनुवाद के भेद–

अनुवाद की प्रकृति के आधार पर उसके निम्नलिखित भेद किये गये हैं:

(क) शब्दानुवाद–उसे अँग्रेजी में लिटरल ट्रॉस्लेशन भी कहते हैं। उस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक को लगभग हर शब्द का अनुवाद करना पड़ता है।

(ख) शाब्दिक अनुवाद–इस प्रकार के अनुवाद में लक्ष्य भाषा की वाक्य रचना के अनुसार मूल के प्रत्येक शब्द का अनुवाद प्रस्तुत किया जाता है: जैसे-

I could see that he was telling a lie.

मैं देख सकता था कि वह एक झूठ बता रहा था।

(ग) भावानुवाद–इस प्रकार के अनुवाद में मूल के शब्द, पदबंध, वाक्यों का अनुवाद करने के स्थान पर उसके अर्थ और भाव का अनुवाद किया जाता है।

(घ) छायानुवाद–उसे अँग्रेजी में फ्री ट्रान्सलेशन भी कहते हैं। इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक को पूरी छूट रहती है कि वह मुख्य भाव को लेकर रूपान्तर करें।

अनुवाद : सामान्य नियम

1. अँग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते समय भाषा की प्रकृति, व्याकरणिक नियम, संरचना प्रविधि से परिचित होना आवश्यक है। हिन्दी में वाक्य बनाते समय पहले कर्त्ता (Subject) फिर कर्म (Object) तथा अन्त में क्रिया पद (verb) आते है। जैसे

I write a letter.

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मैं पत्र लिखता हूँ।

इस वाक्य में 'मैं' कर्त्ता 'पत्र' कर्म और 'लिखता हूँ' क्रिया है। किन्तु अँग्रेजी में इसके विपरीत पहले Subject (कर्त्ता) फिर Verb (क्रिया पद) और अन्त में Object (कर्म) आते हैं। जैसे- I learn my lesson.

2. दैनिक कार्य में अनेक अँग्रजी शब्दों का हम प्रयोग करते हैं- जैसे स्टैम्प (Stamp), डिलीवरी (Delivery) पोस्ट(Post), बर्थ (Birth) आदि। अनुवाद करते समय यह देख लेना चाहिए कि शब्द किस सन्दर्भ में प्रयुक्त हुआ है। यथा-

–(क) This copy of the certificate should be attested by a gazetted officer with his stamp.
इस प्रमाण पत्र की प्रतिलिपि किसी राजपत्रित अधिकारी द्वारा, उसकी मोहर के साथ सत्यापित होनी चाहिए।

(ख) Please bring some postal stamps from the post office.
कृपया डाकघर से कुछ डाक टिकट ले आइए।

(ग) You will get the delivery of these goods at your place.
आपको यह माल आपके स्थान पर प्राप्त हो जायेगा।

(घ) At the time of delivery, every mother wishes the child's welfare.
प्रसूति के समय, हर माँ बच्चे के कल्याण की कामना करती है।

3. अंग्रेजी के सामासिक पदों का अनुवाद हिन्दी के सामसिक पदों में ही किया जाए तो उत्तम रहता है; जैसे-
World wide विश्वव्यापी
desirous of knowledge ज्ञान-विकासु

4. मुहावरे और लोकोक्तियों का अनुवाद शाब्दिक नहीं होना चाहिए, बल्कि अनुवाद की भाषा में उनके समानार्थी मुहावरे या लोकोक्तियों के रूप में ही होना चाहिए। जैसे - Man proposes and God disposes' का अनुवाद होगा'अपने मन कुछ और है कर्त्ता कें कुछ और'। उसी प्रकार मुहावरेदार अभिव्यक्ति का अनुवाद भी शाब्दिक नहीं होगा। जैसे 'His joys knew no bound' का हिन्दी में अनुवाद होगा ' उसे बेहद खुशी हुई' या 'उसे अपार प्रसन्नता हुई।'

5. अनुवाद में सुन्दरता लाने के लिए कभी-कभी वाच्य (Voice) परिवर्तन भी कर लेना चाहिए, जैसे- 'I am unable to walk' इस 'कर्तृवाच्य'(Active voice) के वाक्य को 'कर्मवाच्य' (Passive voice) में ' मुझसे चला नहीं जाता।' रखा जाता है।

6. अप्रत्यक्ष (Indirect speech) कथन को प्रत्यक्ष (Direct speech) कथन में परिवर्तित कर लेना चाहिए।

7. यदि अंग्रेजी क वाक्य बड़ा या मिश्रित (Complex) है तो उसे छोटे-छोटे साधारण वाक्यों (Simple sentences) में बाँट लेना चाहिए। अनुवाद के कुछ आदर्श नमूने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

यहाँ दिये जा रहे है, पहले उन्हें ध्यान से देख लें। अच्छा अनुवाद काफी अभ्यास चाहता है। आप अच्छा अभ्यास करेंगे तो परीक्षा में बहुत उत्तम अंक पा सकेंगे।

अनुवाद के प्रारूप

I

When the old Woman had done her work, She came back. She wanted to distribute the grapes among her sons. But to her superise, there were no grapes is the pot. She knew that they had been stolen by none but one of her own sons. So she wanted to know which boy had taken them. It was certain that if she asked them directly, they would deny the truth. So she thought of a better plan.

अनुवाद-

जब बूढ़ी कार्य कर चुकी तब लौट आयी। वह अंगूरों को अपने पुत्रों में वितरित करना चाहती थी। किन्तु उसे (यह देखकर) आश्चर्य हुआ कि बर्तन में अंगूर नहीं थे। उसे मालूम था कि उन्हें किसी और ने नहीं, बल्कि उसके पुत्रों में से ही किसी एक न चुराया था। अत: वह जानना चाहती थी कि किस बालक ने उन्हें उठाया था। यह निश्चित था कि यदि वह उनसे साफ-साफ पूछती तो वे मना कर देते। अत: उसने एक अच्छा उपाय सोचा।

II

In moulding their children, modern parents mould the future history of our country and consequently, the history of the world as well. Can I shoulder the burden of so tremendous a subject? Have I the right or the Courage to tackle even its main problems? Fortunately, no such daring is required of me.

अनुवाद–

आधुनिक माता-पिता अपने बच्चों के चारित्रिक विकास द्वारा वस्तुत: हमारे देश और परिणाम स्वरूप संसार के भावी इतिहास का निर्माण करते हैं किन्तु क्या मैं इतने बड़े उत्तरदायित्व को संभाल सकने में समर्थ हूँ? क्या मुझे इतना अधिकार अथवा साहस प्राप्त है कि मैं इस विषय की प्रगुख समस्याओं की विवेचना कर सकूँ। सौभाग्यवश इतना दुस्साहस मुझसे अपेक्षित नहीं है।

अभ्यासार्थ वाक्य और परिच्छेद

I

1. No man is happy without friends
2. Our heart is the temple of love and affection.
3. Unless we love others no one will see us with affection.

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

4. If no one looks at us with affection, is it not our fault.

5. So, we should live loving one another

संकेत—

Happy=प्रसन्न, Affection=स्नेह, Fault= दोष, गलती, भूल

II

1. The Indian tradition is very ancient.
2. Many people had invaded India.
3. Even then its culture exists intact.
4. The Characteristic of this culture is peaceful co-existence.
5. With this characteristic only, India is guide-light to the world.

संकेत—

Tradition = परम्परा, Ancient=प्रचीन, Invaded=चढ़ाई की, Exist=जीवित रहना, अस्तित्व रखना, Intact=अक्षुण्ण।

III

1. Kannada is our state langauage.
2. Those who live in Karnataka have to learn Kannada.
3. Hindi is a link language of India.
4. All Indians should learn Hindi.
5. There should not be any enmity among languages.

संकेत—

State=राज्य, Language=भाषा, Have to learn=सीखनी पड़ेगी, Link=सम्पर्क, Enmity=शत्रुता।

IV

1. Whateveer money is saved, comes into use at times of need.
2. Darkness began to set in, as soon as the Sun began to set.
3. Don't you know that he will not come here?
4. Our President would be touring in Amrica.
5. Hindi is now understood by most of the people.

संकेत—

Need=आवश्यकता, President=राष्ट्रपति

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

V

1. Many people lose their lives every year in railway accidents.
2. These articles will not be sold today.
3. In ancient times Shrirangapatanam was a city of historic fame.
4. Good Hindi books were presented to that boy.
5. This matter should not be forgotton.

संकेत–

Accident=दुर्घटना, Article=वस्तु, Ancient=प्राचीन, Historic=ऐतिहासिक, fame=प्रसिद्धि।

VI

1. I am not able to get up early in the morning.
2. People cut down the trees on both sides of the road.
3. Time lost is never regained.
4. It rains heavily at Bangalore during September.
5. Differences of financial or social status are not observed before God.

संकेत–

Regain=दुबारा प्राप्त करना, Difference=अन्तर, खाई, Financial=आर्थिक, Social=सामाजिक, Status=प्रतिष्ठा

VII

Desire for smoking has never come back to me. On the countrary I have come to regard the habit of smoking as barbarovus, dirty and harmful. I have never understood why there is such a rage for smoking throughout the world. It is unbearable to me to travel in a compartment full of people smoking.

संकेत–

Desire=इच्छा, Smoking=धूमपान, Barbarous=बर्बर, Harmful=हानिकारक

VIII

It was dark when they brought the news to Samyukta, waiting in the shadows of the palace. But red grew the night with the funeral fire. Her eyes brightened when they told her, and lips smiled. "Then must I haste to my lord where he awaits me," said this Rajput Queen, and with the words she sprang into the flames.

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

संकेत—

Shadows=प्रतिच्छाया, Funeral=चिता, अन्त्येष्टि, Haste=शीघ्रता, Sprang=कूद पड़ी

IX

When Ashoka was twenty-one his great father died; and he was called upon to rule over a mighty kingdom. His heart beat high with pride and exultation. All his life he had waited and waited, dreaming of this hour; and now it was come, the power and the glory were his, and all his dreams should come true.

संकेत—

Mighty=शक्तिशाली, Kingdom=राज्य, Exultation=विजयोल्लास, Glory=यश

X

Putting away the selfishness of her affection for her child, Kisa gotami had the dead body buried in the forest. Returning to the Buddha, she took refuge in him and found comfort in the Dharma, which is a balm that soothes all the pains of our troubled hearts.

संकेत—

Affection=स्नेह, Buried=दफनाई गयी, Refuge=शरण, आश्रय, Soothes=शमन करने वाला।

XI

He was about to go and ask his father's permission when he heard that his wife, Yasodhara had given birth to a son. Siddhartha named the baby Rahula, which means 'hindrance'. For he knew that his child would tie him to the ordinary life. He was torn between his rich life and his desire to go away to lead the life of a sadhu.

संकेत—

Permission=अनुमति, Ordinary=साधारण, सामान्य, Desire=कामना।

XII

Hiranyakahyapa had a son, Prahlada by name. The boy was sent to a teacher's house to be educated. He lived there for some years and was instructed in all the arts befitting a prince of his rank.

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

While his education was still going on, he once paid a visit to his father along with his teacher. He duly bowed before his father's feet and was bidden to rise and give the substance of what he had learnt so far.

संकेत–

Instructed=प्रशिक्षण पाया, Rank=पद, Bowed=झुका, अभिवादन किया, Substance=सारांश।

XII

It would be impossible for us to continue living in this world if each of us knew exactly what fate had in store for him. So God in His mercy conceals the future from all His creatures and reveals only the present. He hides from the animals what men know and He hides from men what animals know. For example, if a lamb could think like a man, it could not play about happily knowing that it was going to be killed shortly.

संकेत–

Impossible=असंभव, Continue living=जीवित रहना, Fate=भाग्य, Conceals=छिपाता है, Creature=प्राणी, Reveals=प्रकट करता है, Lamb=भेड़ का बच्चा, For example=उदाहरण स्वरूप।

XII

He needed so little money for his simple life that he was able to give most of his time to his great object; and that was 'to seek Truth' in his own way. He was a 'moral philosopher' : problems of life and conduct were the subject of his thought. He wanted to find, and to help others to find, a clear idea as to why we do certain things, why we act in a particular way, and to find, also, the real meaning of goodness, justice and similar ideas.

संकेत–

Great object=महान उद्देश्य, Philosopher=दार्शनिक, Conduct= आचरण, Particular = विशिष्ट, Similar = समनुरूप।

XV

I hold that true education of the intellect can only come through a proper exercise and training of the bodily organs, e.g., hands.

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

feet, eyes, ears,nose, etc. In other words, an intelligent use of the bodily organs in a child provides the best and quickest way of developing his intellect. But unless the development of the mind and body goes hand in hand, with a corresponding awarkening of the soul, the former alone would prove to be a poor lop-sided affair. By spiritual training I mean education of the heart.

संकेत—

Intellect=बुद्धि, Bodily Organs=शरीरांग, Intelligent=विवेकपूर्ण, Quickest=शीघ्रतम, Hand in hand=पारस्परिक सहयोग, Corresponding=तदनुकूल, Awakening= जागृति, Lop-sided=असन्तुलित, Spiritual=आध्यात्मिक, Education of the heart=भावनात्मक शिक्षा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

4

विचार-ग्रहण (Comprehension)

'विचार-ग्रहण' को 'अर्थ-ग्रहण' भी कहा जाता है। अँगरेजी में इसे कम्प्रिहेंशन (Comprehension) भी कहते हैं। इसमें विद्यार्थी को एक गद्य-पद्य खण्ड दिया जाता है और विद्यार्थी से उससे सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं। यह कार्य शब्द भण्डार और अभ्यास की माँग करता है यदि विद्यार्थी का भाषा ज्ञान ठीक-ठीक है और उसने कुछ अभ्यास किया हुआ है तो वह सरलतापूर्वक यह प्रश्न हल कर सकता है।

'विचार-ग्रहण' का प्रश्न हल करते समय निम्नांकित पर ध्यान दें:

1. दिये गये अवतरण को कई बार पढ़ें। हो सकता है पहली बार में अवतरण का अर्थ स्पष्ट न हो किन्तु बार-बार पढ़ने पर धीरे-धीरे अर्थ स्पष्ट होने लगेगा।
2. जब अर्थ स्पष्ट हो जाए तो दिये गये प्रश्नों के उत्तरों पर विचार कीजिए। उत्तर अवतरण ही में कही छिपा है, उसे खोजिए और उतने अंश पर निशान लगाइए जितने में वह उत्तर समाया हुआ हो।
3. अब क्रमश: एक-एक प्रश्न का उत्तर लिखना प्रारम्भ कीजिए। जहाँ तक हो सके मूल अवतरण के शब्दों\वाक्यों और मुहावरों को ज्यों का त्यों न लें। उन्हीं विचारों या भावों को अपनी भाषा में लिखें।
4. जब सभी प्रश्नों के उत्तर लिख लें तो मूल अवतरण और अपने उत्तरों पर पुन: ध्याद दें और देखें कि कोई उत्तर अधूरा तो नहीं छूट गया है। यदि कहीं ऐसा लगता है कि कुछ अधूरा छूट गया है तो उसे पूरा कर लें।
5. यदि आप विचार-ग्रहण का समुचित अभ्यास करेंगे तो यह विषय आपके लिए बहुत ही सरल हो जाएगा।

यहाँ विचार-ग्रहण के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

उदाहरण I

उन तेज बहनेवाली नदियों ने, जो इस पहाड़ी सिलसिले से निकलकर हिन्दुस्तान के मैदानों में बहती हैं, मुझे अपनी तरफ खींचा और अपने इतिहास के अनगिन पहलुओं की याद दिलाई। सिन्धु, जिससे हमारे देश का नाम हिन्दुस्तान पड़ा और जिसे पार करके हजारों बरसों से न जाने कितनी जातियाँ, फिरके, काफिले और फौजें आती रही है; ब्रह्मपुत्र, जो इतिहास की धारा से अलग रही है, लेकिन जो पुरानी कथाओं में जीवित है और पूर्वोत्तर पहाड़ों की गहरी दरारों के बीच से रास्ता बनाकर हिन्दुस्तान में आती है, और फिर शान्तिपूर्वक और मनोहारी प्रवाह के साथ पहाड़ों और जंगलों के बीच शान से बहती है; जमुना, जिसके

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नाम के साथ कृष्ण के रास, नृत्य और क्रीड़ा की अनेक दन्त-कथाएँ जुड़ी हुई हैं; और गंगा, जिससे बढ़कर हिन्दुस्तान की कोई दूसरी नदी नहीं है, जिसने हिन्दुस्तान के हृदय को मोह लिया है और जो इतिहास के आरम्भ से ही न जाने कितने करोड़ लोगों को अपने तट पर बुला चुकी है! गंगा की उसके उद्‌गम से लेकर सागर में मिलने तक ही कहानी, पुराने जमाने से लेकर आज तक की हिन्दुस्तान की संस्कृति और सभ्यता की, साम्राज्यों के उठने और नष्ट होने की, विशाल और शानदार नगरों की, आदमी के साहस और साधना की, जिन्दगी की पूर्णता की और साथ-साथ त्याग और वैराग्य की, अच्छे और बुरे दिनों की, विकास और साहस की, जीवन और मृत्यु की कहानी है।

अपने ही शहर, इलाहाबाद में या हरिद्वार के स्नानों में या कुम्भ के मेले में मैं जाता हूँ और देखता हूँ कि वहाँ लाखों आदमी गंगा में नहाने के लिए आते हैं, उसी तरह, जिस तरह कि उनके पुरखे सारे हिन्दुस्तान से हजारों बरस पहले से आते रहे हैं।

चीनी यात्रियों के और दूसरों के तेरह सौ साल पहले के इन मेलों के बयानों की याद करता हूँ। उस समय भी ये मेले बड़े प्राचीन माने जाते थे और कब से इनका आरम्भ हुआ, कहा नहीं जा सकता। मैंने सोचा, यह भी कितना गहरा विश्वास है, जो हमारे देश के लोगों को अनगिनत पीढ़ियों से इस मशहूर नदी की ओर खींचता रहा है।

प्रश्न : 1. हमारे देश का नाम हिन्दुस्तान कैसे पड़ा?

2. पुरानी कथाओं में कौन-सी नदी आज भी जीवित है?

3. यमुना नदी के साथ कौन-सी दन्त कथाएँ प्रचलित हैं?

4. भारत में सबसे प्रमुख नदी कौन-सी है और क्यों?

5. विदेशी यात्रियों ने किन मेलों का वर्णन किया था?

उत्तर : 1. यों तो इस देश में कई प्रसिद्ध नदियाँ हैं किन्तु सिन्धु एक ऐसी नदी है जिसे पार करने हजारों वर्षों से दूसरे देशों के लोग हमारे देश में आते रहे हैं। यह नदी पहाड़ों से निकलकर मैदानों में बहती है। सिन्धु के ही कारण भारत का नाम हिन्दुस्तान पड़ा; ऐसा माना जाता हैं।

2. हमारी नदियों के सम्बन्ध में अनेक पुरानी कथाएँ हैं। गंगा नदी ने अनेक लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। अनेक नगर इसके किनारों पर बसे, अनेक सभ्यताओं ने इसके अंचल में जन्म लिया। बड़े-बड़े राज्य पनपे और उजड़े। गंगा अपने उद्गम से लेकर समुद्र में समाने तक न जाने कितनी कथाएँ अपने साथ लेकर चलती है। ये कथाएँ मनुष्य के उत्थान और पतन, संचय और त्याग, साहस और साधना की कथाएँ हैं।

3. जमुना नदी क्योंकि कृष्ण की जन्म भूमि को छूते हुए बहती है अत: इस नदी के साथ कृष्ण के जीवन की घटनाएँ जुड़ी हुई हैं। कृष्ण का नाचना, रास लीला रचाना और अनेक प्रकार की क्रीड़ाएँ करना आदि दन्त कथाओं की तरह इस नदी के साथ जुड़ी हैं।

4. भारत की सबसे प्रमुख नदी गंगा मानी जाती है। इस नदी ने भारत के लोगों के मनों को मोहा है। इसने इतिहास के शुरू से ही लाखों लोगों को अपने

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

किनारे बुलाया है। इसने अनेक साम्राज्यों का उत्थानपतन देखा है और यह अनेक सभ्यताओं और संस्कृतियों की कहानी जानती है। भारत का सामान्य व्यक्ति इससे प्यार करता है। इसी कारण गंगा भारत की नदी है।

5. विदेशी यात्रियों ने हमारे देश के मेलों और त्यौहारों का वर्णन किया है। जिन मेलों ने उन्हें सबसे अधिक आकृष्ट किया वह कुंभ का मेला है जो इलाहाबाद और हरिद्वार में गंगा के किनारे अब भी लगता है। इन मेलों के अवसर पर लाखों लोग गंगा में स्नान करने आते हैं। चीनी यात्रियों ने तेरह सौ वर्ष पहले इन ही मेलों का वर्णन किया था।

उदाहरण-2

हमारे जैसे देश में, जो हाल-हाल तक गुलाम बना रहा, नागरिक स्वतन्त्रता का मूल्य समझना किंचित् कठिन है। अभी हमारे देश की जनता का ध्यान रोटी, कपड़ा, मकान और रोजगार की ओर गया है। प्राय: लोग यह कहते हुए सुनाई देते हैं कि हमें इससे मतलब नहीं कि इस देश में किसका शासन है, जनतंन्त्र है या तानाशाही; हमें तो रोटी चाहिए, कपड़ा चाहिए, मकान चाहिए, रोजगार चाहिए, दवा चाहिए-इन आवश्यकताओं को कोई भी पूरा कर दे। जनता की यह मानसिक स्थिति ठीक नहीं। यदि जनता की सूझ-बूझ ऐसी ही रही तो फिर वह स्वतन्त्रता, जो असीम बलिदान देकर प्राप्त की गयी है, मिट जायेगी। हम अपने हाथों से इसकी हत्या कर देंगे। भय इस बात का है कि यह मनोवृत्ति ऐसी परम्परा या प्रथा कायम कर देगी जिसमें सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक शक्ति गिने-चुने हाथों में सिमटकर रह जायेगी और बाकी लोग गुलाम बन जायेंगे। जनता को समझना चाहिए कि नागरिक स्वतन्त्रता का प्रश्न उतना ही जरूरी है, बल्कि उससे भी अधिक, बितना रोटी, रोजी और कपड़े इत्यादि का प्रश्न। जब तक यह बात लोगों को समझायी नहीं जाती, तब तक हमारी मानसिक दासता ज्यों की त्यों बनी रहेगी, क्योंकि स्वतन्त्रता के लिए, चाहे वह वैयक्तिक हो या सामूहिक, किसी भी सरकार से उतना भय नहीं जितना स्वयं जनता से है; क्योंकि जनतन्त्र में अन्तिम उत्तरदायित्व जनता का होता है। कहीं ऐसा न हो कि अपने हाथों और पैरों में गुलामी की कड़ियाँ और बेड़ियाँ फिर से पहन लेने के बाद हम यह अनुभव करें कि नागरिक स्वतन्त्रता क्या चीज है, यह कितना महत्व और मूल्य रखती है।

प्रश्न : 1. हमारे देश के लोग नागरिक स्वतन्त्रता का मूल्य क्यों नहीं समझते?

2. नागरिक स्वतन्त्रता का मूल्य न समझने के दुष्परिणाम क्या हो सकते हैं?

3. जनतन्त्र में अन्तिम उत्तरदायित्व किसका होता है और क्यों?

4. जनता को रोजी-रोटी के अलावा और क्या समझने की आवश्यकता है?

उत्तर : 1. हमारा देश कई सौ वर्ष पराधीन रहा। इससे लोगों की आर्थिक स्थिति खराब हो गयी और जब उसे आजादी मिली तो सबसे पहले उसका ध्यान भोजन, कपड़े और मकान की ओर गया। वह इन मूल आवश्यकताओं में उतना डूब गया कि उसे अपने अन्य कर्त्तव्य याद ही नहीं रहे। इन मूल आवश्यकताओं

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

की पूति हो जाने के बाद ही वह अपना ध्यान अन्य बातों की ओर लगा सकता है।

2. नागरिक स्वतन्त्रता का मूल्य समझना हम सबके इसलिए आवश्यक है क्योंकि यदि इसके महत्व को नहीं समझा गया तो अनेक लोगों के बलिदान के बाद जो आजादी हमें मिली है, वह हमारे हाथ से चली जायेगी। गलत परम्पराएँ चलने लगेंगी। देश की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक शक्ति कुछ स्वार्थी लोगों के हाथों में पड़ जाएगी और देश का सामान्य नागरिक अपने आप को गुलाम अनुभव करने लगेगा।

3. जनतन्त्र में अंति उत्तरदायित्व जनता का होता है क्योंकि जनता अपने प्रतिनिधि स्वयं चुनती है वे प्रतिनिधि शासन चलाते हैं। इसलिए सामूहिक और वैयक्तिक दोनों की रूपों में जनता को अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए।

4. जनता को अपनी मूल आवश्यकताओं के अलावा यह भी समझना चाहिए कि गणतन्त्र में एक नागरिक की जिम्मेदारी बहुत अधिक होती है। उसे ध्यान रखना चाहिए कि नागरिक स्वतन्त्रता का प्रश्न भी उतना ही जरूरी है जितना कि भोजन, आवास और कपड़े का प्रश्न । यदि उसने नागरिक स्वतन्त्रता के प्रश्न पर लापरवाही दिखायी तो उसकी मानसिक दासता समाप्त नहीं होगी। इसका दूरगामी परिणाम यह होगा कि वह फिर गुलाम बना दिया जाएगा और कुछ स्वार्थी लोग शासन पर अपना अधिकार जमा लेंगे।

विचार-ग्रहण के अभ्यासार्थ अवतरण

अभ्यास I

ताला परिग्रह और पूँजीवाद का प्रतीक है। ताले की जरूरत पड़ती ही क्यों है? साधु-सन्तों की कुटियों में ताला क्या, दरवाजा भी नहीं है। कुटी से बाहर निकलते समय बाँस या काठ का बना कोई आवरण दरवाजे पर डालकर वे चल देते हैं। यह आवरण पशुओं के लिये होता है, मनुष्यों के लिये नहीं। जो परिग्रही होते हैं, उनके यहाँ चोरी होती है। यह चीज मेरी है, इसी से पूँजीवाद का आरम्भ होता है। मनुष्य अपने सुख, अपनी सुविधा, अपना आराम के लिये बटोर-सँजोकर रखता है, उसे किसी को देना नहीं चाहता।। पूँजी किसी को देना नहीं चाहता। वस्तु के साथ रक्षा का प्रश्न अनिवार्यत: लगा है। पूँजी जितनी बड़ी होती है, रक्षा का प्रश्न उतना ही गंभीर और जटिल होता है। ताले खजाने की रक्षा करते हैं, किन्तु स्वयं ताले की रखवाली के लिये सिपाही तैनात रहते हैं। निहत्थे सिपाही तालों की क्या, अपनी भी रखवाली नहीं कर सकते, इसलिये उनके हाथ में संगीनें रहती हैं। इस तरह रखवालों की एक परंपरा-सी खड़ी रहती है और तब भी चौर्यकला में पारंगत अपनी कला की करामात दिखा देते हैं। सभ्यता के आरम्भ में आवश्यकता से अधिक कोई रखता ही नहीं था इसलिये निगरानी का झमेला ही न था। उन्मुक्त वातावरण में सभी काम करते थे और जीवन की आवश्यकताएँ खाने-पीने और सोने तक सीमित थीं। जब आराम

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

की भावना जगी तो परिग्रह साथ लग गया, फिर परिग्रह के साथ रक्षा और रक्षा के लिए ताला।

ताला लटक रहा है। उस नाचीज पर घर की निगरानी का सारा भार है, जिसे स्वीकार करने में कोई भी व्यक्ति सहमता है।

प्रश्न : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अवतरण पढ़कर दीजिए-

1. पूँजीवाद का मूल क्या है?

2. ताले की रखवाली कौन तथा कैसे करता है?

3. सभ्यता के आरम्भ में लोग कैसा जीवन बिताते थे?

अभ्यास II

इस सम्बन्ध में दो मत नहीं हो सकते कि युद्ध त्याज्य वस्तु है और शान्ति संसार के लिए आवश्यक और अभीष्ट है। आज यह बात सुनने में शायद आश्चर्यजनक जान पड़े कि अब से कुछ वर्ष पहले तक युद्ध को शान्ति स्थापित करने का साधन समझा जाता था और कई बड़े-बड़े राष्ट्रों का यह विचार था कि वे अपने अस्त्रों की संख्या को बढ़ाकर संसार में शान्ति बनाये रख सकते हैं। परन्तु अनुभव ने उनकी धारणा को मिथ्या सिद्ध कर दिया है। युद्ध की तैयारी अन्त में युद्ध करवाकर ही छोड़ती है। इसलिए युद्ध का बहिष्कार अभीष्ट है, तो हमें इसका आरम्भ अहिंसा और प्रेम की भावना से ही करना होगा। वस्तुत: प्रेम और अहिंसा द्वारा ही न केवल शान्ति स्थापित की जा सकती है, बल्कि सारे संसार को एक सुखमय राज्य बनाया जा सकता है। किन्तु इसके लिए हमें भगवान बुद्ध के बताए उन्हीं उपदेशों पर आचरण करना होगा, जिन पर अशोक ने किया था। तभी हम भी अशोक की भाँति एक सुखमय संसार के निर्माण में योगदान दे पायेंगें।

प्रश्न : 1. शान्ति स्थापित करने के सम्बन्ध में लोगों की क्या धारणा थी?

2. युद्ध का बहिष्कार क्यों आवश्यक है?

3. संसार को सुखमय बनाने का मार्ग क्या है?

अभ्यास-III

जिस प्रकार उच्च नैतिक आदर्श का पालन करने के लिए मनुष्य को सदाचारी होना आवश्यक है, उसी प्रकार उसे दूसरों के साथ सद्-व्यवहार करने के लिए शिष्टाचार का पालन करने की आवश्यकता है। यद्यपि शिष्टाचार सदाचार का एक अंग है तथापि दोनों में कई बातों का अन्तर है। सदाचार का धर्म से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है और उसकी अवहेलना करना पाप समझा जाता है; पर शिष्टाचार का सम्बन्ध व्यक्ति अथवा समाज के सुभीते तथा संतोष से है और उसकी अवज्ञा से दूसरों को अप्रसन्नता होती है जो बहुत वैमनस्य का कारण हो जाती है। सदाचार मन, वचन और कर्म की एकता के रूप में पाला जाता है; पर शिष्टाचार बहुधा वचन और कर्म ही से सम्बन्ध रखता है। सदाचार की अवहेलना में

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भंयकर आत्मिक परिणाम सामने आ सकते हैं; पर शिष्टाचार के अभाव में बहुधा वैसा भविष्य में नहीं होता।

प्रश्न : 1. शिष्टाचार की आवश्यकता क्यों है?

2. शिष्टाचार और सदाचार में क्या अन्तर है?

3. सदाचार जीवन के लिए क्यों आवश्यक है?

अभ्यास IV

किसी भी राष्ट्र का निर्माण वहाँ के नागरिकों के आचरण पर ही आधारित है। एक सफल राष्ट्र वही है, जहाँ के नागरिकों में अपने कर्तव्य-पालन के उत्तरदायित्व को निभाने का ज्ञान हो। प्रत्येक नागरिक पर राष्ट्र के उत्थान की जिम्मेदारी है और राष्ट्र के इस विश्वास को कायम रखने के लिए उसे अपने आचरण पर ध्यान देना चाहिए। बहुत सीधी-सी बात है। किसी व्यापार का आधार रुपयों का लेन-देन होता है। यह लेन-देन आपस के विश्वास पर आधारित है और आपस का यह विश्वास तभी कायम रह सकता है, जबकि व्यक्ति का आचरण ठीक रहे। राष्ट्र का निर्माण भी इसी ढ़ंग का व्यापार है,जिसकी सफलता के लिए आपस में एक-दूसरे पर विश्वास का होना जरूरी है और यह तब तक सम्भव नहीं, जब तक कि हर व्यक्ति अपने आचरण पर ठीक-ठीक ध्यान न दे।

प्रश्न : 1. राष्ट्र के निर्माण में नागरिक का क्या महत्व है?

2. राष्ट्र के निर्माण में नागरिक का आचरण कैसा हो?

3. आपसी विश्वास से क्या लाभ है?

अभ्यास V

मनुष्य समाज में ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं, जो पग-पग पर जीवन में 'पाई का लेखा रुपये की भूल' कहावत को चरितार्थ करते हैं। उनकी दृष्टि ही क्षुद्रता की ओर सर्तक रहती है। महत्व को देखने में उनके चर्मचक्षु अकृतकार्य रहते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि मानव-जीवन किसी महान उद्देश्य के लिए है। यदि कोई छोटे-छोटे कार्यों का लेखा तैयार करने में अपने अमूल्य समय और अपूर्व शाक्ति का अपव्यय करेगा तो उससे महान कार्यों में त्रुटि होना अनिवार्य होगा। पाई का लेखा करते-करते वह रुपये की भूल कर बैठेगा। इसलिए विद्वानों का कहना है कि छोटी-छोटी बातों की चिन्ता में अपना मस्तिष्क मत खपाओ। इन्हें जीवन की पगडंडियो में रेलपेल करने के लिए छोड़कर तुम तो राजमार्ग का अनुसरण करते चलो। उनकी जटिलता में उलझ जाने पर फिर कहीं के न रहोगे। इस छोटे जीवन में इतना समय और सुयोग ही कहाँ है कि तुम फूँक-फूँक कर कदम रखते हुए निकल जाओगे! छोटी से छोटी बात के विषय में सर्तक रह सकोगे?

प्रश्न : 1. मानव जीवन का उद्देश्य क्या है?

2. छोटी-छोटी बातों की चिन्ता क्यों नहीं करनी चाहिए?

3. समय के अपव्यय से क्यों बचने की आवश्यकता है?

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

5

पत्र-व्यवहार

(Letter Writing)

दैनन्दिन कार्यों और निजी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आज व्यक्ति एक ही स्थान पर नहीं रह सकता। उसे अपनी आजीविका और अन्य कार्यों के सिलसिले में अपना स्थान छोड़कर जाना ही पड़ता है। तब दूर स्थित अपने आत्मीय, सम्बन्धी, मित्र, परिचित अथवा अधिकारी से यह सामने बैठकर बातचीत तो कर नहीं सकता, तब उसे एक ऐसे साधन का सहारा लेना पड़ता जिसके माध्यम से वह अपने भाव या विचार प्रकट कर सके। इस कार्य के लिए जो भी साधन उपलब्ध हैं उनमें एक 'पत्र' ही सबसे सरल और सुगम साधन है। पत्र लेखन एक कला है जो अभ्यास द्वारा अर्जित की जा सकती है।

एक अच्छे पत्र में ये गुण होने चाहिए। 1. स्पष्टता (Clearness),2. पूर्णता (Completeness),3. शालीनता (Courtesy), 4. प्रभावशीलता (Effectiveness), 5. श्रृंखलाबद्धता(Unity) तथा 6. आकर्षक प्रस्तुति (Attractive Presentation)।

सामान्यतः पत्रों को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है-

(क) पारिवारिक पत्र या निजी पत्र (Personal or Private letter)

(ख) व्यावसायिक या वाणिज्यिक पत्र (Commercial letter)

(ग) शासकीय या सरकारी पत्र (Official letter)

हम यहाँ प्रथम कोटि के पत्रों स्वरूपों की चर्चा करेंगे। पारिवारिक पत्रों में वे सभी पत्र आ जाते हैं जो हम अपने सम्बन्धियों, आत्मीयों, मित्रों, परिचितों और उन सभी को आवश्यकता अनुसार लिखते हैं जो सरकारी अधिकारी समाचार पत्रों के सम्पादक,. सामाजिक कार्यकर्ता, व्यावसायिक प्रतिष्ठान के मालिक अथवा किसी धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक या किन्हीं अन्य संस्थाओं से जुड़े होते हैं।

पारिवारिक पत्र के अंग

पारिवारिक पत्र के निम्नलिखित अंग होते है-

1. शीर्षक (The Heading)
2. सम्बोधन तथा अभिवादन (Greeting or Salutation)
3. विषय या कलेवर (Body of the Letters)
4. अभिनिवेदन या स्वनिर्देश (Leave-taking or Subscription)
5. हस्ताक्षर (Signature)
6. पत्र-प्राप्तकर्ता का पता (Address on the envelope)

1. शीर्षक–

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शीर्षक में लेखक (पत्र लिखने वाला) का पता, पत्र लिखने की तारीख, कागज के दायीं ओर ऊपर के कोने में पता और तारीख दिये जाएं।

जैसे-

124/4, मिशन रोड,
बंगलूर- 560025

अगस्त 11, 1994

तारीख इस प्रकार भी लिखी जा सकती है- 11.8.1994 या 11 अगस्त, 1994

2. सम्बोधन तथा अभिवादन—पता और तारीख लिखने के बाद पृष्ठ के बायीं ओर सम्बोधन और अभिवादन के शब्द लिखने चाहिए। माता-पिता को पत्र लिखते समय हम 'पूज्य पिताजी अथवा 'पूजनीय माताजी' लिखते हैं। शिक्षक या गुरुजन को पत्र लिखते समय 'आदरणीय' अथवा 'श्रद्धेय' शब्दों का व्यवहार होता है। अपने से छोटों को प्राय: 'प्रियवर', 'चिरंजीव' आदि शब्दों का उपयोग किया जाता है और समान स्तर वालों को 'प्रिय' शब्द व्यवहृत होता है।

3. विषय—यह पत्र का मुख्य अंग है। जो भी समाचार आप लिखना या भेजना चाहते हैं उसे बहुत ही स्वाभाविक और सरल शैली में लिखें। समस्त पत्र कुछ परिच्छेदों में बाँट लिया जाए और विचारों में क्रमबद्धता रखी जाय।

4. अभिनिवेदन या स्वनिर्देश—विषय के उपरान्त, अभिनिवेदन का, सम्बन्ध के आधार पर प्रयोग करना चाहिए। यह पृष्ठ के दायीं ओर लिखा जाना चाहिए।

जैसे—

आपका शुभाकांक्षी,

5. हस्ताक्षर—अभिनिवेदन के उपरान्त हस्ताक्षर करना चाहिए।

6. पत्र-प्राप्तकर्ता का पता—लिफाफे पर पता लिखने की दो रीतियाँ प्राय: काम में लायी जाती हैं-

1. डॉ० वेदप्रताप वैदिक
   ए-19, प्रेस एन्क्लेव,
   नई दिल्ली-110017

2. डॉ० वेदप्रताप वैदिक
   ए-19, प्रेस एन्क्लेव,
   नई दिल्ली-17

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सामाजिक और व्यक्तिगत पत्रों में अभिवादन तथा अभिनिवेदन का रूप इस प्रकार रहता है-

सम्बन्ध	सम्बोधन	अभिवादन	अभिनिवेदन
पिता-पुत्र	प्रिय वरुण	शुभाशीष	तुम्हारा शुभाकांक्षी
पुत्र-पिता	पूज्य पिताजी	सादर प्रणाम	आपका स्नेहाकांक्षी
माता-पुत्र	प्रिय-पुत्र	शुभाशीष	तुम्हारी शुभाकांक्षिणी
पुत्र-माता	पूजनीय माता जी	सादर प्रणाम	आपका स्नेहाकांक्षी
मित्र-मित्र	प्रिय अमित या प्रिय मित्र		तुम्हारा या तुम्हारा मित्र
गुरु-शिष्य	प्रिय शतदल या चि० शतदल	शुभाशीष	तुम्हारा शुभचिन्तक
शिष्य-गुरु	श्रद्धेय, आदरणीय गुरुवर	सादर प्रणाम्	आपका शिष्य
अग्रज-अनुज	प्रिय अरविन्द	शुभाशीष	तुम्हारा शुभाकांक्षी
अनुज-अग्रज	पूज्य भैया या पूज्य अग्रज	प्रणाम्	आपका स्नेहाकांक्षी
स्त्री–पुरुष 'अनजान'	प्रिय महोदय		आपकी विश्वासी
पुरुष-स्त्री 'अनजान'	प्रिय महोदया		भवदीय
पुरुष-स्त्री 'परिचित'	प्रिय रेखा जी		भवदीय
स्त्री-पुरुष 'परिचित'	प्रिय श्री शेखर		भवदीया
छात्र-प्रधानाध्यापक	आदरणीय महोदय	सादर प्रणाम्	आपका आज्ञाकारी छात्र

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पारिवारिक पत्रों के कुछ प्रारूप

1. भाई का पत्र बहन को -यात्रा का वर्णन करते हुए।

18, चर्च स्ट्रीट
मेंगलूर
सितम्बर 13, 19....

प्रिय अदित्ति,

कुछ दिन पहले तुम्हारा पत्र मिला था। यह सूचना पाकर प्रसन्नता हुई कि तुमने 'फैशन डिजाइनर' के कोर्स में प्रवेश ले लिया है। उस कोर्स का भविष्य बहुत अच्छा है क्योंकि आगे आने वाले समय में दर्जी और भी अधिक मँहगे हो जायेंगे और तव विवश होकर लोगों को सिले सिलाये कपड़ों पर आश्रित रहना पड़ेगा।

मैं पिछलें दिनों अपने मित्रों के साथ हम्पी देखने गया। रामायण में यह स्थान 'किष्किन्धा के नाम से जाना जाता है। दक्षिण के प्रतापी राजा कृष्णदेव राय की किसी समय यहाँ राजधानी थी। उसके खण्डहर आज भी देखने को मिलते हैं। उस समय के अवशेषों को देखने से पता चलता है कि यहाँ की सभ्यता बहुत ही विकसित रही होगी। नगर में जल-मन विसर्जन का बहुत ही उत्तम प्रबन्ध था, यहाँ तक कि खुदाई में एक बड़ा तरणताल (स्वीमिंग पूल) भी मिला है। किले के फ़ाटक पत्थर की शिलाओं के थे जिन्हें खोलने और बन्द करने के लिए हाथियों की सहायता ली जाती थी।

उस समय के मंदिर भारतीय कला की अद्‌भुत धरोहर हैं। उन्हें देखकर तो अद्‌भुत आश्चर्य होता है।

ऐसा माना जाता है कि जब राम अपने भाई लक्ष्मण के साथ सीता की खोज में मारे-मारे फिर रहे थे तब उसी स्थान पर भीलनी ने उन्हें बेर भेंट किये थे और यहीं पर उनकी भेंट सुग्रीव से हुई थी।

मैंने उस यात्रा के दौरान अनेक महत्वूपर्ण स्थलों और दृश्यों को अपने कैमरे में कैद कर लिया था। वे फोटो उस पत्र के साथ तुम्हें भेज रहा हूँ। उन्हें देखकर तुम्हारा मन भी हंपी यात्री को उत्सुक हो जायेगा।

माताजी, पिताजी और बड़े भैया को प्रणाम् कहना।

विश्वास है सानन्द हो।

तुम्हारा भाई,
चेतन

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

2. मित्र का पत्र मित्र को-दशहरा उत्सव का वर्णन करते हुए।

13,सरस्वतीपुरम्
मैसूर-9
नवम्बर 26, 19..........

प्रिय मित्र शिवराज,

काफी समय से तुम्हारा पत्र नहीं आया, अपनी कुशलता का पत्र देना।

यों तो मेरा जन्म ही मैसूर में हुआ किन्तु भीड़-भाड़ के कारण कभी भी दशहरा देखने का साहस नहीं कर सका। इस वर्ष दशहरे के अवसर पर मेरी बड़ी बहन का परिवार दावणगेरे से यहाँ आया। पिताजी ने दशहरे का उत्सव दिखाने की जिम्मेदारी मुझे सौंपी। अतः दशहरा उत्सव देखने का सुयोग (परोक्ष रूप से) मुझे प्राप्त हुआ।

'मैसूर दशहरा' सारे देश में प्रसिद्ध है। इस अवसर पर देश-विदेश से पर्यटक मैसूर आते हैं। यह उत्सव एक सप्ताह तक बड़े धूमधाम से यहाँ मनाया जाता है। इस अवसर में महाराजा मैसूर की कुल देवी की सवारी परम्परागत रीति से निकाली जाती है। राजमहल विशेष रूप से सजाया जाता है। आतिशबाजी का प्रदर्शन होता है। चामुण्डी देवी की पूजा की जाती है। नगर में प्रदर्शनी लगती है। भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में की गयी विशिष्ट सेवाओं के लिए लोगों को सम्मानित किया जाता है। वृन्दावन उद्यान जो पृथ्वी का स्वर्ग या नंदन कानन कहलाता है, उसे भी विशेष रूप से सजाया जाता हैं जो मन को उत्यधिक लुभाता है।

उत्सव के दौरान मैं तुम्हें लगातार याद करता रहा। अगले वर्ष दशहरा देखने तुम मैसूर आओ, मैं तुम्हें अभी से आमंत्रित करता हूँ।

अपने माताजी-पिताजी को मेरा प्रणाम् कहें।

आशा है सानन्द होंगे।

पत्र आवश्य लिखना।

तुम्हारा प्रिय मित्र,
प्रांसिस

3. भाई का पत्र छोटे भाई को- शिक्षा का महत्व बनाते हुए।

105, देवपार्थिव मार्ग,
मैसूर-9
दिसम्बर 3, 19.........

प्रिय संदीप,

माताजी के पत्र से परिवार के समाचार ज्ञात हुए। यह जानकर अच्छा लगा कि तुमने एस.एस.एल.सी. में फिर से प्रवेश ले लिया है। इस बार तुम अवश्य ही सफल होगे, ऐसा मेरा विश्वास है क्योंकि हर असफलता हमें कुछ न कुछ सिखाकर जाती है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आज का युग शिक्षा का है क्योंकि पढ़ाई के बिना कोई भी कार्य कुशलता पूर्वक नहीं किया जा सकता। आज इतनी प्रतियोगिता है कि जब तक आप अपने विषय के विशेषज्ञ नहीं बन जाते, तुम्हें कोई नहीं पूछता।

शिक्षा का महत्व इसलिए भी है क्योंकि यह हमारी क्षमता, प्रतिभा और योग्यता को उजागर कर देती है। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ योग्यता छिपी रहती है जिसे वह स्वयं खोज नहीं पाता। पढ़ाई से उसे स्वयं अपनी छिपी प्रतिभा का पता लग जाता है।

संसार में जितने भी बड़े नेता अथवा महान व्यक्ति पैदा हुए हैं वे शिक्षा के बल पर ही प्रकाश पा चुके हैं। अपने अध्यवसाय और परिश्रम के बल पर वे जीवन के सोपान पर बढ़ते चले गये।

हमारा उद्देश्य मात्र यही तो नहीं है कि कीड़े-मकोड़ों की तरह जन्म लें, कुछ दिन संसार में जैसे तैसे जीवन जियें और फिर मृत्यु को प्राप्त हो जाएँ। हमें तो अपनी योग्यता और शिक्षा के बल पर अपने समाज में अपना स्थान बनाना है।

इस बार खूब परिश्रम से पढ़ो। अध्यापक कक्षा में जो कुछ पढ़ाते हैं, उसे ध्यान से सुनो। जो पढ़ाया जाता हैं, उसे ध्यान से सुनो। जो पढ़ाया जाता है उसे बार-बार लिखो। कोई कारण नहीं कि तुम्हें असफलता का मुँह देखना पड़े।

विश्वास है मेरे कथन पर ध्यान दोगे और अपने अन्य कार्य-कलापों को कम करके अपनी पढ़ाई पर अधिक से अधिक समय दोगे।

आशा है सानन्द हो।
पत्र देना।

तुम्हारा भाई,
नागराज

4. बड़ी बहन का पत्र छोटी बहन को - बधाई देते हुए।

14, रेसीडेन्सी रोड,
बेंगलूर-27
18 जनवरी 19...

प्रिय भारती,

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम पी. यू. सी. परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई हो। तुम्हारी इस शानदार सफलता पर मैं तुम्हें हार्दिक बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि भविष्य में भी तुम इसी प्रकार सफलता पाती रहोगी। बी.ए. में प्रवेश तो ले रही हो न? तुम उत्तरोत्तर उन्नति करती जाओ, यही मेरी कामना है।

विश्वास है, स्वस्थ तथा सानन्द होगी।

तुम्हारी बहन,
अणिमा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

5. पुत्र का पत्र पिता को- अपनी पढ़ाई के सम्बन्ध में

18, अशोक नगर,
मेंगलूर-6
अगस्त 13, 19...

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम्।

लगभग 15 दिन से आपका कोई पत्र नहीं मिला, मुझे चिन्ता है। विश्वास है घर पर सब ठीक है।

मेरी पढ़ाई बहुत अच्छी चल रही है। सभी अध्यापक पूरी निष्ठा से पढ़ाते हैं। कक्षा के मेरे सहपाठी मुझसे स्नेह रखते हैं और समय-समय पर मेरी सहायता करते हैं। मैं यहाँ खुश हूँ और मुझे किसी प्रकार का कष्ट नहीं है।

पूजनीय माताजी को मेरे प्रणाम् कहिएगा और प्रिय वसन्ती को स्नेह।

लौटती डाक से पत्र दीजिएगा।

आपका प्रिय पुत्र,
रमेश के.

6. छात्र का प्रधानाचार्य को आवेदन पत्र - छुट्टी के लिए।

6, मेन रोड,
कोलार,
अगस्त 18, 19....

श्री प्रधानाचार्य,
शासकीय कॉलेज,
कोलार

मान्यवर,

मेरी बहन का विवाह भद्रावती में 20 अगस्त को होना निश्चित हुआ है। अतः मैं एक सप्ताह (19 अगस्त से 25 अगस्त तक) कॉलेज आने में असमर्थ रहूँगा।

कृपया मुझे सात दिन की छुट्टी प्रदान करने का कष्ट करें।

सादर,

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
आर.कुमार
II पी.यू.सी.(बी)

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

7. पत्र सहेली को- दूरदर्शन के अच्छे-बुरे प्रभावों के सम्बन्ध में।

201,शिवानन्द नगर,
धारवाड़-I
सितम्बर 14,19.....

प्रिय वासवी,

तुम्हारे यहाँ से लौटने के बाद तुरन्त पत्र ने लिख सकी क्योंकि यहाँ आकर कुछ जरूरी काम निपटाने थे। तुम्हारे साथ दो दिन कैसे बीत गये पता ही न चला। तुम्हारे माता-पिता और तुमने जो स्नेह दिया, मैं उस सबसे बहुत प्रभावित हूँ।

दो दिन तुम्हारे पास रहकर मैंने एक बात महसूस की कि तुम अपनी पढ़ाई की उपेक्षा करके अधिक समय 'दूरदर्शन' कार्यक्रम देखने में व्यतीत करती हो। यह ठीक है कि 'दूरदर्शन' हमारा सामान्य ज्ञान बढ़ता है, हमें देश-विदेश के बारे में नई से नई जानकारी देता है और हमारा मनोरंजन भी करता है।

किन्तु इसका दूसरा पहलू यह भी है कि यह हमारे समय को नष्ट करता है। यदि एक बार आदत पड़ जाये तो यह पढ़ाई में मन नहीं लगने देता और हमारा कीमती समय नष्ट करा देता है। तरह-तरह के लुभावने विज्ञापन दिखाकर यह हमें कल्पना की दुनिया में ले जाता है और हमें इच्छा होने लगती है कि हम भी ऐसे ही कपड़े पहने, भव्य भवनों में रहें और ऐसे ही प्रसाधन प्रयोग करें किन्तु एक मध्य-वित्त परिवार में ये सब कहाँ तक संभव है? अतः हमारे मन में जीवन के प्रति एक आक्रोश पैदा होने लगता है और हम असहज हो जाते हैं। इसके अलावा,लगातर दूरदर्शन के सामने बैठने से हमारी आँखों पर भी प्रभाव पड़ता है।

मेरी तो तुमसे यही सलाह है कि अपना अधिक से अधिक समय पढ़ाई में लगाओ ताकि अपना भविष्य उज्जवल बना सको।

परिवार में अपने माता-पिता जी को मेरा प्रणाम् कहना।

आशा है सानन्द होगी।

पत्र का उत्तर शीघ्र देना।

तुम्हारी अभिन्न मित्र,
रमा आर.

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. शैक्षिक यात्रा पर जाने की अनुमति माँगते हुए अपने पिता जी को पत्र लिखिए।
2. सर्दी के कपड़े मँगाते हुए अपनी माता जी को पत्र लिखिए।
3. एन.सी.सी. कैम्प से लौटने के बाद अपने कैम्प जीवन के अनुभव बताते हुए अपने बड़े भाई को पत्र लिखिए।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

4. अपने कॉलेज की विद्यार्थी यूनियन के चुनावों का विवरण देते हुए अपनी बड़ी बहन को पत्र लिखिए।

5. धूम्रपान के दुष्परिणामों का वर्णन करते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए।

6. अपने मित्र को पत्र लिखिए और पुस्तकालय की उपयोगिता का वर्णन कीजिए।

7. अपनी सहेली को आधुनिक फैशन के सम्बन्ध में पत्र लिखिए।

8. अपने प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर अपनी फीस माफ करने का निवेदन कीजिए।

9. स्वास्थ्य विभाग नगर पालिका को पत्र लिखकर अपने क्षेत्र में हैजा फैल जाने की सूचना दीजिए।

10. सम्पादक—'प्रजावाणी' को सम्पादक के नाम पर लिखिए अपने इलाके में हो रही चोरियों के बारे में पुलिस की लापरवाही का उल्लेख कीजिए।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

6

सार लेखन

(Summary-Writing)

किसी गद्य या पद्य खण्ड में व्यक्त भावों और विचारों को संक्षेप में अभिव्यक्त करना सार-लेखन कहलाता है।

आज का पाठक कम से कम समय में अधिक से अधिक प्राप्ति की इच्छा रखता है। उसकी प्रवृत्ति विस्तार से बचने की रहती है। इस आवश्यकता की पूर्ति सार-लेखन से स्वत: पूर्ण हो जाती है। सार-लेखन में मूल लेखक के भावों और विचारों को संक्षेप में प्रभावकारी रीति से उस ढंग से रखा जाता है कि पाठक लेखक का मन्तव्य सरलतापूर्वक ग्रहण कर ले।

सार-लेखन का प्रश्न हल करते समय इन बिन्दुओं पर ध्यान दें :–

1. मूल अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़ें और उसके केन्द्रीय भाव (Central Point) तक पहुँचने का प्रयत्न करें। केन्द्रयी-भाव तक पहुँचने के लिए मूल अनुच्छेद को दो-तीन बार पढ़ना पड़ सकता है।
2. अवतरण या अनुच्छेद में दिये गये विचारों भावों और तथ्यों को क्रमश: कागज पर उतार लें।
3. इस बात का ध्यान रहे कि मूल आशय में परिवर्तन न हो। कोई विचार या भाव छूटना भी नहीं चाहिए।
4. सार लिखते समय मुहावरों, उक्तियों या उद्धरणों को यथासंभव छोड़ने का प्रयत्न करें। छोटे-छोटे वाक्य बनाये ताकि गलतियों की संभावना न रहे।
5. जहाँ तक हो सरल भाषा का प्रयोग करें और अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करें।
6. यदि 'शीर्षक' लिखने को कहा जाये तो मूल भाव को एक, दो या अधिक से अधिक तीन शब्दों में अभिव्यक्त कर शीर्षक का चयन करें। शीर्षक एक दम संक्षिप्त होना चाहिए।
7. सार का आकार मूल अवतरण के आकार से आधा या आधे से कम होना चाहिए।
8. जब सार तैयार हो जाये तब मूल को पुन: पढ़ें और देखें कि सार में कोई तथ्य या विचार छूट तो नहीं गया है।
9. यदि आप सार-लेखन का अभ्यास करेंगे तो यह क्रिया आपके लिए सरल हो जायेगी।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

'सार-लेखन' के कुछ उदारहण यहाँ दिये जा रहे हैं:

(I)

भारत के अधिकांश रहनेवालों की एक खास आदत है कि पेट का थोड़ा-सा इन्तजाम हो जाने पर वे फिर आमदनी बढ़ाने की कोशिश नहीं करते। उनका जीवन बहुत ही सरल और सादा होता है। वे अपने कष्टों को बहुत कुछ सह लेते हैं। इन सब बातों की वजह से उनके रहन-सहन का दर्जा भी बहुत नीचा होता है। वे आधा पेट खाकर दिन बिताते हैं। आप पूछ सकते हैं कि क्या भारत में भोजन की कमी है? यह ऐसा सवाल है जिसके ऊपर भिन्न-भिन्न लोगों के विचार एक से नहीं हैं। मालथस नामक एक अंग्रेज अर्थशास्त्री का कथन है कि जनसंख्या भोजन की चीजों से कहीं अधिक तेजी से बढ़ती है। उनके विचारों पर बहुत कुछ कहा जा चुका है तिस पर भी यह विचार अभी तक आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं। यह स्पष्ट है कि भारत में जनसंख्या की बहुत ज्यादा वृद्धि हुई है और जनसंख्या के एक भाग को एक वक्त भी पेट भर भोजन नहीं मिलता।

सार-संक्षेप

भारतीय व्यक्ति बहुत संतोषी होता है। यदि उनको थोड़ा-सा पेट भरने को मिल जाये तो आय बढ़ाने का प्रयत्न नहीं करता। भारत अन्न के मामले में आत्मनिर्भर है या नहीं, यह सोचने की बात है। कुछ लोगों का विचार है जिस अनुपात से देश की जनसंख्या बढ़ रही है, उस अनुपात में अन्न का उत्पादन नहीं बढ़ता। उसी कारण भारतीयों की स्थिति अच्छी नहीं है।

शीर्षक : जनसंख्या की समस्या

(II)

राजनीतिक और सामाजिक स्वतन्त्रता के समान जब तक आर्थिक समानता न हो तब तक समानता अधूरी है। आर्थिक समानता का यह अभिप्राय कदापि नहीं है कि सबके वेतन और सबकी मजदूरी एक समान हो। इसका सही अर्थ तो यह है कि सबको अपनी उन्नति करने का अवसर प्राप्त हो। यदि भूमि और मशीन पर समाज का स्वामित्व न होकर व्यक्ति विशेष का होगा तब एक कुपढ़ और निरक्षर व्यक्ति भी एक सेठ का लड़का होने के कारण बड़ी जायदाद का मालिक हो जायेगा और एक सम्पत्तिहीन व्यक्ति विद्वान होकर भी नौकरी की खोज में भटकता हुआ दिखाई देगा। अत: जमीन और मशीन तथा उत्पादन के अन्य साधन समाज के नियन्त्रण और स्वामित्व में रहने चाहिए। यह एक और कारण से भी आवश्य है यदि जमीन, मशीन और उत्पादन साधनों पर समाज का स्वामित्व न होगा तो बूढ़े धनी व्यक्ति अपनी सम्पत्ति के बल पर शासन की मशीनरी पर कब्जा कर लेंगे और लोकतन्त्र-शासन भी बूढ़े व्यक्तियों के एक विशेष वर्ग के हित का साधन हो जायेगा आर्थिक समानता के अभाव में लोकतन्त्र शासन अभी तक पूँजीवाद का पोषक और जनता के शोषण में सहायक हुआ है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सार-संक्षेप

समाज में समता के वातावरण के लिए सामाजिक तथा आर्थिक स्वतंत्रता बहुत आवश्यक है। एक के अभाव में दूसरी का कोई महत्व नहीं रह जाता। समता के लिए जरूरी है कि जाति भेद समाप्त किया जाये और जो भी उत्पादन साधन है उनपर सारे समाज का अधिकार हो। आर्थिक और सामाजिक समानता ही सच्चा समाजवाद और लोकतंत्र ला सकती है नहीं तो कुछ धनी लोग लोकतंत्र को पूँजीवाद के बढ़ावे के लिए प्रयुक्त कर सकते हैं।

शीर्षक : समानता और लोकतंत्र

निम्नलिखित अवतरण का सार-संक्षेप लिखकर उपयुक्त शीर्षक दीजिए:

अभ्यास-I

नेतृत्व अब भी उन्हीं के हाथ में है जो केन्द्रीयकरण को ही सही मानते हैं और आज भी नहीं पहचान पा रहे कि देश की एकता अँग्रेजी से नहीं हो सकती। इनकी इससे भी अधिक बड़ी भूल यह है कि वे राष्ट्रीय एकता की एक मुर्दा परिभाषा को पकड़े बैठे है। आज बिना तानाशाही किये किसी एक भाषा से देश की एकता संभव नहीं हो गई है। देश की सभी भाषाओं को अँग्रेजी ने इतना कमजोर कर दिया है कि जब तक वे एक-दूसरे से आदान-प्रदान करती हुई अपने प्रदेशों के लोगों के राजनैतिक अधिकारों को वापस न दिला दें तब तक देश में राष्ट्रीय एकता जैसी कोई चीज संभव नहीं होगी। आज सभी भाषाएँ अपने-अपने प्रदशों में अँग्रेजी के नाम पर शासन करने वाले हिन्दीतर नेताओं के अरचनात्मक, दिशाहीन शोषणमूलक शासन के नीचे दबी हुई हैं। आज हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में हिन्दीभाषी लोग इस यथार्थ को समझें, तो हिन्दी दिवस भविष्योन्मुख हो सकेगा, अन्यथा वह प्रवंचना से भरे हुए एक अतीत की पूजा करने का अवसर बनकर ही रह जाएगा।

अभ्यास-II

मानव ने समुद्र की अतल गहराइयों में प्रवेश करके और दुर्गम वनकांतार के सघन अन्धकार में घुसकर उने रहस्यों का पता लगा लिया, किन्तु एक लम्बे अर्से तक हिमालय के सर्वोच्च शिखर पर वह अनेकानेक प्रयत्नों के बाद भी नहीं पहुँच सका था। उसके मन में दुर्दम अभिलाषा थी और वह दस बार प्रयत्न कर चुका था जिस दिन मानव ने उस शिखर पर पहुँचकर अपनी विजय-पताका फहराई वह दिन मानव के साहसपूर्ण प्रयत्नों की विजय-गाथा का स्वर्णिम दिन था। एवरेस्ट विजय ने मानव को उन रहस्यों को जानने का उत्साह प्रदान किया है जो अद्यावधि अज्ञात बने हुए हैं। हिमालय के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने के बाद नागाधिराज का कोई भी रहस्य अब मानव के लिए अज्ञेय और कोई भी मार्ग दुर्लध्य या दुर्गम नहीं रह सकेगा। मानव अपनी विजय-यात्रा में निरन्तर बढ़ता जा रहा है। चन्द्र लोक और मंगल लोक के बाद वह सभी नक्षत्रों का रहस्य जानकर ही विश्राम लेगा। मानव की यह साहसिक यात्रा ही उसे संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी सिद्ध करती है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अभ्यास-III

विद्यार्थियों में अनेक बुराइयाँ कुसंगति के प्रभाव से ही उत्पन्न होती हैं। जो विद्यार्थी पहले पढ़ाई में खूब रुचि लेता था, किन्तु अब सिनेमा देखने में मस्त रहता है, निश्चित ही यह कुसंगति का प्रभाव है। शुरू में उसे कोई विद्यार्थी सिनेमा दिखाना प्रारंभ करता है, बाद में उसे सिनेमा देखने की आदत पड़ जाती है। सही हालत धूम्रपान करने वालों की होती है। जब उन्हें धूम्रपान की आदत पड़ जाती है, तब वह छूटने का नाम तक नहीं लेती। प्रारंभ में कुछ लोग शौकिया तौर पर बीड़ी-सिगरेट पीना प्रारंभ कर देते हैं। अन्त में उसके आदी बन जाते हैं और लाख यत्न करने पर भी उससे पीछा नहीं छुड़ा पाते। इसीलिए तो पं0 रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है कि कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। वह न केवल मान-मर्यादा का विनाश करता है, बल्कि सात्विक चित्तवृत्ति को भी नष्ट कर देता है। जो कभी कुसंग के चक्कर में फँसा है, नष्ट हुए बिना नहीं रहा। कुमार्गगामी दूसरे को भी अपने जैसा बना लेता है।

अभ्यास-IV

धन का व्यय विलास में करने से केवल क्षणिक आनन्द की प्राप्ति होती है- यह धन का दुरुपयोग है, किन्तु धन का सदुपयोग सुख और शान्ति देता है। धन के द्वारा जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य हो सकता है वह है परोपकार। भूखों को अन्न, नंगों को वस्त्र, रोगियों का दवा, अनाथों को घर-द्वार, लूले-लँगड़ों और अपाहिजों के लिए आराम के साधन, विद्यार्थियों के लिए पाठशालाएँ इत्यादि वस्तुएँ धन के द्वारा जुटाई जा सकती हैं। धन रहने के कारण एक अमीर आदमी को लोगों की भलाई करने के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं, जोकि एक गरीब आदमी को उपलब्ध नहीं हैं, चाहे वह इसके लिए कितना भी इच्छुक क्यों न हो, पर संसार में ऐसे अमीर आदमी बहुत ही कम हैं जो अपना भोग-विलास त्याग कर अपने धन को परोपकार में लगाते हैं।

अभ्यास-V

यह अज्ञान ही है जो हमें यह बताता है कि हमारा 'अहं' ही वास्तविक और पूर्ण है। इस भ्रमपूर्ण ज्ञान से ही हम इस 'अहंभाव' की पूर्ति को जीवन का चरम ध्येय मान बैठते हैं। तभी हमें उस मनुष्य की तरह, जो रास्ते की मिट्टी को पकड़कर मंजिल तक पहुँचने की इच्छा करता है, निराशा होती है। जब मनुष्य बड़े यत्न से अपने भोग के सामान जुटाता है तो वह ऐसी आग सुलगा लेता है जो स्वयं को जला कर राख बनाती है। उसके पास इस आग पर सेंकने को रोटी का आटा नहीं होता। हमारा अहंकार हमारे लिए अभिशाप है। इसलिए हमारे अहं का यह ध्येय होना चाहिए कि हम विश्वात्मा से मिलने की साधना करें। हमें प्रेम से सिर नवाकर वहाँ खड़ा होना चाहिए जहाँ छोटे-बड़े, सब मिलते हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अभ्यास-VI

मानव अधिकारों की विश्वव्यापी घोषणा के अनुच्छेद 23 के अनुसार "प्रत्येक व्यक्ति को कार्य करने तथा इच्छित, उचित और अनुकूल कार्य-परिस्थिति व बेकारी के प्रति सुरक्षा का अधिकार है। प्रत्येक व्यक्ति को समान वेतन तथा समान कार्य पाने का अधिकार है।" प्रश्न यह है कि इस अनुच्छेद में मनपसन्द रोजगार पाने का प्रावधान होने के साथ ही क्या दुनिया में बेरोजगारी की समस्या को सुलझाने के संयुक्त प्रयास कभी किए गए? या फिर हर बार बेरोजगारी का एक सतही अध्ययन करके उसके खतरे की घण्टी बजाकर त्रस्त देशों को आगाह कर विश्व-स्तरीय संगठनों ने अपना कर्त्तव्य-पालन कर लिया। भला बेरोजगारी के घहराते संकट से खबरदार करते रहने से जिन्हें रोजगार पाने का अधिकार है, क्या वे रोजगार पा जाएँगे?

अभ्यास-VII

यदि तुम्हारा व्यवसाय या कार्य निम्न श्रेणी का है तो दूसरे व्यक्तियों की अपेक्षा उसमें अधिक मनुष्यत्व का उपयोग करके उसे ऊँचा उठा लो। उसमें दिमाग, हृदय, शक्ति और मितव्ययिता का समावेश करो। नवीनता से उसका विस्तार करो, परिश्रम और उद्योग से उसे बड़ा बना दो, उसका अध्ययन करो, उसकी बारीकियों को जान लो। अपनी योग्यता को उस पर केन्द्रित कर दो। याद रखो, महान् विजयी वही होते हैं जो एक उद्देश्य लेकर काम करते हैं और जिनकी आत्मा का राज्य अविभाज्य है। दूसरे का स्थान छीनने की अभिलाषा करने की अपेक्षा अपने स्थान को ही सुशोभित करना अच्छा है।

अभ्यास -VIII

भारतीय संस्कृति की एक बड़ी विशेषता यह है कि वह सर्वांगीण है। ऐहिक और पारलौकिक उन्नति व शस्त्र और शास्त्र का समन्वय भारतीय संस्कृति में था। ज्योतिष, वास्तुकला, सुन्दर-से-सुन्दर वस्त्र, उत्कृष्ट कलापूर्ण नगर-निर्माण आदि में जहाँ भारत ने चरम उन्नति की थी, वहाँ यज्ञ, धार्मिक अनुष्ठान, उपनिषदों का दार्शनिक ज्ञान, भागवत धर्म की भक्ति तथा पुण्य सन्तों की परम्परा आदि की दृष्टि से भारत बहुत आगे था। शास्त्रकारों के मत से मानव को चार पुरुषार्थ करने चाहिएँ- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। धर्म और मोक्ष ही नहीं, अर्थ और काम भी हमारे यहाँ आवश्यक हैं और इनकी पूर्ति के लिए अनेक ऋषियों और विद्वानों ने बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

II P.U.C.

Grammar & Composition

MODEL QUESTION PAPER

व्याकरण

1. (1) वाक्य शुद्ध कीजिए:

(क) श्याम यह काम किया।

(ख) मेरे बेटा विदेश में रहता है।

(ग) मैं मित्र से मिलने दफ्तर जाना है।

(छ) आप यहाँ मत बोलो।

(2) सूचना के अनुसार बदलकर लिखिए:

(क) मैं हिन्दी में अधिक अंक लूँगा। (वर्तमान काल)

(ख) वह मेहनत करता है। वह उत्तीर्ण होता है।
(दोनों वाक्य जोड़कर लिखिए)

(ग) वह नाच नहीं सकती।
('वह' के स्थान पर 'उसने' का प्रयोग कीजिए)

(घ) मैं स्टेशन पहुँचा । गाड़ी छूट गयी।
('जब' 'तब' का प्रयोग कीजिए)

(ड) नेहरू ने कहा - 'मेरा भारत महान है।
('कि' का प्रयोग कीजिए)

(3) कोष्ठक में दिये गये उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए : (झरना, खनकना, लहरना, उड़ना, खेलना)

(क) बच्चे मैदान में ......हैं।

(ख) सुहागिन की चूड़ियाँ......हैं।

(ग) हवा में ध्वज .....हैं।

(घ) पक्षी आकाश में ....हैं।

(ड) पेड़ से पत्ते.......हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(4) **उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए :**

उदाहरण—लड़की गाती हैं।

लड़कियां गाती हैं।

(क) पुस्तक सुन्दर है।

(ख) मैं दौड़ता हूँ।

(ग) वह क्रिकेट खेलता है।

(घ) लड़का स्कूल जाता है।

(ङ) गाय दूध देती है।

(5) **निम्नलिखित वाक्य खण्डों के सही जोड़ मिलाइए:**

(क) जयशंकर प्रसाद	भीड़ रहती है।
(ख) 'लछमा' रेखाचित्र	वैसा भरोगे।
(ग) दीपावली भारत का	कहानीकार भी थे।
(घ) जैसा करोगे	बड़ा पर्व है।
(ङ) मेले में बड़ी	महादेवी वर्मा ने लिखा।

रचना

2. (1) किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

(i) समाचार-पत्र

(ii) समय का सदुपयोग

(iii) दूरदर्शन

(iv) विज्ञान की देन

(v) विद्यार्थी जीवन

(2) **हिन्दी में अनुवाद कीजिए :**

(क) You may finish this work in whatever way you want to.

(ख) They stoped the play, as soon as it started to rain.

(ग) Drink this medicine as you would drink water.

(घ) One who has lost courage has never succeeded.

(ङ) My father lets me play in the evening.

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अथवा

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

आजकल के युवक दंगा-फसाद के लिए बदनाम होते जा रहे हैं, लेकिन के यह नहीं सोचता कि हमारे युवक क्यों भटक रहे हैं? उनके सामने कोई आदर्श नहीं उन्हें कोई सही रास्ता बताने वाला नहीं है। यदि कोई अच्छा और सच्चा मार्गदर्शक मि जाए तो उस युवा शक्ति को निर्माण कार्य में लगाया जा सकता है। भारत की आजादी उसी युवा-शक्ति के जागरण से प्राप्त हुई है। जो उन दिनों संभव था वह आज क्यों नही

प्रश्न :

(क) आज का युवा-वर्ग बदनाम क्यों है?

(ख) हमारे युवक क्यों भटके जा रहे हैं?

(ग) भटके हुए युवकों को सही मार्ग पर कैसे लाया जाए?

(घ) युवा-शक्ति का क्या उपयोग किया जा सकता है?

(ङ) युवा-शक्ति द्वारा कौन -सा महान कार्य सम्पन्न हुआ है?

(3) निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखकर उचित शीर्षक दीजिए :

आजकल प्रदूषण के कारण हमारे खाने-पीने की वस्तुएँ ही नहीं वरन् हमा श्वासोच्छवास की वायु भी प्रदूषित हो गयी है। चाहे हम बीमारियों से कितने ही भी सावधा रहें किन्तु हम पर उनका आक्रमण बराबर होता ही रहता है। जब कभी हम किसी बीमा का शिकार होते हैं तो तुरन्त किसी चिकित्सक के पास दौड़ते हैं और आशा करते हैं कि तुरत-फुरत स्वस्थ हो जायें। आज बाजार ऐसी औषधियों से पटा पड़ा है। जो तुरन्त ही हम रोग को दबा देती हैं किन्तु उनसे रोग समूल नष्ट नहीं होता। उसके अतिरिक्त उन औषधियो का दुष्परिणाम यह होता है कि रोग किसी अन्य रूप में प्रकट हो जाता है।

अथवा

अपनी यात्रा का वर्णन करते हुए अपनी बहन को पत्र लिखिए।

□ — □ — □

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 5666

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

विद्या-मंदिर
५८८, एवेन्यू रोड, बेंगलोर - २

S. P. HIREMATH.
Book Depot & Paper Merchants.
New Vithal Mandir Road,
BIJAPUR - 586101.

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative